Font Help >> http://gurutvajyotish.blogspot.com

गुरुत्व कार्यालय द्वारा प्रस्तुत मासिक ई-पत्रिका
दिसम्बर- 2012

गुरुत्व ज्योतिष

यंत्र शक्ति विशेष



NON PROFIT PUBLICATION

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका

दिसम्बर 2012

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY,
BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018,
(ORISSA) INDIA

फोन

91+9338213418,
91+9238328785,

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
http://gk.yolasite.com/
www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

पत्रिका प्रस्तुति

चिंतन जोशी,

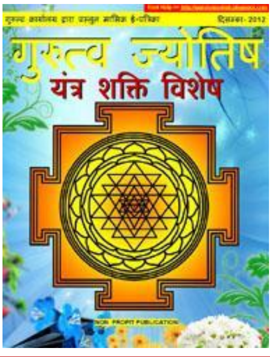
स्वस्तिक.ऎन.जोशी

फोटो ग्राफिक्स

चिंतन जोशी, स्वस्तिक आर्ट

हमारे मुख्य सहयोगी

स्वस्तिक.ऎन.जोशी (स्वस्तिक सोफ्टेक इन्डिया लि)



जिस प्रकार शरीर आत्मा के लिए और तेल दीपक के लिए हैं, उसी प्रकार यन्त्र इष्टदेवी-देवता की प्रसन्नता हेतु होते हैं। सरल भाषा में समझे तो यंत्र शब्द का अर्थ किसी औजार या साधन से किया जाता हैं। यंत्र प्रयोग का मुख्य उद्देश्य होता हैं मनुष्य को क्रियाशील, उद्यमी या प्रयत्नशील करने की प्रेरणा देते ...4

श्रीयंत्र को सरल शब्दों में लक्ष्मी यंत्र कहा जाता हैं, क्योकि श्रीयंत्र को धन के आगमन हेतु सर्वश्रेष्ठ यंत्र माना गया हैं। विद्वानों का कथन हैं की श्रीयंत्र अलौकिक शक्तियों व चमत्कारी शक्तियों से परिपूर्ण गुप्त शक्तियों का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है। ...6

यंत्र विशेष में पढ़े

सर्व कार्य सिद्धि कवच ... 45



गणेश लक्ष्मी यंत्र.



नवरत्न जड़ित श्रीयंत्र..63

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र ...



राशि रत्न...67



मंत्र सिद्ध रूद्राक्ष ...68

अमोघ महामृत्युंजय कवच ... 73

◈◈◈ विशेष में ◈◈◈

◈◈◈ स्थायी और अन्य लेख ◈◈◈

◈◈◈ दीपावली विशेष ◈◈◈

◈◈◈ हमारे उत्पाद ◈◈◈

संपादकीय

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

यंत्र शब्द "यम" धातु का घोतक हैं। (यम धातु से बना हैं)

यन्त्रमित्याहुरेतस्मिन् देवःप्रीणाति पूजितः।
शरीरमिव जीवस्य दीपस्य स्नेहवत् प्रिये॥

अर्थात्: जिस प्रकार शरीर आत्मा के लिए और तेल दीपक के लिए हैं, उसी प्रकार यन्त्र इष्टदेवी-देवता की प्रसन्नता हेतु होते हैं।

सरल भाषा में समझे तो यंत्र शब्द का अर्थ किसी औजार या साधन से किया जाता हैं।

यंत्र प्रयोग का मुख्य उद्देश्य होता हैं मनुष्य को क्रियाशील, उद्यमी या प्रयत्नशील करने की प्रेरणा देते हैं और उसके दुःख, दुर्भाग्य, असफलता को दूर करने हेतु सहायक होते हैं। यंत्र प्रत्यक्ष रूप से मनुष्य की कार्यक्षमता की नकारात्मक उर्जा को दूर कर सकारात्मक उर्जा में परिवर्तित कर देते हैं।

आज के आधुनिक युग में विद्वानों ने अपने शोध एवं अनुसंधान से यह यह पाया है कि आध्यात्मिक स्थल, पूजा-पाठ इत्यादि स्थल, मानव शरीर में स्थित कुंडलिनी के चक्र, पवित्र संकेत चिन्ह, कुछ विशिष्ट आकृतियां आदि में एक विशेष प्रकार की सूक्ष्म ऊर्जा निरंतर प्रवाहित होती रहती हैं, जिस का क्षेत्र विशाल और सकारात्मक होता है। यह उर्जा उसी प्रकार से कार्य करती हैं जिस प्रकार किसी वस्तु पर विद्युत चुम्बकीय क्षेत्र का प्रभाव होता हैं।

आजके आधुनिक युग में वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त मनुष्य, अंतर मन से दरिद्र या अनुचित मार्गदर्शन से विभिन्न प्रकार के यंत्र-मंत्र-तंत्र टोने-टोटके या उपायो को करके हार चुका व्यक्ति यह सोचता हैं, की.... भाग्य में जो लिखा हैं वहीं होगा!...., नसीब में जो होगा वहीं मिलेगा हैं!...., भगवान कि इच्छा के आगे किस कि चलती हैं!...., भगवान ने दुःख लिखा हैं तो क्या करे!...., हमारे तो अमुख ग्रह हि खरब चल रहे हैं...., हमारा तो नसीब ही खराब हैं............. इत्यादी से हम सब अच्छी तरह वाकीफ़ हैं।

कुछ लोग धर्मशास्त्र, भगवान इत्यादि पर विश्वास नहीं होता, या कुछ लोग पहले विश्वास करते थे लेकिन अनुचित मार्गदर्शन या प्रयोग में रहजाने वाली किसी तृटि के कारण उनकी इच्छा पूर्ति का अपूर्ण रह जाना इन विषयो पर अविश्वास को जन्म देता हैं।

एसी स्थिति में अनेक लोगों का धर्मशास्त्र, भगवान इत्यादि पर अविश्वास हो जाना स्वाभाविक हैं? ईश्वर नें सभी मनुष्यों को एक समान बनाया हैं, इस लिए इस संसार में व्याप्त सभी प्रकार के सुख भोगने का सभी मनुष्यों को बराबर का अधिकार दिया हैं। क्योकि सभी जीव ईश्वर के अंश हैं, इस लिए ईश्वर सब को एक ही भाव से देखता हैं। व्यक्ति आज दरिद्र हैं, निर्धन हैं तो वह उसके निजी कर्मो का फल मात्र हैं।

उसकी दरिद्रता किसी ग्रह के कारण नहीं ग्रह तो केवल व्यक्ति के कर्मो का फल प्रदान करने हेतु विधाताके सहयोगी हैं। दरिद्र व्यक्ति अपनी गलतीयां अपने नसीब और भगवान पर लाद देते हैं। व्यक्ति को आवश्यक्ता हैं, उचित मार्गदर्शन कि यदि व्यक्ति को उचित मार्गदर्शन प्राप्त हो जाये तो इस संसार का दरिद्र से दरिद्र कंगाल से कंगाल व्यक्ति भी धनवान बन सकता हैं। व्यक्ति उचित मार्गदर्शन, मंत्र-यंत्र-तंत्र, एवं दुर्लभ वस्तुओं के विधि-वत प्रयोगों के माध्यम से

अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ बन सकता हैं, इसमें जरा भी संदेह नहीं हैं।

धन प्राप्ति हेतु किये गये मंत्र-यंत्र-तंत्र की साधना एवं विभिन्न सामग्रीयों के प्रयोग का फलदायी नहीं होना, यह किसी साधना या मंत्र-यंत्र-तंत्र की उपासना का कोई दोष नहीं बलकि व्यक्ति के श्राद्धाहीन अंतर मन का ही दोष होता हैं।

क्योकि हमारे विद्वान ऋषी-मुनी ने हजारो वर्ष पूर्व अपने तपोबल से यह ज्ञात कर लिया था की मनुष्य कि शक्तियां अपार और अनंत हैं। जीसे आज का आधुनिक विज्ञान भी मान चुका हैं की एक व्यक्ति अपनी वास्तवीक शक्ति का मात्र ३(तीन) प्रतिशत हिस्सा ही इस्तेमाल करता हैं। ठिक इसी प्रकार आपके भीतर भी परमात्मा की अपार शक्तियां मौजुद हैं बस उन शक्तिओं को उजागर करने की जरुरत मात्र हैं, आप अपने अंदर उठनेवाली इन तरंगो के कारण आपके आस-पास का वातावतण सकारात्मक उर्जा से भर जायेगा एवं यह उर्जा आपके अंतर मन कि गहराई तक प्रवेश कर गई तो इन शक्तियो से आपको आत्म बल की प्राप्ति होगी जिससे आपके धनवान बनने और इस दिशा में अग्रस्त होने का मार्ग स्वतः हि खूलने लगेगा। फिर आपकी मंझिल आपसे दूर नहीं रह जायेगी। व्यक्ति यदि एक बार चाहले तो वह अपनी स्थिती में परिवर्तन लासकता हैं बस जरुरत हैं एक द्रढ संकल्प कि।

इस लिए तो शास्तों में कहां गया हैं की

उद्यमे नास्ति दारिद्रयम् ।

अर्थात:उद्यम करने से दरिद्रता की नहीं रह जाती ।

इसी लिए सैकड़ो विद्वान ऋषी-मुनियों ने मनुष्य को उद्यमी बनाने के लिए क्रियाशील बनाने के लिए अपने योग बल एवं परिश्रम से यंत्र के गूढ रहस्य को जाल लिया था और उन्हों ने हमारे मार्गदर्शन हेतु यंत्र के प्रभावों का सूक्ष्म अध्ययन कर उसके प्रभावों से हमें अवगत कराने हेतु विभिन्न ग्रंथो एवं शास्त्रों की रचना की हैं।

यंत्र का संसार अति विशाल हैं, क्योकी समग्र विश्व में सैकड़ों धर्म, संप्रदाय, सभ्यता एवं संस्कृतिया हैं हर एक धर्म या संप्रदाय में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रुप से यंत्रों का उपयोग प्राचिन काल से होता आया हैं। अभी तक हजारों लाखों तरह के यंत्र अलग-अलग भाषा एवं संस्कृतियों में निर्मित किये गये हैं, जिसके प्रमाण विभिन्न ग्रंथ-शास्त्र आदि में उपलब्ध हैं। लेकिन समग्र सभ्यता एवं संस्कृति में यंत्र के निर्माण का मुख्य उद्देश्य मनुष्य मात्र का कल्याण ही है।

इस अंक में प्रकाशित विभिन्न उपाय, यंत्र-मंत्र-तंत्र, साधना व पूजा पद्धति के विषय में साधक एवं विद्वान पाठको से अनुरोध हैं, यदि दर्शाये गए यंत्र, मंत्र, स्तोत्र इत्यादी के संकलन, प्रमाण पढ़ने, संपादन में, डिजाईन में, टाईपींग में, प्रिंटिंग में, प्रकाशन में कोई त्रुटि रह गई हो, तो उसे स्वयं सुधार लें या किसी योग्य गुरु या विद्वान से सलाह विमर्श कर ले । क्योकि विद्वान गुरुजनो एवं साधको के निजी अनुभव विभिन्न अनुष्ठा में भेद होने पर यंत्र की पूजन विधि एवं जप विधि में, प्रभावों के अध्ययन में भिन्नता संभव हैं।

आपका जीवन सुखमय, मंगलमय हो मां लक्ष्मी की कृपा आपके परिवार पर बनी रहे। मां महालक्ष्मी से यही प्राथना हैं...

चिंतन जोशी

***** यंत्र विशेषांक से संबंधित विशेष सूचना *****

- पत्रिका में प्रकाशित यंत्र सम्बन्धित सभी जानकारीयां गुरुत्व कार्यालय के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- पौराणिक ग्रंथो पर अविश्वास रखने वाले व्यक्ति इस अंक में उपलब्ध सभी विषय को मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- धार्मिक विषय आस्था एवं विश्वास पर आधारित होने के कारण इस अंकमें वर्णित सभी जानकारीया भारतिय ग्रंथो से प्रेरित होकर लिखी गई हैं।
- धर्म से संबंधित विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- इस अंक में वर्णित संबंधित सभी लेख में वर्णित **मंत्र, यंत्र व प्रयोग** कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं और ना हीं प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- धर्म से संबंधित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष का किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय उनका स्वयं का होगा।
- शास्त्रोक्त विषयों से संबंधित जानकारी पर पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- धर्म से संबंधित लेख प्रामाणिक ग्रंथो, हमारे वर्षो के अनुभव एव अनुशंधान के आधार पर दिये गये हैं।
- हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा धर्म से संबंधित विषयों पर विश्वास किए जाने पर उसके लाभ या नुक्शान की जिन्मेदारी नहिं लेते हैं। यह जिन्मेदारी धार्मिक विषयो पर विश्वास करने वाले या उसका प्रयोग करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी।
- क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु यहां वर्णित जानकारी के आधार पर प्रयोग कर्ता हैं अथवा धार्मिक विषयो के उपयोग करने मे त्रुटि रखता हैं या उससे त्रुटि होती हैं तो इस कारण से प्रतिकूल अथवा विपरित परिणाम मिलने भी संभव हैं।
- धार्मिक विषयो से संबंधित जानकारी को मानकर उससे प्राप्त होने वाले लाभ, हानी कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये धार्मिक विषयो पर आधारित लेखों में वर्णित जानकारी को हमने कई बार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण ने भी अपने नीजी जीवन में अनुभव किया हैं। जिस्से हम कई बार धार्मिक इनसे विशेष लाभ की प्राप्ति हुई हैं। अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।

यन्त्रों के प्रमुख प्रकार

✍ स्वस्तिक.ऐन.जोशी

यंत्र कई रुपों में निर्मित किय जाते हैं। प्राचीन ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के यन्त्रों का उल्लेख मिलते हैं। यहां हम पाठकों के मार्गदर्शन हेतु यन्त्रों की प्रमुख श्रेणीयों का वर्णन कर रहे हैं।

भूपृष्ठ यन्त्र:

समतल आकार वाले यन्त्र अर्थात वह यन्त्र जिनका आधार समलत या धरातल पर हो उसे भूपृष्ठ यन्त्र कहां जाता हैं। यन्त्र क्र इसी समतल आधार पर यन्त्र की रेखाये, वर्ग, बिन्दु, त्रिभुज, चतुर्भुज, कमल दल, अंक, बीज मंत्र आदि को उत्कीर्ण किया जाता हैं। कहने का मतलब हैं की समतल आधार वाले यन्त्र को भूपृष्ठ यन्त्र कहां जाता हैं।

मेरुपृष्ठ यन्त्र:

मेरुपृष्ठ आगार वाले यन्त्र की आकृति मेरु की तरह उपर की ओर क्रमशः उठी हुई होती हैं जो देखने में पर्वताकार दिखती हैं। यंत्र का अंतिम भाग अर्थात शिखर ऊपर से नुकीला होता हैं, व नीचे का हिस्सा चौड़ा अर्थात फैला हुवा होता हैं, इस प्रकार के यंत्रों में नीचे से ऊपर का हिस्सा क्रमशः छोटा होता जाता हैं और आखिर में शिखर वाला हिस्सा नुकीला होता हैं। इस तरह के यन्त्रों में रेखाएं उभरी हुई या उत्कीर्ण या खुदी हुई होती हैं।

पाताल यन्त्र:

पाताल यन्त्र को मेरुपृष्ठ यन्त्र से विपरीत निर्मित किया जाता हैं जहां मेरुपृष्ठ यन्त्र में यन्त्र का शिखर होता हैं वहीं पाताल यन्त्र में यन्त्र का मध्य हिस्सा कटोरी के सामान अंदर की और से क्रमशः गहरा होता जाता हैं हैं।

मेरुप्रस्तार यन्त्र:

मेरुप्रस्तार यन्त्र, मेरुपृष्ठ यन्त्र के समान होता हैं, लेकिन मेरुपृष्ठ यन्त्र में रेखांकन की क्रिया को उभारकर या उत्कीर्ण करके पूर्ण की जाती हैं, वहीं मेरुप्रस्तार यन्त्र में रेखांकन यन्त्राकार होता हैं। इस तरह के यन्त्र को देखने पर लगता हैं की संपूर्ण यन्त्र को टुकड़ों में काटकर एक-दूसरे पर आश्रित किया गया है।

कूर्मपृष्ठ यन्त्र:

कूर्मपृष्ठ यन्त्र में मेरुपृष्ठ यन्त्र के समान शिखर नहीं होता। यह नीचे से चौकोर और ऊपर से गोलाई लिये होता हैं। लेकिन इसमें मेरुपृष्ठ यन्त्र के समान शिखर नहीं होता। देखने में यह कछुएं की ऊची पीठ के समान नज़र आता हैं। इस प्रकार के यन्त्र को कूर्मपृष्ठ यन्त्र कहते हैं।

यन्त्रों का वर्गीकरण

1. रेखात्मक यंत्र, 2. आकृतिमूलक यन्त्र

1.रेखात्मक यंत्र

रेखात्मक यंत्र में केवल रेखाओं का प्रयोग किया जाता हैं, जो मुख्यतः त्रिकोण, चतुर्भुज, वक्र, कमलाकार, आयुध, वलय आदि को यथार्थपूर्ण दर्शाया जाता हैं।

2. आकृतिमूलक यन्त्र

आकृतिमूलक यन्त्र में रेखाओं को ज्यामितिक आकार में प्रयोग नहीं करके स्पष्ट रुप से चित्रांकन किया जाता हैं। यन्त्र के निर्माण में कार्य उद्देश्य के अनुशार विभिन्न प्रकार के देव-देवी, मानव, पशु-पक्षि, वृक्ष आदि के स्वरुप का चित्रांकन किया जाता हैं।

रेखात्मक यंत्र के निम्न चार वर्ग होते हैं।

1. बीजमंत्रयुक्त यंत्र ।
2. मंत्रवर्णयुक्त यंत्र ।
3. अंकगर्भित यंत्र ।
4. मिश्र यंत्र ।

बीजमंत्रयुक्त यंत्र:

बीजमंत्रयुक्त यंत्र को किसी देवी-देवता के संक्षिप्त रुप के मन्त्र का प्रयोग किया जाता हैं। अर्थात देवी-देवताओं के शक्तिशाली बीज मंत्रों का प्रयोग किया जाता हैं। जो संबंधित देवी-देवताओं का सक्षिप्त रुप होता हैं अर्थात जिसमें उस देवी-देवता की गुप्त शक्तियां निहित होती हैं। जिससे उस बीज मन्त्र के स्मरण या उच्चारण से ही साधक की समग्र कामनाएं पूर्ण होने लगती हैं। बीजमंत्रयुक्त यंत्र को सर्वाधिक शक्तिशाली यन्त्र माना जाता हैं।

मंत्रवर्णयुक्त यंत्र:

मंत्रवर्णयुक्त यंत्र में विशेष्ट वर्णों को क्रम में सजाकर मन्त्र को दर्शाया जाता हैं। मंत्रवर्णयुक्त यंत्र में प्रयुक्त वर्णों द्वार ही मन्त्रों का निर्माण किया गया होता हैं इस लिए मंत्रवर्णयुक्त यंत्र में मन्त्र शक्ति विशेष रुप से समाहित होती हैं।

अंकगर्भित यंत्र:

अंकगर्भित यंत्र में अंकात्मक देवताओं का निवास होता हैं। हिन्दू धर्म में एसा माना जाता हैं की प्रत्येक अंक किसी-न-किसी देवता का प्रतिक होता हैं। इस लिए अंकों को देवता के प्रतिनिधि के रुप में विभिन्न उद्देश्य से यन्त्रों के निर्माण के लिए अंकों का प्रयोग किया जाता हैं। इस प्रकार के यन्त्रों को अंकगर्भित यंत्र कहते हैं।

मिश्र यंत्र:

मिश्र यंत्र में उपर दर्शाये गये तीनों श्रेणीयों का प्रयोग एक साथ (अर्थात बीजमंत्रयुक्त यंत्र, मंत्रवर्णयुक्त यंत्र, अंकगर्भित यंत्र) हुवा हो या एक के साथ दूसरी श्रेणी का प्रयोग होने पर उसे मिश्र यंत्र कहते हैं।

शास्त्रों में यंत्र के मुख्य सात प्रकार बताये गय हैं।

शास्त्रों में यन्त्रों का वर्गीकरण उसकी उपयोगिता के आधार पर किया गया हैं। जिसके अनुशार उसके क्रम इस प्रकार हैं..

1. शरीर यन्त्र
2. धारण यन्त्र
3. आसन यन्त्र
4. मण्डल यन्त्र
5. पूजा यन्त्र
6. छत्र यन्त्र
7. दर्शन यन्त्र

यन्त्रों में पंच तत्वों का महत्त्व

✍ स्वस्तिक.ऎन.जोशी, श्रेया.ऐस.जोशी

जिस प्रकार हमारा शरीर पाँच तत्वों से बना हैं। उसी प्रकार कुछ यन्त्रों में भी पाँच तत्व भी निहित होते हैं। यंत्र में निहित पाँच तत्व मानव शरीर के तत्वों के समान ही हैं।

1. पृथ्वी तत्त्व,
2. जल तत्त्व,
3. अग्नि तत्त्व,
4. वायु तत्त्व और
5. आकाश तत्त्व।

विद्वानों ने अपने अनुभवों से ज्ञात किया हैं की यंत्रों के पाँच तत्वों की उपस्थिती ही मुख्य रुप से साधक को वांच्छित सिद्धि प्राप्ति हेतु सहायक होती हैं। इस लिए यन्त्रों के पाँच तत्व की महत्वता को जानना अत्यंत आवश्यक हैं। क्योकि यहीं पाँच तत्व ब्रह्माण्ड की रहस्यमय शक्तियों एवं साधक के भितर छिपी हुई शक्तियों की जाग्रत और नियन्त्रित करने हेतु सहायक हैं।

रेखायुक्त यन्त्र और अंकात्मक यन्त्रों में पृथ्वी तत्त्व, जल तत्त्व, अग्नि तत्त्व, वायु तत्त्व और आकाश तत्त्व का समावेश किया जाता हैं। जिस प्रकार पृथ्वी तत्त्व, जल तत्त्व, अग्नि तत्त्व की रेखायें तो सरलता से ज्ञात की जा सकती हैं, पृथ्वी तत्त्व का आकार चौकोर अर्थात चतुष्कोण होता हैं, जल तत्त्व का आकार मण्डलाकार अर्थात गोल वृत्ताकार होता हैं, अग्नि तत्त्व का आकार त्रिकोण स्वरुप होता हैं। यदि त्रिकोण का आकार यन्त्र में उर्ध्वमुखी और अधोमुखी दर्शाया गया हो तो वह शिव और शक्ति का प्रतिक माना जाता हैं।

शास्त्रों में पंचदशी यन्त्र में तत्वों का वर्णन करते हुवे उल्लेख मिलता हैं, की इन यन्त्रों में तत्वों के आकार नहीं होते है, लेकिन अंकों की योजना ही उसमें तत्वों का प्रतिनीधित्व दर्शाती हैं।

यन्त्रों में निहित पाँच तत्वों के प्रभाव

कुछ जानकारों ने पाँच तत्व का प्रभाव मनुष्यों पर इस प्रकार माना हैं।

1. पृथ्वी तत्त्व:

पृथ्वी तत्त्व के प्रभाव से मनुष्य को स्थिरता, धैर्य, उत्साह, उत्तम विचारधारा, शान्ति, भौतिक सुख तथा सफलता की प्राप्ति होती हैं।

2. जल तत्त्व:

जल तत्त्व के प्रभाव से मनुष्य को मान, सम्मान, प्रेम, माधुर्य, सन्तोष, ज्ञान और चंचलता को नियंत्रित करने हेतु सहायता प्राप्त होती हैं।

3. अग्नि तत्त्व:

अग्नि तत्त्व के प्रभाव से मनुष्य को क्रोध, उत्तेजना, तीव्रता, क्लेश, विध्न, विनाश, अशांति, हानि, कष्ट-श्रमसाध्यता, उग्रकर्म आदि को नियंत्रित करने हेतु सहायता प्राप्त होती हैं।

4. वायु तत्त्व:

वायु तत्त्व का प्रभाव मनुष्य पर उचित मात्र में हो तो उत्तम हैं अन्यथा यह विपरीत परिणाम प्रदान करता हैं। वायु तत्त्व के प्रभाव से मनुष्य को बुद्धि, विक्षिप्तता, अविवेकी आचरण, मान-सम्मान की हानि, अपयश, दुःख, अज्ञानता, आदि को नियंत्रित करने हेतु सहायता प्राप्त होती हैं।

5. आकाश तत्त्व:

आकाश तत्त्व के प्रभाव पर ही मनुष्य को आध्यात्म प्रेम, विरक्त भाव, गहनचिन्तन, मनन,

अध्ययन और एकान्त को नियंत्रित करने हेतु सहायक हैं। यदि आकाश तत्त्व के सुफल में न्यूनाधिकता हो जाती हैं और कर्म द्रष्टि से इसका उपयोग किया जाता हैं।

जिस यन्त्र में इन तत्वों की आकृतियों का निर्देश हो उसमें भी सम्बन्धित तत्वों के अक्षर वाले बीजाक्षर हो तो यन्त्र शीघ्र सिद्ध हो जाता हैं।

पाठकों के ज्ञानवर्धन के उद्देश्य से स्वर और व्यंजनों को पाँच तत्वों की श्रेणी में दर्शाया गया हैं।

1. पृथ्वी तत्त्व के सम्बन्धित वर्णाक्षार क्रमशः उ, ऊ, ओ, ग, ज, ड़, द, ब, ल ।
2. जल तत्त्व के सम्बन्धित वर्णाक्षार क्रमशः औ, घ, झ, द, ध, भ, व, स ।
3. अग्नि तत्त्व के सम्बन्धित वर्णाक्षार क्रमशः इ, ई, ऐ, ख, छ, ठ, थ, फ, र ।
4. वायु तत्त्व के सम्बन्धित वर्णाक्षार क्रमशः अ, आ, ए, क, च, ट, त, प, य, ष ।
5. आकाश तत्त्व के सम्बन्धित वर्णाक्षार क्रमशः अः, अं, ड, न्य, ण, न, म, श, ह ।

यन्त्र के अंक एवं देवता

यहां हम एक से नौ तक की संख्याओं की देवाता एवं उनकी संबंधित दिशाओं को दर्शारहे हैं।

अंक देवता	दिशा
१. सूर्य	पूर्व
२. भुवनेश्वरी	नैऋत्य
३. गणपति	उत्तर
४. हनुमान	वायव्य
५. विष्णु	पश्चिम
६. कार्तवीर्य	आग्नेय
७. काली	दक्षिण
८. भैरव	ईशान
९. भैरवी	पश्चिम

नोटः उक्त वर्णन को केवल पाठकों के मार्गदर्शन हेतु प्रदान किया गया हैं। कोई भी व्यक्ति जो यन्त्र द्वारा लाभ प्राप्त करना चाहते हो उन्हें शास्त्र सम्मत नियमों एवं विधि-विधान का पालन करते हुवे गुरु आज्ञा प्राप्त कर के ही यन्त्र साधना करनी चाहिए।

अंक यन्त्रों की विशिष्टता एवं लाभ

✍ स्वस्तिक.ऎन.जोशी, दिपक.ऎस.जोशी

अंक यन्त्र अपने आपमें विशेष रहस्य समाये होते हैं। यन्त्र के जानकारों का अनुभव हैं की विशेष अंकों के माध्य से कठिन कार्यों को भी सरलता से सिद्ध किये जा सकते हैं। अब तक अंक यन्त्रों में प्रायः पन्द्रह से लेकर दस लाख तक की संख्याओं वालें अंकों का प्रयोग होते देखा गया हैं। पौराणिक गंथों में विभिन्न कार्यों की सिद्धि के लिए अंकों का महत्व विशेष रुप से दर्शाया गया हैं।

1) पंदरीया (15) यन्त्र सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाला माना गया हैं।
2) सोडष यन्त्र (16) अर्थात सोलह अंक वाले यन्त्र को चोर आदि बाधाओं को दूर करने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
3) उन्नीसां यन्त्र (19) खेत एवं धान को कीड़ों से बचाने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
4) बीसा यन्त्र (20) को सोलह कोष्टक में लिखकर पास में रखने से सभी तरह के भय का नाश होता हैं।
5) चौबीसा यन्त्र (24) सर्व प्रकार से ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता हैं।
6) अठाईसा यन्त्र (28) से रोग अभय नष्ट होता हैं।
7) तीस यन्त्र (30) से शाकिनी भय का नाश होता हैं।
8) बत्तीसा यन्त्र (32) को गर्भिणी को सुकपूर्वक प्रसव हेतु प्रयोग किया जाता हैं। (बत्तीसा यन्त्र के अनेक प्रयोग एवं लाभ विभिन्न ग्रंथोंमें देखनेको मिलते हैं।
9) चौतीसा यन्त्र (34) को मुख्य रुप से देव ध्वजा पर लिखने से शुभ फल प्राप्त होते हैं। चौतीसा यन्त्र परकर्म अर्थात किसी के द्वारा भय की प्राप्ति होने से पूर्व उसे दूर करता हैं। भवन की मुख्य दीवार पर इसे लेखने पर पराभाव नहीं होता, शत्रुद्वारा किये गये कामण-टुमण आदि का प्रभाव नष्ट हो जाता हैं।
10) छत्तीसा यन्त्र (36) को आर्थिक लाभ हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
11) चालीसा यन्त्र (40) को मान-सम्मान की वृद्धि, शत्रु को नतमस्तक करने एवं सिरदर्द दूर करने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
12) पच्चासवां यन्त्र (40) को छोटे बालकों का रोना बन्द कराने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
13) छप्पनवा यन्त्र (56) को मोहन आदि कार्यो के लिए प्रयोग किया जाता हैं।
14) बासठियां यन्त्र (62) को बंध्या स्त्री को गर्भ ठहरवाने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
15) चौसठियां यन्त्र (62) को सर्व प्रकार के भयों के निवारण के लिए विशेष रुप से प्रयोग किया जाता हैं। चौसठियां यन्त्र का प्रयोग भूत-प्रेत, शाकिनी-डाकिनी आदि पीडाओं से रक्षा हेतु किया जाता हैं।
16) सत्तरीयां यन्त्र (70) के प्रयोग से मान-सम्मान की वृद्धि होती हैं।
17) बहत्तरीयां यन्त्र (72) को भूत-प्रेत आदि भयों को नष्ट करने और जंग में विजय प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
18) अठोत्तरीयां यन्त्र (78) को सर्व प्रकारके कष्ट से मुक्ति हेतु हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
19) अस्सीयां यन्त्र (80) को अपने द्वारा किये गये कर्म फलों की प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
20) पिच्चासियां यन्त्र (85) को मार्ग अर्थात यात्रा भय के निवारण हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
21) नब्बेयां यन्त्र (90) को चोर से रक्षा हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
22) सौवां यन्त्र (100) को सर्व कार्य सिद्धि हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

23) एक सौ बीस यन्त्र (120) को गर्भिणी की प्रसव पीड़ा-कष्ट को कम करने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
24) एक सौ छब्बीसां यन्त्र (126) को बंधे हुवे गर्भ को खोने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
25) एक सौ बावनयां यन्त्र (152) को भाई-बहन मे आपसी प्रेम की वृद्धि हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
26) एक सौ सत्तरीयां यन्त्र (170) ज्ञान वृद्धि हेतु विशेष प्रभावकारी माना गया हैं।
27) एक सौ बहत्तरीयां यन्त्र (172) को संतान लाभ एवं भय निवारण हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
28) दौ सौ का यन्त्र (200) को व्यवसाय वृद्धि हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
29) तीन सौ का यन्त्र (300) को पति-पत्नी में आपसी स्नेह बढ़ाने हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
30) चार सौ का यन्त्र (400) को भवन में लिखने से भय से रक्षा हेतु एवं खेतों में लिखने से धान्य की उपज अच्छि हो इस लिए किया जाता हैं।
31) पांच सौ का यन्त्र (500) स्त्री को गर्भ धारण हेतु एवं पुरुष को उत्तम संतान की प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
32) छः सौ का यन्त्र (600) को सुख-सम्पत्ति की प्राप्ति के लिए प्रयोग किया जाता हैं।
33) सात सौ का यन्त्र (700) को वाद-विवाद में विजप प्राप्ति के लिए प्रयोग किया जाता हैं।
34) नौ सौ का यन्त्र (900) को मार्ग भय एवं यात्रा भय से रक्षा हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
35) एक हजार का यन्त्र (1000) को विजय प्राप्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
36) ग्यारह सौ का यन्त्र (1100) को दुष्टात्माओं, भय एवं क्लेश से से रक्षा हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
37) बारह सौं का यन्त्र (1200) को बंधन मुक्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
38) पचास हजार का यन्त्र (50000) को राज सम्मान की प्राप्ति एवं सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति हेतु प्रयोग किया जाता हैं।
39) दस लाख दस हजार का यन्त्र (1010000) को मार्ग में चोर भय से रक्षा हेतु प्रयोग किया जाता हैं।

इस प्रकार से किसी भी यन्त्र का प्रयोग करने से पूर्व उसके पूर्ण प्रभावों को जान लेना अति आवश्यक हैं उपर दर्शाये गये अंक यन्त्रों की सूचि यहां मात्र मार्गदर्शन के उद्देश्य से दी गई हैं। विद्वजनों एवं साधको के अनुभवों में अंतर होने से उपर में जो फल दर्शाये गये हैं उसमें अंतर संभव हैं, अतः इस विषय में किसी योग्य गुरु या साधक से परामर्श कर लेना अति आवश्यक हैं।

श्रीयंत्र की महिमा

✍ चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऎन.जोशी

हिन्दु धर्म में श्रीयंत्र सर्वाधिक लोकप्रिय एवं प्राचीन यंत्र है, श्रीयंत्र की आराध्या देवी स्वयं श्रीविद्या अर्थात त्रिपुर सुन्दरी देवी हैं, श्रीयंत्र को देवीके ही रूप में मान्यता दिगई है।

श्रीयंत्र को अत्याधिक शक्तिशाली व ललितादेवी का पूजन चक्र माना जाता है, श्रीयंत्र को त्रैलोक्य मोहन अर्थात तीनों लोकों का मोहन करने वाला यन्त्र भी कहां जाता है।

श्रीयंत्र में सर्व रक्षाकारी, सर्वकष्टनाशक, सर्वव्याधि-निवारक विशेष गुण होने के कारण श्रीयंत्र को सर्व सिद्धिप्रद एवं सर्व सौभाग्य दायक माना जाता है।

श्रीयंत्र को सरल शब्दों में लक्ष्मी यंत्र कहा जाता हैं, क्योकि श्रीयंत्र को धन के आगमन हेतु सर्वश्रेष्ठ यंत्र माना गया हैं।

विद्वानों का कथन हैं की श्रीयंत्र अलौकिक शक्तियों व चमत्कारी शक्तियों से परिपूर्ण गुप्त शक्तियों का प्रमुख केन्द्र बिन्दु है।

श्रीयंत्र को सभी देवी-देवताओं के यंत्रों में सर्वश्रेष्ठ यंत्र कहा गया है। यहीं कारण हैं, कि श्रीयंत्र को यंत्रराज, यंत्र शिरोमणि भी कहा जाता है।

श्रीयंत्र से जुड़ी पौराणिक कथा

धर्मग्रंथों में श्री यंत्र के संदर्भ में एक प्रचलित कथा का वर्णन मिलता है।

कथाके अनुसार एक बार आदिगुरु शंकराचार्यजी ने कैलाश पर भगवान शिवजी को कठिन तपस्या द्वारा प्रसन्न कर लिया।

भगवान भोलेनाथ ने प्रसन्न होकर शंकराचार्यजी से वर मांगने के लिए कहा। आदिगुरु शंकराचार्यजी ने शिवजी से विश्व कल्याण का उपाय पूछा। पूछे गये प्रश्न पर भगवान भोलेनाथ ने स्वयं शंकराचार्य को साक्षात लक्ष्मी स्वरूप श्री यंत्र की विस्तृत महिमा बताई और कहा यह श्री यंत्र मनुष्यों का सभी प्रकार से कल्याण करेगा।

श्री यंत्र परम ब्रह्म स्वरूपी आदि देवी भगवती महात्रिपुर सुदंरी की उपासना का सर्वश्रेष्ठ यंत्र है क्योंकि श्री चक्र ही देवीका निवास स्थल है। श्री यंत्र में देवी स्वयं विराजमान होती हैं इसीलिए श्री यंत्र विश्व का कल्याण करने वाला है।

आज के आधुनिक युग में मनुष्य विभिन्न प्रकार की समस्याओं से ग्रस्त है, एसी स्थिति में यदि मनुष्य पूर्ण श्रद्धाभाव और विश्वास से श्रीयंत्र की स्थापना करें तो यह यंत्र उसके लिए चमत्कारी सिद्व हो सकता है।

मंत्र सिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठित श्री यंत्र को कोई भी मनुष्य चाहे वह धनवान हो या निर्धन वहँ अपने घर, दुकान, ऑफिस इत्यादि व्यवसायीक स्थानों पर स्थापित कर सकता हैं। विद्वानो का अनुभव हैं की श्रीयंत्र का प्रतिदिन पूजन करने से देवी लक्ष्मी प्रसन्न होती है और मनुष्य का सभी प्रकार से मंगल करती हैं। मां महालक्ष्मी की कृपा से मनुष्य दिन प्रतिदिन सुख-समृद्धि एवं ऐश्वर्य को प्राप्त कर आनंदमय जीवन व्यतीत करता हैं।

पौराणिक धर्मग्रंथों में वर्णित हैं की श्री यंत्र आदिकालीन विद्या का द्योतक हैं, भारतवर्ष में प्राचीनकाल में भी वास्तुकला अत्यन्त समृद्व थी। और आज के आधुनिक युग में प्रायः हर मनुष्य वास्तु के माध्यम से भी प्रकार के सुख प्राप्त करना चाहता है। उनके लिए श्रीयंत्र की स्थापना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

क्योकि जानकारों का मानना हैं की श्री यंत्र में ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति और विकास का रहस्य छिपा हैं।

विद्वानो के मतानुशार श्रीयंत्र में श्री शब्द की व्याख्या इस प्रकार से की गई हैं **"श्रयत या सा श्री"**

अर्थात जो श्रवण की जाये, वह श्री हैं। नित्य परब्रह्मा से आश्रयण प्राप्त करती हो, वह श्री हैं।

श्रीयंत्र का अन्य अर्थ हैं श्री का यंत्र। यंत्र शब्द "यम" धातु का घोतक हैं। (यम धातु से बना हैं)

यन्त्र शब्द गृह शब्द को प्रकट करता हैं। जिस प्रकार गृह में सब वस्तुओं का नियंत्रण होता हैं उसी प्रकार श्रीयंत्र को प्राप्त करने या नियंत्रित करने के लिए श्रीयंत्र सर्वश्रेष्ठ माध्य हैं।

प्रायः सभी लोगोने अपने दैनिक जीवन में अनेक बार देखा होगा की किसी श्रेष्ठ एवं पूज्य मनुष्यों के नाम के आगे लोग "श्री" शब्द का प्रयोग करते हैं। मनुष्य की श्रेष्ठता के अनुक्रम के अनुशार उनकी नामके आगे 3, 4, 5, 8 बार तक "श्री" शब्द प्रयोग का शास्त्रों में उल्लेख मिला हैं। प्रधान पीठाधिश्वर/पीठाधिपति अथवा किसी संप्रदाय विशेष के प्रधानाचार्यों के नाम के आगे या पीछे 1008 बार तक "श्री" का प्रयोग किया जाता हैं। क्योकि "श्री" शब्द का सरल अर्थ "लक्ष्मी" होता हैं।

लेकिन विभिन्न धर्मग्रंथों में "श्री" शब्द का अर्थ महात्रिपुरसुन्दरी होने का उल्लेख मिलता हैं। **कुछ धर्मशास्त्रों एवं ग्रंथों में वर्णित हैं की "श्री महालक्ष्मी" ने महात्रिपुरसुन्दरी की चिरकाल आराधना करके उसने अनेक वरदान प्राप्त किये हैं। लक्ष्मीजी को प्राप्त इन्हीं वरदानों से एक वरदान "श्री" शब्द से ख्याति प्राप्त करने का भी प्राप्त हुवा। तभी से श्री शब्द का अर्थ लक्ष्मी समझा जाने लगा!

** धर्मशास्त्रों एवं ग्रंथों का संदर्भ हरितयनसंहिता, ब्रह्माण्डपुराणोत्तरखण्ड इत्यादि।

श्रीचक्र से संबंधित मत शंकराचार्या कृत आनन्द सौंदर्य लहरी में वर्णित हैं

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिव्युवतिभिः पञ्चभिरपि.
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः ।
त्रश्रयश्चत्वारिंशदसुदलकलात्रिवलय-.
त्रिरेखाभिः सार्धं तव कोणाः परिणताः ।

श्रीयंत्र का विषय अत्यन्त गहन हैं, लेकिन यहाँ हम पाठकों के मार्गदर्शन हेतु इसका संक्षिप्त विवरण देने का प्रयास कर रहे हैं।

विभिन्न तांत्रिक ग्रंथों में श्री यंत्र के विषय में जितना वर्णन मिलता हैं उतना और किसी विषय पर नहीं मिलता!

श्रीयंत्र में स्थित नौ चक्रों का वर्णन रुद्रयामल तंत्र में वर्णित हैं

बिन्दुत्रिकोणवसुकोणदशारयुग्म
मन्वस्न्नागदलसंयुतषोडशारम्।
वृतत्रयं च धरणीसदनत्रयं च
श्रीचक्रमे त दुदितं परदेवतायाः॥

अर्थात: श्रीयंत्र के नौ चक्र क्रम में १. बिन्दु, २. त्रिकोण, ३. आठ त्रिकोणों का समूह, ४. दस त्रिकोणों का समूह, ५. दस त्रिकोणों का समूह, ६. चौदह त्रिकोणों का समूह, ७. आठ दलों वाला कमल, ८. सोलह दलों वाला कमल, ९. भूपुर ।

इन चक्रों को भिन्न-भिन्न रंगों से दर्शाने का विधान हैं, कमल के भितर दर्शाये गय क्रमशः २,३,४,५,६ के कुल मिलाकर जो ४३ त्रिकोण (इन ४३ त्रिकोण की सहायता से अन्य त्रिकोण कुल मिलाकर १०८ बनते हैं।) दर्शाये गये हैं उसके विषय में आनन्द सौंदर्य लहरी का उल्लेख उपर दर्शाया गया हैं।

इन चक्रों में यदि त्रिकोण उर्ध्वमुखी हो तो वह चक्र शिवप्रधान कहलाता हैं एवं यदि बीच का त्रिकोण अधोमुखी या स्वाभिमुखि हो तो वह शक्ति प्रधान यंत्र कहा जाता हैं। श्रीयंत्र से संबंधित विषय अत्यंत व्यापक हैं यही कारण हैं की श्रीयंत्र का पूजन दक्षिण-मार्ग एवं बाम-मार्ग दोनों विधि या प्रयोग से किया जाता हैं, जिसका विस्तृत वर्णन त्रिपुरतापिनी उपनिषद एवं त्रिपुरा उपनिषद में समान रुप से वर्णित हैं।

श्रीयंत्र में नौ चक्रों के नाम एवं उसके भिन्न-भिन्न रंगों क्रम क्रमशः इस प्रकार है..

(१) सर्वानन्दमय (केन्द्रस्थ रक्त बिन्दु)

(२) सर्व सिद्धिप्रद (पीले रंग का त्रिकोण)

(३) सर्वरक्षाकार (हरें रंग के आठ त्रिकोणों का समूह)

(४) सर्व रोग हर (काले रंग के दस त्रिकोणों का समूह)

(५) सर्वार्थ साधक (लाल रंग के दस त्रिकोणों का समूह)

(६) सर्व सौभाग्यदायक(नीले रंग के चौदह त्रिकोणों का समूह)

(७) सर्व संक्षोभक्ष(गुलाबी रंग के आठ दलों वाला कमल)

(८) सर्वाशापरिपूरक(पीले रंग के सोलह दलों वाला कमल)

(९) त्रैलोक्य मोहन(हरे रंग का बाहरी स्थल अर्थात भूपुर)

श्री यन्त्र के नौ चक्रों का विस्तृत वर्णन

सर्वानन्दमय चक्र:

सर्वानन्दमय चक्र की अधिष्ठात्री देवी ललिता अथवा त्रिपुरसुन्दरी हैं, जो अपने आवरण में देवताओं के भेद से कहीं पर षोडश देवीयों में मुख्य मानी गयी हैं और कहीं पर अष्ट मातृकाओं में सर्वश्रेष्ठ मानी गयी हैं, कहीं पर अष्ट वशिनी देवताओं की अधिनायिका मानी गयी हैं। यह भेद प्रस्तार अलग-अलग भेद से हुए हैं और यथा क्रम से इन तीनों प्रस्तारों के नाम मेरु, कैलास तथा भूः प्रस्तार हैं। यही श्रीयंत्र की उपासना के प्रमुख प्रकार माने जाते हैं।

सर्व सिद्धिप्रद चक्र:

सर्व सिद्धिप्रद चक्र जो एक त्रिकोण हैं, इस त्रिकोण के तीनों कोण को कामरुप, पूर्णागिरि तथा जालन्धर पीठ कहां गया हैं। इनके मध्य में औड्याणपीठ हैं, प्रथम तीनों पीठों की अधिष्ठात्री देवी कामेश्वरी, ब्रजेश्वरी तथा

भगमालिनी हैं जो प्रकृति, महत् तथा अभिमान हैं।

सर्वरक्षाकार चक्र:

सर्वरक्षाकार चक्र जो आठ त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ वासिनी, कामेश्वरी, मोहिनी, विमला, आरुणा, जयिनी, सर्वेश्वरी थथा कौलिनी हैं जो क्रमशः शीतः, उष्ण, सुख, दुःख, इच्छा, सत्त्व, रज तथा तम की स्वामिनी हैं। इस चक्र का साधक गुणों पर अधिकार करने और द्वन्द्व करने में समर्थ होता हैं।

सर्व रोग हर चक्र:

सर्व रोग हर चक्र जो दस त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ सर्वज्ञा, सर्वशक्तिप्रदा, सर्वेश्वर्यप्रदा, सर्वज्ञानमयी, सर्वव्याधिनाशिनी, सर्वाधारा, सर्वपापहरा, सर्वानन्दमयी, सर्वरक्षा तथा सर्वेप्सितफलप्रदा हैं, जो क्रमशः रेचक, पाचक, शोषक, दाहक, प्लावक, क्षारक, उद्धारक, क्षोभक, जम्भक तथा मोहक वह्निकलाओं की स्वामिनी हैं।

सर्वार्थ साधक चक्र:

सर्वार्थ साधक चक्र जो दस त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ दस प्राणों की स्वामिनी हैं, जो क्रमशः सर्वसिद्धिप्रदा, सर्वसम्पत्प्रदा, सर्वप्रियंकरी, सर्वमंगलकारिणी, सर्वकामप्रदा, सर्वदुःख विमोचनी, सर्वमृत्युप्रशमनी, सर्व विध्ननिवारिणी, सर्वांगसुन्दरी तथा सर्व सौभाग्यदायिनी हैं।

सर्व सौभाग्यदायक चक्र:

सर्व सौभाग्यदायक चक्र जो चौदह त्रिकोणों का समूह हैं, इस त्रिकोणों की अधिष्ठात्री देवीयाँ सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्वाह्लादिनी, सर्वसम्मोहिनी, सर्वस्तम्भिनी, सर्वअम्भिनी, सर्ववशंकरी, सर्वराजनी, सर्वोन्मादिनी, सर्वार्थसाधनी, सर्वसम्पत्तिपूरणी, सर्वमन्त्रमयी, सर्वद्वन्द्वक्षयंकरी हैं। यह देवीयां मुख्य नाड़ियों की स्वामीनी हैं, जो क्रमशः अलम्बुसा, कुहु, विश्वोदरी, वारणा, हस्तिजिह्वा, यशोवती, पयस्विनी गान्धारी, पूषा, संखिनी, सरस्वती, इड़ा, पिंगला तथा सुषुम्णा हैं।

सर्व संक्षोभक्ष चक्र:

सर्व संक्षोभक्ष चक्र जो आठ दलों वाला कमल हैं, इस अष्टदल की अधिष्ठात्री देवीयाँ अनंकुसुमा, अनंगमेखला, अनंगमदना, अनंगमदनातुरा, अनंगरेखा, अनंगवेगिनी, अनंगमदनांकुशा तथा अनंगमालिनी हैं, जो क्रमशः वचन, आदान, गमन, विसर्ग, आनन्द हीन, उपादान तथा उपेक्षा बुद्धि की स्वामिनी हैं।

सर्वाशापरिपूरक चक्र:

सर्वाशापरिपूरक चक्र जो सोलह दलों वाला कमल हैं, इस अष्टदल की अधिष्ठात्री देवीयाँ कामाकर्षिणी, बुद्धध्याकर्षिणी, शब्दाकर्षिणी, स्पर्शाकर्षिणी, रुपाकर्षिणी, रसाकर्षिणी, गन्धाकर्षिणी, चित्ताकर्षिणी, धैर्याकर्षिणी, स्मृत्याकर्षिणी, नामाकर्षिणी, बीजाकर्षिणी, आत्माकर्षिणी, अमृताकर्षिणी तथा शरीराकर्षिणी हैं, जो क्रमशः मन, बुद्धि, अहंकार, शब्द, स्पर्श, रुप, रस, गन्ध, चित्त, धैर्य स्मृति, नाम, वार्धक्य, सूक्ष्म शरीर, जीवन तथा स्थूल शरीर की स्वामिनी हैं।

त्रैलोक्य मोहन चक्र:

त्रैलोक्य मोहन चक्र जो बाहरी स्थल हैं, जिसके चार विभाग हैं (क) षोडशदल कमल के बाहरी चारों वृत्तों के परे गड़ाग सदृश स्थल। (ख) इस स्थल से लगी हुई पतली बाहरी रेखा (ग) दूसरी बाहरी रेखा और (घ) सबसे बाहर बाली रखा। इन चारों विभागों में क्रमशः दस मुद्राशक्तियाँ, दस दिकपाल, आठ मातृकाएँ तथा दश सिद्धियाँ स्तित हैं।

दस मुद्राशक्तियों के नाम क्रमशः सर्वसंक्षोभिणी, सर्वविद्राविणी, सर्वाकर्षिणी, सर्वावेशकरिणी, सर्वोन्मादिनी, महांकुशा, खेचरी, बीजमुद्रा, महायोनि तथा त्रिखण्डिका हैं, जिसका आधार दस आधारों से हैं, इन आधारों का विस्तृत वर्णन यहां करना संभाव नहीं हैं। लेकिन इतना अवश्य है की इन आधारों के रुप में ही श्रीयंत्र तथा षट्चक्रों का तादात्मय सिद्ध होता हैं।

दस दिकपाल के नाम क्रमश: इंद्र, अग्नि, यम, नऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईश्, अनंत और ब्रह्मा।

आठ मातृकाओं के नाम क्रमशः ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी, वैष्णवी, वाराही, ऐन्द्री, चामुण्डा तथा महालक्ष्मी हैं। इन मातृकाओं का पूजन का लक्ष्य काम, क्रोध, लोभ, मोह, मद, मात्सर्य, पाप तथा पुण्य पर विजय प्राप्त करने हेतु किया जाता हैं।

श्रीयंत्र का निर्माण और पूजन

जानकारों का कथन हैं की श्रीयंत्र के निर्माण हेतु सर्वोत्तम दिन पौष मास की संक्रांति के दिन रविवार हो तो अति उत्तम संयोग माना जाता हैं। लेकिन एसे योग अत्यंत दुर्लभ होते हैं, इस लिए यदि एसा योग नहीं बन रहा हो तो किसी भी मास की संक्रांति के दिन रविवार हो तो भी शुभकारी माना जाता हैं अथवा किसी भी मास की शुक्ल पक्ष की अष्टमी के दिन रविवार हो, या धनतेरस, दीपावली, नवरात्री, रविपुष्य योग, गुरुपुष्य योग इत्यादि होने पर भी यंत्र का निर्माण किया जा सकता हैं। यदि उक्त सभी मुहूर्त का संयोग न हो तो किसी भी शुभ मुहूर्त में यंत्र का निर्माण शुद्धधातु में करवालें।

उत्तम तो यहीं होगा कि श्रीयंत्र को किसी जानकार व्यक्ति के द्वारा ताम्रपत्र, रजत या सुवर्ण पर उत्कीर्ण करवालें।

पूजन

- ❖ यंत्र प्राप्त हो जाये तो ब्रह्ममुहूर्त में स्नानादि से निवृत्त हो कर, शांत चित्त से पूर्वाभिमुख हो कर बैठा जाये।
- ❖ श्रीयंत्र का धूप-दीप, गंध पुष्प आदि अर्पित कर उसका षोडषोपचार पूजन करे या विद्वान कर्मकाण्डी ब्राह्मण द्वारा करवाकर उसकी प्राण-प्रतिष्ठा करवा लें। अपने पूजन स्थान पर लाल वस्त्र बिछाकर, उस पर केसर या हल्दी रंगे हुवे अक्षत से अष्टदल बनाकर उस के उपर यंत्र स्थापित करना चाहिए। यंत्र का पूजन अथवा प्राण-प्रतिष्ठा पूर्ण हो जाने पर अगले दिन श्री यंत्र को शुभ मुहूर्त में अपने घर, दुकान, ऑफिस इत्यादि व्यवसायीक स्थानों पर या तिजोरी, कैशबोक्स इत्यादि धन रखने वाले स्थानों पर पीला वस्त्र बिछाकर स्थापित करें।
- ❖ प्रतिदिन श्रीयंत्र का पंचोपचार पूजन और श्रीसूक्त का नियमित पाठ करने से यह अत्याधिक फलदायी सिद्ध होता हैं।
- ❖ यदि प्रतिदिन पंचोपचार पूजन या श्रीसूक्त का पाठ संभव न हो तो पूर्ण श्रद्धा भाव से केवल धूप-दिप से पूजन एवं दर्शन कर लक्ष्मी मंत्र का जाप करना भी लाभप्रद होता हैं।
- ❖ लक्ष्मी मंत्र के उच्चारण के लिए स्फटिक या कमलगट्टे की माला श्रेष्ठ मानी जाती हैं। (कमल गट्टा देवी लक्ष्मी को अत्यंत प्रिय हैं, देवी लक्ष्मी का निवास कमल के पुष्पों पर होता हैं।)

श्रीयंत्र ध्यान मंत्र

दिव्या परां सुघवलारुण चक्रायातां
मूलादिबिन्दु परिपूर्ण कलात्मकायाम्।
स्थित्यात्मिका शरघनुः सुणिपासहस्ता।
श्रीचक्रतां परिणिता सततंनमामि ।

श्रीयंत्र प्रार्थना मंत्र

ध्यान के पश्चयात श्रीयंत्र की प्राथना करें।
धनं धान्यं धरां हर्म्य कीर्तिर्मायुर्यशः श्रियम्।
तुरगान् दन्तिनः पुत्रान् महालक्ष्मी प्रयच्छ में॥

विभिन्न धर्मग्रंथों एवं शास्त्रों के अनुशार मंत्र सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित, पूर्ण चैतन्ययुक्त श्रीयंत्र के सामने लक्ष्मी बीज मंत्र की माला जप करना अत्याधिक लाभप्रद सिद्ध होता हैं।

लक्ष्मी बीज मंत्र

ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्मै नमः।

श्रीयंत्र के सम्मुख भोग लगाकर उसे स्वयं और परिजनों को भी प्रसाद के रुपमें बांट दें।

श्रीयंत्र से जुडी रोचक बाते।

श्रीयंत्र का विलक्ष्ण प्रभाव हमारे विद्वान ऋषि-मुनियों ने हजारों वर्ष पूर्व ही ज्ञात कर लिया था!

आदिगुरु शंकराचार्याजी ने श्रीयंत्र के गूढ रहस्यों को ज्ञात कर लिया था। शंकराचार्याजी श्रीयंत्र अद्‍भुत प्रभावों से परिचित थे इस लिए उनकी श्रीयंत्र पर गहरी आस्था एवं विश्वास के कारण ही श्री यंत्र को उन्हो ने अपने सभी मठों में प्रतिष्ठा एवं दैनिक पूजन करने का सुझाव दिया था, यही कारण हैं की आज उनके प्रत्येक मठ में श्रीयंत्र का विधिवत पूजन-अर्चन किया जाता हैं।

विद्वानों का मानना हैं की दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध तिरुपति बालाजी के मंदिर की नींव में श्रीयंत्र स्थापित हैं। इतनाही नहीं वहां मुख्य विग्रह के पीठ में श्रीयंत्र उत्कीर्ण हैं। जिसका नियमित विधि-विधान से पूजन किया जाता हैं!

आबू के प्रसिद्ध दिलवाड़ा (देलवाड़ा) के मंदिर के खम्भों पर श्रीयंत्र अंकित हैं।

पौराणिक लोक मान्यताओं के अनुशार सोमनाथ कें विश्व प्रसिद्ध महादेव मंदिर के भूगर्भ में सुवर्ण शिला पर श्रीयंत्र का उत्कीर्ण किया गया था। जिसका पूजन गुप्त रुप से विद्वान ब्राह्मणों द्वारा किया जाता था। इसी कारण से पुरातन काल से वहां अतुल सम्पत्ति की नित्य वर्षा होती थी। यही कारण हैं की वहां अनमोल अरबों-खरबो के हीरे-जवाहरात बहुमूल्य रत्न इत्यादि उसके स्थम्भों पर ही जड़ित थे। जिसकी ख्याति सुन कर मोहम्मद गजनबी ने इसे लूट लिया और सोने की लालच में श्रीयंत्र को टूकड़ों में काटकर अपने साथ ले गया तब से मंदिर श्रीयंत्र से विहिन माना जाता हैं।

गुजरात के सूरत शहर में मेरुलक्ष्मी मंदिर या श्रीयंत्र मंदिर स्थित हैं इस मंदिर का निर्माण पूर्ण रुप से श्रीयंत्र के आकार में भव्य एवं विशाल रुप में किया गया हैं। संपूर्ण मंदिर को श्रीयंत्र की आकृति के अनुरुप निर्मित किया गया हैं, मंदिर के मध्य में श्रीयंत्र स्थापित हैं।

एक प्रचलित कथा के अनुशार किसी राज्य में भानुप्रताम नाम का अति धर्मभीरु आध्यात्मिक विचारों वाले राजा का राज था। वह बद्रीनाथ का उपासक था। उसके पार श्रीयंत्र था, कहां जाता हैं की श्रीयंत्र की सिद्धिअ राजा के पास थी। राजा इसी श्रीयंत्र के माध्यम से देवभाष्य जानता था। श्रीयंत्र के कारण ही उसे आकाशवाणी हुई कि वह अपना राजपाड त्यागकर अपनी कन्या का ब्याह मालवा के राजा कनकपाल से करके हिमालय के प्रसिद्ध बद्रीधाम में आकर देव-दर्शन का लाभ प्राप्त करें। राजा कनकपाल ने अपने गुरु के निर्देश पर श्रीयंत्र को नौटी नामक स्थान के चौराहे में विधिवत पूजन कर भूमिगत स्थापित किया, जो स्थान कालांतर में नन्दा देवी श्रीपीठ के रुप में प्रसिद्ध हुवा।

भारत के साथ-साथ श्रीयंत्र के प्रभावों की जानकारी अन्य देशों में निवास करने वाले भारतीय एवं वहां के स्थानिय लोगो को भी अवश्य रहती होगी! क्योकि भारतवासी जहां भी गये वहां श्रीयंत्र को अपने साथ लेकर गये और निरंतर उसके प्रभावों का विस्तार करते रहें।

नेपाल के पशुपतिनाथ मंदिर के मुख्य द्वार पर श्रीयंत्र निर्मित हैं।

- जिस श्रीयंत्र में सभी चक्र एवं बीज मंत्र अंकित हो वह संपूर्ण श्रीयंत्र कहां जाता हैं और जो यंत्र केवल चक्रों से बना हो बीज, शक्ति मंत्रों इत्यादि से रहित हो वह श्रीचक्र यंत्र कहां जाता हैं।
- आज कल श्रीयंत्र की अपेक्षा श्रीचक्र यंत्र ही अधिक देखने में आते हैं। लेकिन कुछ जानकारों का मानना

हैं की बीजाक्षर की शक्ति ही मंत्र यंत्र की आत्मा एवं प्राण माने जाते हैं।

- यामल ग्रंथ में वर्णित हैं की श्री यंत्र के दर्शन मात्र से ही विशेष लाभ की प्राप्ति हो जाती हैं।
- यथा-सार्ध त्रिकोटितोर्थेषु स्नात्वा यत्फलमश्नुते लभते तत्फलम् भक्त्या, कृत्वा श्री चक्रदर्शनम्।
- विद्वानो ने अपने अनुभवों में पाया हैं कि श्री यंत्र अत्यंत प्रभावशाली यंत्र हैं, कि दैनिक श्रद्धापूर्वन श्रीयंत्र के दर्शनमात्र से शीघ्र ही मनुष्य की मनोकामनाए पूर्ण होने लगती हैं।

त्रिपुरतापिनी उपनिषद में उल्लेख हैं:

श्री चक्रं यो धेत्ति स सर्द वेति। स सकलांल्लोकानाकर्षयति। सर्व स्तम्भयति नीलीयुक्तं चक्रं शत्रुन्मरियति। गतिं स्तम्भयति। लाक्षायुक्तं कृत्वा सकललोकं वशीकरोति। नवलक्षजपं कृत्वा रुद्रत्वं प्राप्नोति। मृनिकया वेष्टित कृत्वा विजयी भवति। वर्तुले हुत्वा श्रियमतुलां प्राप्नोति। चतुरस्त्रे हुत्वा वृष्टिर्भवति। त्रिकोणे हुत्वा शत्रून्मारयति। गति स्तम्भयतिः पुश्ज्पाणि हुत्वा विजयी भवति। महारसर्हुर्वा परमानन्दनिर्भरो भवति।

अर्थातः जो श्री यंत्र के रहस्य को जानता हैं वह सकल ब्रह्माण्ड के भूत, भविष्य, वर्तमान को जानता हैं। वह सकल ब्रह्माण्ड को आकर्षित करता हैं, सर्व लोकों को स्तम्भित करता हैं, नीले थोथे से इस चक्र का प्रयोग करने पर शत्रुओं को मारता हैं, गतिमान पदार्थों को रोकने में समर्थ बनता हैं। लाक्षारस के साथ इसका प्रयोग करने से मनुष्य सकल लोकों के प्राणियों का वशीकरण करने में सफल होता हैं। श्रीयंत्र के बीज मंत्र का नवलाख जप करने से मनुष्य रुद्रत्व (शिवत्व अर्थात शिव के समान शाप देने, संहार करने का सामर्थ्य) को प्राप्त करता हैं। मिट्टी से वेष्टित (अर्थात भुजा में धारण करना) करने पर विजयश्री को प्राप्त करता हैं। भग(योनि) की आकृति वाले कुंडाकार यज्ञस्थल पर आहुति देने पर मनुष्य सब प्रकार की स्त्रियों को वशीभूत कर लेता हैं। वर्तला आकृति वाले कुण्ड पर आहुति देने पर मनुष्य अतुल्य राजलक्ष्मी को प्राप्त करता हैं। चतुष्कोण आकृति वाले कुण्ड पर आहुति देने पर मनुष्य वर्षा को उत्पन्न करता हैं। त्रिकोण आकृति वाले कुण्ड पर आहुति देने पर मनुष्य शत्रुओं को मारता हैं। गति को स्तम्भित करता हैं। पुष्पों की आहुति देने पर विमल यश एवं विजय को प्राप्त करता हैं। महारस (अर्थात बिल्व फल) की हवि देकर परमानंदत्व को प्राप्त हो जाता हैं।

श्रीविद्या का महत्वः

श्रीविद्या सात्त्विक उपासनाओं में सर्वोपरि एवं सर्व श्रेष्ठ साधना हैं। जिस प्रकार विभिन्न देवी-देवताओं की आराधना से धन, धान्य, पशु संपदा आदि लौकिक सिद्धियां प्राप्त हो जाती हैं। लेकिन श्रीविद्या की आराधना से धन, धान्य इत्यादि भौतिक सुख साधन तो प्राप्त होते ही हैं उसके साथ-साथ आत्म ज्ञान व परमतत्त्व की प्राप्ति भी होती हैं।

इस विषय में शास्त्रों में उल्लेख हैं।

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो,यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः
श्रीसुन्दरीसेवतत्पराणां, भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।

अर्थातः जहाँ भोग है वहाँ मोक्ष नहीं, जहाँ पर मोक्ष हैं वहाँ भोग नहीं हो सकता। लेकिन श्री महालक्ष्मी की सेवा से भोग व मोक्ष दोनों ही सहज में प्राप्त हो जाते हैं।

यदि कारण हैं की हजारों वर्षो से श्री महालक्ष्मी की उपासना का प्रबल माध्यम श्री यन्त्र ही रहा हैं। त्रिपुरोपनिषद में कादि-हादि विद्याओं के नाम से श्रीविद्या का स्पष्ट उल्लेख मिलता हैं। श्रीशंकराचार्य कृत सौन्दर्य लहरी एवं प्रपंचसार आदि ग्रंथ श्री यंत्र के शुद्ध एवं सात्विकता के सर्वोत्तम प्रमाण हैं।

कुछ जानकार विद्वानों का कथन हैं की श्रीविद्या गुरुगम्य हैं। इस लिए गुरुकृपा के बिना प्राण-प्रतिष्ठित या अभिमंत्रित श्री यंत्र उत्तम फल नहीं देते। श्रीआदि गुरु शंकराचार्य जी को श्रीविद्या की दीक्षा योगेन्द्र श्री गोविन्दपादाचार्य से प्राप्त हुई थी। योगेन्द्र श्री गोविन्दपादाचार्य जी को श्रीविद्या की दीक्षा श्री गौड़पादाचार्य के गुरु भगवान दत्तात्रेय ने स्वयं दी थी। इस प्रकार श्रीविद्या के अत्यंत प्राचीन गुर-शिष्य परंपरायें सर्वत्र प्रसिद्ध हैं।

सुन्दरीतापनीय में उल्लेख हैं की जिस प्रकार घट, कलश और कुंभ तीनों शब्द का एक ही अर्थ हैं उसी प्रकार यंत्र, देवता और गुरु यह तीनों शब्द का एक ही हैं।

कुछ विद्वानो का मत हैं की भोजपत्र पर निर्मित श्रीयंत्र विशेष प्रभावी होती हैं। क्योकि शास्त्रों में वर्णित हैं की *"यः भूर्जदपैर्यजाति स सर्वान्लभते"*

श्रीयंत्र के तीन प्रमुख प्रकार हैं।

1. मेरुपृष्ठ, 2. कूर्मपृष्ठ, 3. भूपुष्ठ।

कुछ विद्वजनों का कथन हैं की श्रीयंत्र को प्राण-प्रतिष्ठित करने का अधिकारी केवल वही मनुष्य को होता हैं जिसने श्रीविद्या की योग्य गुरु से दिक्षा लि हो। योग्य गुरु से दिक्षा प्राप्त किय बिना बड़े से बड़े विद्वान ब्राह्मण को भी चाहे वह चारों वेद का ज्ञाता हो या पूजा-पाठ में प्रखंड विद्वान हो उसे भी श्री यंत्र को अभिमंत्रित या प्राण-प्रतिष्ठित करने का अधिकार नहीं हैं। यही कारण हैं की अज्ञानता वश किये गये इस प्रकारके पूजनों के कारण आज बड़े से बड़े विद्वान ब्राह्मण के पास ज्ञान तो खुब होता हैं लेकिन मां लक्ष्मी की विशेष कृपा उसके पर नहीं होती!

- विद्वानों का कथन हैं की धार्मिक मान्यता के अनुशार भोजपत्र की अपेक्षा तांबे पर निर्मित श्रीयंत्र का फल सौ गुना होता हैं।
- तांबे पर निर्मित श्रीयंत्र की अपेक्षा चांदी पर निर्मित श्रीयंत्र का फल लाख गुना होता हैं।
- चांदी पर निर्मित श्रीयंत्र की अपेक्षा सुवर्ण पर निर्मित श्रीयंत्र का फल करोड़ो गुना होता हैं।
- रत्नसागर ग्रंथ में रत्नों पर निर्मित भिन्न-भिन्न श्रीयंत्र के फलों का वर्णन मिलता हैं।
- जिसमें स्फटिक पर बने श्रीयंत्र को सर्वश्रेष्ठ बताया गया हैं।

विद्वानों का मत हैं:

- भोजपत्र पर निर्मित यंत्र 6 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- तांबे में निर्मित श्रीयंत्र 12 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- चांदी में निर्मित श्रीयंत्र 20 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- और सुवर्ण में निर्मित श्रीयंत्र आजीवन प्रभावी रहता है।

कुछ विद्वानो का मत हैं

- भोजपत्र पर निर्मित यंत्र 1 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- तांबे में निर्मित श्रीयंत्र 2 वर्ष तक प्रभावी रहता है।
- चांदी में निर्मित श्रीयंत्र 12 वर्ष तक प्रभावी रहता है। और सुवर्ण में निर्मित श्रीयंत्र आजीवन प्रभावी रहता है।

विशेष नोटः हमारे अनुभवों के अनुशार यन्त्र यदि शुद्ध धातु में निर्मित हो, तेजस्वी मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित हो तो वह आजीवन प्रभावी रहता है, चाहे वह सोने, चांदी या तांबे में ही निर्मित क्यों न हो। एक शुद्ध धातु में निर्मित एवं पूर्ण विधि विधान से मंत्रसिद्ध एवं प्राण-प्रतिष्ठित किया गया यंत्र जब तक व्यक्ति के पूजन स्थान में स्थापित रहता हैं तब तक वह प्रभावशाली रहते देखा गया हैं। इसमें जरा भी संदेह नहीं हैं। केवल कुछ विशेष यंत्र ऐसे होते हैं जो साधना विशेष या कार्य उद्देश्य की समाप्ति के पश्चयात जल में विसर्जित करने होते हैं। यंत्र यदि किसी कारण से खंडित हो जाये, उस पर अंकित रेखा, अंकन, बीज मंत्र आदि धूंधले हो जाये या सरलता से दिखाई नहीं देते हो तब, अथवा किसी कारण से यंत्र अशुद्ध हो जाये हाथ से गिर जाये तब उसे जल में विसर्जित करके दूसरा स्थापित करलेना चाहिए। यंत्र के अशुद्ध, खंडित होने या हाथों से गिरजाने पर उसके शुभ प्रभाव में कमी आने लगती हैं।

श्रीविद्या के अद्भुत चमत्कारों में से एक का वर्णन "शंकर दिग्विजय" में मिलता हैं जो इस प्रकार हैं।

जब आचार्य शंकर अपने गुरु के यहां रहते थे, तब गुरुगृह के नियम अनुशार आचार्य शंकर एक दिन किसी ब्राह्मण के द्वार पर भिक्षा के लिए गए। वह ब्राह्मण बहुत निर्धन था, भिक्षा में देने के लिए उसके घर में मुट्ठी भर चावल भी नहीं थे। निर्धन ब्राह्मण की पत्नी ने आचार्य शंकर को एक आवंला देकर रोते हुए अपनी अवस्था बतलाई। ब्राह्मण पत्नी की दुःखद करुण निर्धनता की व्यथा सुनकर आचार्य शंकर का हृदय द्रवित हो गया। आचार्य शंकर ने वहीं खड़े होकर, करुण विगलित चित्त से श्रीविद्या की अधिष्ठात्री देवी माँ महालक्ष्मी की स्तुति प्रारम्भ की और आचार्य शंकर की वाणी से अनायास करुणापूर्वक कोमल कान्त वाक्यों से आकृष्ट हो कर माँ महालक्ष्मी आचार्य शंकर के सामने अपने त्रिभुवन मनोहर रुप में प्रकट हो गई और कोमल शब्दों में कहा, पुत्र "मैने तुम्हारा अभिप्राय जान लिया हैं, परन्तु इस निर्धन परिवार ने पूर्व जन्मों में ऐसा कोई भी सुकृत, पुण्य कार्य नहीं किया हैं जिससे मैं इन्हें धन दे सकूँ।"

माँ महालक्ष्मीजी के इन वचनों पर आचार्य शंकर ने बड़े ही विनीत शब्दों में माँ महालक्ष्मीजी से निवेदन किया की "पूर्व जन्म में इस ब्राह्मण ने ऐसा कोई कार्य सुकृत कार्य नहीं किया हैं जिसके फलस्वरुप उसे धन-सम्पत्ति दी जा सके इससे क्या हुआ। मेरे जैसे भिक्षुक को आंवले का दान देकर इसने तो महान् पुण्य राशि अर्जित कर लिया हैं, इस कारण यह परिवार अतुल धन सम्पत्ति का अधिकारी हो गया हैं, अतः यदि आप प्रसन्न हुई हों तो इस परिवार को दारिद्रय से मुकत कर दीजिये" आचार्य शंकर के इस निवेदन का माँ महालक्ष्मी खण्डन न कर सकीं और प्रसन्न होकर देवी ने कहा "यही होगा आचार्य, मैं उन्हें प्रचुर सोने के आंवले दूंगी।" देवी के मुख से इतना सुनने पर आचार्य शंकर नें ब्राह्मण परिवार को शीघ्र धनवान होने का आशीर्वाद देकर गुरुगृह लौट गये। दूसरे दिन प्रातःकाल ब्राह्मण परिवार ने देखा, उनके घर में सर्वत्र सोने के आंवले बिखरे पड़े हैं। इस प्रकार आचार्य शंकर नें श्रीविद्या की उपासना से ब्राह्मण परिवार को धनवान बना दिया।

अधिकतर लोगों ने श्रीयंत्र को चित्रित ही देखा होगा, जिससे यंत्र के निर्माण की वास्तविक विधि समझना कठिन हैं। चित्रित यंत्रों में हमें केवल उसकी लम्बाई और चौड़ाई ही नज़र आती हैं, ऊचाई नहीं होती। लेकिन वास्तविक रुप से यंत्र की ऊंचाई भी होती हैं जो मुख्यरुप से धातु और पत्थरों से बने यंत्रों में दिखाई दिती हैं। इस तरह के यंत्र को पत्थर पर काटकर, स्फटिक, मरगच, प्रवाल, पद्मरागमणि, इन्द्रनीलमणि, नीलकान्तमणि इत्यादि रत्नों पर देखने को मिलते हैं। इसके अलावा शालिग्रामशिला, ताम्रपत्र, रजत पत्र ओर सुवर्ण में भी यंत्र बनाये जाते हैं। श्रीयंत्र के निर्माण में भू अथवा मेरु दोनों पद्धतियों का उपयोग होता हैं।

श्रीयंत्र की विशेषता एवं उपयोगिता

पौराणिक काल से ही हिन्दू संस्कृति में श्रीविद्या की उपासना अत्याधिक प्रचलित रही हैं। यही कारण हैं की हिन्दू संस्कृति में तब से लेकर आजतक बड़े-बड़े विद्वान आचार्य श्रीविद्या के उपासक रहे हैं।

श्रीयंत्र में स्थित नौ चक्रों के भिन्न-भिन्न प्रयोग से लाभ:

(१) सर्वानन्दमय अर्थात् सब प्रकार का आनन्द देने वाला हैं।
(२) सर्व सिद्धिप्रद अर्थात् सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाला हैं।
(३) सर्वरक्षाकार अर्थात् सभी से रक्षा करने वाला हैं।
(४) सर्व रोगहर अर्थात् सभी रोगों का हरण करने वाला हैं।

(५) सर्वार्थ साधक अर्थात् सभी कार्यों की सिद्धि करने वाला हैं।
(६) सर्व सौभाग्यदायक अर्थात् सभी सौभाग्य को प्रदान करने वाला हैं।
(७) सर्व संक्षोभक्ष अर्थात् संक्षोभण करने वाला हैं।
(८) सर्वाशापरिपूरक अर्थात् सभी आशाओं को पूरण करने वाला हैं।
(९) त्रैलोक्य मोहन अर्थात् तीनोलोक का मोहन करने वाला हैं।

यंत्र निर्माण विधान

- यदि श्री यंत्र का निर्माण भोजपत्र पर करना हो, तो तुलसी, अनार या मोरपंख की कलम से रक्त चंदन से यंत्र का निर्माण करना चाहिए। पीले रंग हेतु शुद्ध केसर का प्रयोग करना चाहिए।
- अष्टगंध, सिन्दूर या कुंकुम से भी यंत्र लिखे जा सकते हैं। इसके अलावा यंत्र को सुवर्ण, रजत, तांम्र, स्फटिक आदि मूल्यवान धातु या रत्नों पर उत्कीर्ण कराकर यंत्र का निर्माण किया जा सकता हैं।
- यन्त्र के निर्माण हेतु सर्व प्रथन त्रिकोण बनाकर उसके मध्य में बिन्दु फिर क्रमशः उपर दर्शाये गये आठ चक्रों को बनाना चाहिए।
- श्रीक्रम में शिवजी का कथन हैं कि जो मनुष्य सम रेखा न लिख कर, समान मुख न बनाकर श्रीयंत्र का निर्माण करता हैं, उसका सर्वस्व मैं हर लेता हूँ।
- विद्वानों का मत हैं की जिस स्थल पर जिस देवता का स्थान निर्दिष्ट किया गया हो, उस स्थान पर देवता का पूजन नहीं करने पर साधक के मांस और रक्त द्वारा उस देवता की पारणा होती हैं।
- श्री यंत्र के निर्माण के समय किसी पशु या भावावलम्बी जीव की दृष्टि नहीं पड़नी चाहिए, इस लिए सरर्क हो कर यंत्र का निर्माण करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति पशु के आगे श्री यंत्र को लिखता हैं, तो वह मन्द-बुद्धि, साधक अंगक्षय से होने वाले पाप का भागी होता हैं।
- भूत भैरव में उल्लेख हैं कि यदि श्री यंत्र को बनाते समय पद्म में केशर न बनाये। यदि कोई व्यकि निर्माण के समय पद्म के केशर के कल्पना करता हैं, तो भैरव गण योगिनियों की सहायता से उसका नाश कर देते हैं।

- श्री यंत्र को रात्रिकाल में नहीं लिखना चाहिए। रात्रि-काल में यंत्र का निर्माण करने से देवी तत्काल साधक को अभिशाप देती हैं।
- अपराजिता, कर, वीर और जवा पुष्प में देवी निवास करती हैं। इस लिए इन पुष्प से देवी का पूजन किया जा सकता हैं।
- स्वच्छन्द भैरव में उल्लेख हैं कि स्थण्डिल के ऊपर एक हाथ के बराबर यंत्र का निर्माण करना चाहिए। रत्नादि के यंत्र बनाने हो तो इच्छानुसार एक, दो, तीन अथवा चार तोले के रत्न लेकर यन्त्र बनवाया जा सकता हैं। इससे अधिक परिमाण के रत्न द्वारा यंत्र का निर्माण करने से साधक प्रायश्चित का भागी होता हैं।
- त्रिधातु का यंत्र बनाना हो तो, सुवर्ण, तांम्र और रजन इन त्रिनों धातुओं का प्रयोग किया जाता हैं। जिसमें दस भाग सोना (26.315 %), बारह भाग तांबा (31.580%), और सोलह भाग रजत (42.105%),को एकत्र करके यंत्र का निर्माण करना चाहिए। त्रिधातु से बने यंत्र का पूजन करने से साधक सौभाग्यशाली होता हैं और शीघ्र ही अष्ट सिद्धियां प्राप्त होती हैं।
- स्फटिक, मरगच, प्रवाल, पद्मरागमणि, इन्द्रनीलमणि, नीलकान्तमणि इत्यादि रत्नों से बने श्री यंत्र का पूजन करने से धन-सम्पत्ति, स्त्री-संतान, मान-सम्मान और यश की प्राप्ति होती हैं।
- ताम्र के यंत्र का पूजन करने से क्रांति प्राप्त होती हैं।
- सुवर्ण के यंत्र का पूजन करने से शत्रु नाश होता हैं।
- रजत के यंत्र का पूजन करने से साधक का कल्याण होता हैं।
- स्फटिक के यंत्र का पूजन करने से साधक को सभी अभिष्ट कार्यों में सफलता प्राप्त होती हैं।

यंत्र के विनष्ट होने पर उसका प्रायश्चित

- यदि यंत्र दग्ध स्फुटित या चोर के द्वारा अपहृत हो जाये, तो साध को एक दिन उपवास करके देवता के मंत्र का एक लाख जप एवं जप संख्या का दशांश हवन तथा हवन का दशांश तर्पण करना चाहिए। फिर भक्तिभाव से अपने गुरुदेव की आज्ञा से ब्राह्मण भोजन कराये। कुछ जानकार एक लाख जप को एक अयुत अर्थात दश सहस्त्र कहते हैं।
- यदि यंत्र के लुप्त-चिह्न, स्फुटित या खंडित होने पर उस यंत्र को गंगा आदि पवित्र नदियों के जल में, तीर्थ या सागर में विसर्जित करदेना चाहिए। शास्त्रों में उल्लेख हैं की यंत्र को विसर्जित न करके उसे पास रखने से साधक की मृत्यु या विविध दुःख होते हैं।

श्रीचक्र पादोदक का माहात्म्यः

ब्रह्माण्ड में स्थित जितने तीर्थ स्थल हैं उन सबके स्नान से सहस्त्र कोटि गुना अधिक फल श्रीचक्र पादोदक के सेवन से मिलता हैं। (गंगा, यमुना, नर्मदा, गोदावरी, गोमती, पुष्कर, प्रयाग, हरिद्वार, वाराणसी, ऋषिकेश, सिन्धु, रेवा, सरस्वती आदि तीर्थ स्थल कहे जाते हैं।)

श्रीचक्र के दर्शन का फलः

एक प्राण-प्रतिष्ठित चैतन्ययुक्त किये गये "श्री यंत्र" के विषय में विद्वानों का कथन हैं कि, विधि-विधान से सौ यज्ञ करने से जो फल प्राप्त होता हैं वहीं फल श्रीचक्र का एक बार दर्शन करने से मिलता हैं। सोलह महादानों के करने से जो पुण्य फल प्राप्त होता हैं वहीं फल श्रीचक्र का एक बार दर्शन करने से मिलता हैं। साढ़े तीन कोटि(अर्थात साढ़े तीन करोड़) तीर्थों में स्नान करने से जो फल प्राप्त होता हैं, वहीं फल श्रीचक्र का एक बार दर्शन करने से मिलता हैं। यदि मनुष्य वास्तव में सुखी और सृमद्व होना चाहता है तो उसे श्रीयंत्र स्थापना अवश्य करनी चाहिये।

अभिमंत्रित श्रीयंत्र

आज बाजार में रत्नों के बने श्री यंत्र सरलता से प्राप्त हो जाते हैं लेकिन यह सब वे सिद्ध, प्राण-प्रतिष्ठित या चैतन्ययुक्त नहीं होते। जब श्री यंत्र को पूर्ण शास्त्रोंक्त विधि-विधान से तेजस्वी मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित या प्राण-प्रतिष्ठित किया जाता हैं तभी वह पूर्ण रुप से प्रभावशाले एवं सुख-समृद्धि देने वाला होता है। यह आवश्यक नहीं कि श्री यंत्र दुर्लभ द्रव्यों या रत्नों का बना हो। यदि श्रीयंत्र शुद्ध धातु में निर्मित एवं अखंडित हैं और यंत्र शास्त्रोंक्त विधि-विधान से अभिमंत्रित या प्राण-प्रतिष्ठित हैं तो वह श्री यंत्र तांबे पर ही क्यो न बना हो वह निश्चित पूर्ण रुप से प्रभावशाली ही रहता हैं। जब तक यंत्र मंत्रों द्वारा सिद्ध नहीं होता तब तक वह श्री प्रदाता अर्थात धन-समृद्धि प्रदान करने वाला नहीं बनता!

विभिन्न द्रव्यों एवं धातुओं से निर्मित श्री यंत्र का फल।

स्फटिक श्रीयंत्र

स्फटिक रत्न पर उत्कीर्ण किया हुआ श्री यंत्र दुर्लभ माना जाता हैं और यह सभी द्रव्यों से अतिशीघ्र फल प्रदान करने वाला रत्न है। स्फटिक श्रीयंत्र मनुष्य की सभी भौतिक एवं आध्यात्मिक इच्छाओं को पूर्ण करने में समर्थ हैं। यदि किसी साधक को सौभाग्य से स्फटिक श्री यंत्र प्राप्त हो जाए तो किसी विद्वान से उसको अभिमंत्रित करवाले। स्फटिक श्री यंत्र रंक को भी वह राजा बनाने में समर्थ हैं। स्फटिक श्री यंत्र का पूजन करने से मनुष्य को धन की कभी कमी नहीं रहती।

पारद श्रीयंत्र

शास्त्रों में पारद धातु को भगवान शिव का वीर्य कहा गया है। शुद्ध पारद से निर्मित श्री यंत्र अति दुर्लभ तथा प्रभावशाली होते है। धन प्राप्ति हेतु उत्तम माना जाता हैं।

स्वर्ण श्रीयंत्र

स्वर्ण धातु में निर्मित श्रीयंत्र संपूर्ण सुख एवं ऐश्वर्य को प्रदान करने वाला हैं। एसे श्री यंत्र को हमेंशा तिजोरी में ऐसे रखना चाहिए कि परिवार के अलावा किसी अन्य व्यक्ति का स्पर्श न हो।

रजत श्रीयंत्र

चांदी में निर्मित श्रीयंत्र मुख्यतः व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में स्थापित करने से विशेष लाभ की प्राप्ति होती हैं।

ताम्र श्रीयंत्र

तांबे में निर्मित श्रीयंत्र विशेषः घर, दुकान, ओफिस इत्यादि व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थान पर विशेष रुप से किया जाता हैं। तांबे में निर्मित श्रीयंत्र का प्रतिदिन पूजन करने से आर्थिक स्थिती में सुधार होता हैं। कार्यस्थल पर ग्राहक की द्रष्टि में आये ऐसे स्थापित करने से कारोंबार में वृद्धि होती हैं। केवल शास्त्रोंमें वर्णित पदार्थों पर ही यंत्र का निर्माण करना श्रेष्ठ हैं, लकडी, कपड़े या पत्थर मूल्यहीन द्रव्य आदि पर श्री यंत्र का निर्माण नहीं करना चहिए।

विद्या प्राप्ति हेतु सरस्वती कवच और यंत्र



आज के आधुनिक युग में शिक्षा प्राप्ति जीवन की महत्वपूर्ण आवश्यकताओं में से एक है। हिन्दू धर्म में विद्या की अधिष्ठात्री देवी सरस्वती को माना जाता हैं। इस लिए देवी सरस्वती की पूजा-अर्चना से कृपा प्राप्त करने से बुद्धि कुशाग्र एवं तीव्र होती है।

आज के सुविकसित समाज में चारों ओर बदलते परिवेश एवं आधुनिकता की दौड में नये-नये खोज एवं संशोधन के आधारो पर बच्चो के बौधिक स्तर पर अच्छे विकास हेतु विभिन्न परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धाएं होती रहती हैं, जिस में बच्चे का बुद्धिमान होना अति आवश्यक हो जाता हैं। अन्यथा बच्चा परीक्षा, प्रतियोगिता एवं प्रतिस्पर्धा में पीछड जाता हैं, जिससे आजके पढेलिखे आधुनिक बुद्धि से सुसंपन्न लोग बच्चे को मूर्ख अथवा बुद्धिहीन या अल्पबुद्धि समझते हैं। एसे बच्चो को हीन भावना से देखने लोगो को हमने देखा हैं, आपने भी कई सैकडो बार अवश्य देखा होगा?

ऐसे बच्चो की बुद्धि को कुशाग्र एवं तीव्र हो, बच्चो की बौद्धिक क्षमता और स्मरण शक्ति का विकास हो इस लिए सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक हो सकता हैं।

सरस्वती कवच को देवी सरस्वती के परंम दूर्लभ तेजस्वी मंत्रो द्वारा पूर्ण मंत्रसिद्ध और पूर्ण चैतन्ययुक्त किया जाता हैं। जिस्से जो बच्चे मंत्र जप अथवा पूजा-अर्चना नहीं कर सकते वह विशेष लाभ प्राप्त कर सके और जो बच्चे पूजा-अर्चना करते हैं, उन्हें देवी सरस्वती की कृपा शीघ्र प्राप्त हो इस लिये सरस्वती कवच अत्यंत लाभदायक होता हैं।

सरस्वती कवच और यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

यन्त्र का चयन करने में रखें सावधानियां।

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

- यंत्र एक ब्लेड की तरह होते हैं, जिस प्रकार एक नये ब्लेड के इस्तेमाल में असावधानी या चूक होने पर हमारे शरीर का कोई भी हिस्सा कट या काटा जा सकता हैं, यदि दूषित या जंग लगा ब्लेड हो तो उस्से कटने पर शरीर विषाक्त या सेप्टिक हो सकता हैं, उसी प्रकार यंत्र के चयन में असावधानी या अशुद्धि के कारण मनुष्य संकटो से ग्रस्त हो सकता हैं।
- अशुद्ध धातु में निर्मित यन्त्र या आधा-अधुरा अशुद्ध अंकन या उत्तकीर्ण किया हुवा यन्त्र जिसकी रेखाएं, बिन्दु अक्षर इत्यादि स्पस्ट दिखा नहीं देते हो एसे यन्त्र अशुद्ध कहां जाता हैं। किसी साधना या कामनापूर्ति हेतु इस प्रकार के यन्त्रों का प्रयोग सर्वदा हानिकारक होता हैं, जिसके कारण साधक को अपने उद्देश्य में असफलता, कष्ट, संकट आदि विपदा से सम्मुखिन होना पड़ सकता हैं।
- यन्त्र में भले ही किसी देवी देवता की मूर्ति या चित्र नहों लेकिन, उसमें संबंधित देवी-देवता के बीज मंत्रों अक्षरों एवं अंको का अंकन होता हैं। देवी-देवता के बीज मन्त्र एवं अंको को अंकन करने का भी विधि-विधान होता हैं।
- विद्वानों का मत हैं की प्राचिन काल से ही यन्त्रों को सोने-चांदी-तांबा आदि धातुओं पर अथवा भोजपत्र ही अंकित किया जाता हैं। क्योकि सोने-चांदी-तांबें पर निर्मित यंत्र ही पूर्ण प्रभावशाली होते हैं। कागज पर लिखे या छपे हुवे यन्त्रों का प्रभाव नहीं के बराबर होता हैं। धातु की प्लेट पर स्याही इत्यादि से अंकित किये गये यन्त्रों का प्रभाव भी नहीं के बराबर होता हैं।
- कुछ विद्वानों ने अपने अनुभवों में पाया हैं की प्लास्टिक, शीशा, कागज, कपड़े पर छपे हुवे या स्याही से बनाए हुवे यन्त्रों का प्रभाव अल्प समय अर्थात कुछ दिनों तक ही रहता हैं। उसके बाद उनका प्रभाव क्षीण होने लगता हैं!
- यन्त्र को भूमि, टाईल्स इत्यादि पर अंकित करना स्वयं के लिए गड्ढ़ा खोदने के समान कष्टकारी होता हैं।
- यदि कोई व्यक्ति तांबें में भी यन्त्र बनवाने में असमर्थ हो तो उसे स्वयं या किसी विद्वान से शुभ मुहूर्त में भोजपत्र पर आवश्यक यन्त्र को अष्टगंध आदि संबंधित द्रव्यों से शास्त्रोक्त विधि-विधान से अंकित करवाना चाहिए। यन्त्र को अंकित करवाने के पश्चयात उसे शुभ मुहूर्त में पूर्ण विधि-विधान से प्राण-प्रतिष्ठित करना अति आवश्यक हैं, अन्यथा यन्त्र जाग्रत नहीं होते हैं।
- यन्त्र का चयन करते समय यन्त्र का शुभ मुहूर्त में शुद्ध धातु में निर्मित होना, उसपर अंकित रेखा, चित्र, बीजाक्षर एवं अंकों का स्पष्ट रुप से दिखना अति आवश्यक हैं, उसी के साथ में यन्त्र को शुभ मुहूर्त में पूर्ण विधि-विधान से प्राण-प्रतिष्ठित करना भी अति आवश्यक हैं। इस लिए इन सभी बातों का ध्यान रखते हुवे यन्त्र का चयन किया जाये तो यन्त्र पूर्ण रुप से फलदायी सिद्ध होते हैं, जिस में जरा भी संदेह नहीं हैं।

कामनापूर्ति हेतु दुर्लभ साधना (भाग:1)

पं.श्री भगवानदास त्रिवेदी जी,

हरिद्रा गणपति यन्त्र साधना



साधना हेतु सामग्री:- श्री हरिद्रा गणेश यन्त्र (हरिद्रा गणपति यन्त्र), एवं श्री गणेश जी की प्रतिमा(हल्दी की मिलजाये तो अति उत्तम), हल्दी, घी का दीप, धूपबत्ती, अक्षत

माला: मूंगे या हल्दी की

समय: प्रातःकाल

दिशा: पूर्व

आसन: लाल

वस्त्र: पीला

दिन: कृष्ण पक्ष की चतुर्थी से शुक्ल पक्ष की चतुर्थी तक

जप संख्या: चार लाख

प्रदाद : गुड़

मंत्र:–

ॐ हुं गं ग्लौं हरिद्रागणपत्ये वरद सर्वजन हृदय स्तंभय स्तंभय स्वाहा ||

Om Hum Gan Gloun Haridraganapatye Varad Sarvajan Hruday Stambhay Stambhay Swaha

विधि: प्रातःकाल स्नानइत्यादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठ जाये। श्री हरिद्रा गणेश यन्त्र एवं गणेशजी के विग्रह को एक लकड़ी की चौकी पर पीला वस्त्र बिछा कर स्थापित करदे। गणेशजी को हल्दी, लाल या पीले फूल गणेशजी को अर्पित करें। प्रसाद में गुड़ चढ़ाए। धूप-दीप इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन काल में धूप-दीप चालु रखें। मन्त्र जप प्रारंभ करने से पूर्व जप का विनियोग अवश्य करलें। जप की समाप्ति पर हल्दी मिश्रित अक्षत से दशांश हवन करके ब्राह्मण भोजन कराये।

मन्त्र जप से पूर्व गणेशजी का इस मंत्र से ध्यान करें।

ध्यान मन्त्र :

पाशांक शौमोदकमेक दन्तं करैर्दधानं कनकासनस्थम् हारिद्राखन्ड प्रतिमं त्रिनेत्रं पीतांशुकंरात्रि गणेश मीडे ॥

Paashank Shoumodakamek Dantam Karairdadhanam Kanakasanastham Haridrakhand Pratimam Trinetram Peetanshukanratri Ganesha Meede.

शुक्ल पक्ष की चतुर्थी को हल्दी का लेप शरीर पर लगाकर स्नान करें। गणेशजी का पूजन करे और ८००० मन्त्र से तर्पण करके, घी से १०१ बार हवन करे। कुंवारी कन्या को भोजन कराये और यथाशक्ति दक्षिणा देकर प्रसन्न करें। यन्त्र एवं प्रतिमा को अपने पूजा स्थान में स्थापित करदे।

प्रमुख प्रयोजन: १. शत्रु मुख बंध करने हेतु। २. जल, अग्नि, चोर एवं हिंसक जीवों से रक्षा हेतु। ३. वंध्या स्त्री को संतान प्राप्ति हेतु।

विजय गणपति यन्त्र साधना

साधना हेतु सामग्री:- श्री गणेश यन्त्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित), एवं स्फटिक की गणेश की प्रतिमा, लाल चंदन, केसर घी का दीप, धूपबत्ती, अक्षत, जल पात्र, कनेर के फूल

माला: मूंगे या रक्त चंदन की

समय: दिन में किसी भी समय (प्रातःकाल उत्तम होता हैं)

दिशा: पूर्व

आसन: लाल

वस्त्र: लाल

दिन: पांच दिन में (किसी भी बुधवार से साधना प्रारंभ करें)

जप संख्या: सवा लाख

प्रदाद : गुड़



मंत्र:–

ॐ वर वरदाय विजय गणपतये नमः।

Om Var Varaday Vijay Ganapatye Namah |

विधि:–

प्रातःकाल स्नानइत्यादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठ जाये।

श्री गणेश यन्त्र एवं गणेशजी के विग्रह को एक लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछा कर स्थापित करदे। गणेशजी को केसर व रक्त चंदन का तिलक करे, प्रसाद में गुड़ चढ़ाए। धूप-दीप इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन काल में धूप-दीप चालु रखें। २१ कनेर के फूल(कनेर अप्राप्त हो तो लाल गुलाब या कोइ भी लाल फूल) गणेशजी को अर्पित करें। गणेश जी को हर पुष्प अर्पित करते समय जिस कार्य में विजय प्राप्त करनी हो उस कार्य की पूर्ति हेतु गणेश जी से श्रद्धा भाव से प्राथना करें।

फिर मन्त्र जप प्रारंभ करें। पांच दिन में सवा लाख जप पूर्ण हो जाने पर, छठ्ठे दिन पांच कुवारिकाओं को भोजन कराये और यथाशक्ति दक्षिणा देकर प्रसन्न करें। एसा करने से साधक की कामनाएं पूर्ण होती हैं। यन्त्र एवं मूर्ति को अपने पूजा स्थान में स्थापित करदें, जिस कार्य उद्देश्य के लिये प्रयोग किया हो उस कार्य हेतु जब आवश्यक हो तो यन्त्र को संबंधित कार्य के समय साथ लेकर जाये। कार्य उद्देश्य में विजयश्री की प्राप्ति के पश्चयात यन्त्र को बहते पानी में विसर्जित करदे। गणेश प्रतिमा का नियमित पूजन कर सकते हैं।

प्रमुख प्रयोजन:

१. कोर्ट-केश आदि विवादों में सफलता हेतु।

२. शत्रु का प्रभाव बढ़ गया हो तो उस पर विजय प्राप्त करने हेतु।

३. यदि किसी कार्य उद्देश्य में सफलता प्राप्त करने हेतु ।

कल्याणकारी गणपति यन्त्र साधना

साधना हेतु सामग्री:- श्री गणेश सिद्ध यन्त्र एवं स्फटिक की गणेश की प्रतिमा, लाल चंदन, केसर घी का दीप, धूपबत्ती, अक्षत, कनेर के फूल

माला: मूंगे या रक्त चंदन की

समय: दिन में किसी भी समय (प्रातःकाल उत्तम होता हैं)

दिशा: पूर्व

आसन: लाल

वस्त्र: लाल

दिन: पांच दिन, ग्यारादिन या इक्किस दिन में (किसी भी बुधवार से साधना प्रारंभ करें)



जप संख्या: सवा लाख

प्रदाद : गुड़

मंत्र:–

गं गणपतये नमः।

Gan Ganapatye Namah |

विधि:–

किसी भी बुधवार को प्रातःकाल स्नानइत्यादि से निवृत्त होकर स्वच्छ वस्त्र धारण कर लाल आसन पर बैठ जाये।

श्री गणेश सिद्ध यन्त्र एवं गणेशजी के विग्रह को एक लकड़ी की चौकी पर लाल वस्त्र बिछा कर स्थापित करदे। गणेशजी को केसर व रक्त चंदन का तिलक करे, प्रसाद में गुड चढ़ाए। धूप-दीप इत्यादि से विधिवत पूजन करें, साधन काल में धूप-दीप चालु रखें। संभव हो तो गणेशजी को पुष्प अर्पित करें।

जितने दिनों में साधना संपन्न करनी हो उसी के अनुरुप संकल्प करके मन्त्र जप प्रारंभ करें। नियमित उसी समय में मन्त्र जप करे।

साधना सम्पन्न होने पर किसी ब्राह्मण या कुमारिका कों भोजन कराये और यथाशक्ति दक्षिणा वस्त्र आदि देकर प्रसन्न करें।

यन्त्र और गणेश प्रतिमा को अपने पूजा स्थान में स्थापित करदें, और नियमित उक्त मन्त्र की एक माला जप करें। उक्त साधना से साधक का भविष्य में सिद्ध होने वाले कार्य बिना किसी परेशानी से निर्विध्न संपन्न हो जाये गा।

प्रमुख प्रयोजन:

१. सभी कार्य निर्विघ्न संपन्न करने हेतु।

२. महत्वपूर्ण कार्यों में आने वाली बाधा एवं विघ्नों के नाश हेतु।

३. परिवार की सुख-समृद्धि हेतु।

विभिन्न यंत्र के लाभ

चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऎन.जोशी

श्रीदुर्गा यंत्र

श्रीदुर्गा यंत्र शक्ति एवं भक्ति के साथ समस्त सांसारिक सुखों को प्रदान करने वाला सर्वाधिक लोकप्रिय यंत्र हैं। अशुभ शक्तियों के दुष्प्रभाव से बचने के लिए मां दुर्गा की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता है। श्रीदुर्गा यंत्र का पूजन व्यक्ति को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चार की प्राप्ति में भी सहायक सिद्ध होता हैं।

शास्त्रोक्त वर्णन हैं की देवी दुर्गा के श्रीदुर्गा यंत्र के पूजन और दर्शन करने मात्र से देवी प्रसन्न होकर अपने भक्तों की अभिष्ट इच्छाएं पूर्ण होती हैं। माँ दुर्गा के भक्तो की माँ स्वयं रक्षा कर उन पर अपनी कृपा द्रष्टी वर्षाती हैं और भक्तों को उन्नती के शिखर पर जाने का मार्ग प्रसस्त करती हैं। माँ दुर्गा के भक्तो को देवी की शीघ्र कृपा प्राप्ति हेतु श्रीदुर्गा यंत्र को अपने घर, दुकान, ओफिस इत्यादि में पूजा स्थन में स्थापित करना चाहिये।

विद्वानो का मत हैं की श्रीदुर्गा यंत्र के पूजन से मनुष्य को वाक् सिद्धि, संतान प्राप्ति, शत्रु पर विजय, ऋण-रोग आदि पीड़ा से मुक्ति प्राप्त होती हैं और व्यक्ति को जीवन में संपूर्ण सुखों की प्राप्ति हो इस के लिये यह श्रीदुर्गा यंत्र अचूक एवं सिद्धिदायक माना गया हैं। किसी भी प्रकार के संकट या बाधा की आशंका होने पर इस यंत्र का नियमित पूजन करने से व्यक्ति को सभी प्रकार की बाधा से मुक्ति मिलती हैं और धन-धान्य की प्राप्ति होती हैं।

श्रीदुर्गा यंत्र की पूजा एवं स्थापना के लिए आश्विन एवं चैत्र नवरात्री विशेष लाभ प्रद हैं। क्योकि नवरात्र को आद्य् शक्ति की उपासना का महापर्व माना गया हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य: महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र) | आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र) | नव दुर्गा यंत्र | चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त) भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)

यदि कोई व्यक्ति दु:ख, दरिद्रता और भय से अत्याधिक परेशान हो, और चाहकर भी या परीश्रम के उपरांत भी उसी वांच्छित सफलता प्राप्त नहीं हो रही हों तो उसे नवार्ण यंत्र और मंत्र का प्रयोग करना चाहिए। किसी भी प्रकार के जादू-टोना, रोग, भय, भूत, पिशाच्च, डाकिनी, शाकिनी आदि से मुक्ति कि प्राप्ति के लिये मां

दुर्गा के नवार्ण यंत्र का विधि-विधान से पूजन-अर्चन सर्वदा फलदायक होता है।

दुर्गा दुखों का नाश करने वाली हैं। इसलिए नवरात्रि के दिनो में जब उनकी पूजा पूर्ण श्रद्धा और विश्वास से कि जाती हैं, तो मां दुर्गा कि प्रमुख नौ शक्तियाँ जाग्रत हो जाती हैं, जिससे नवों ग्रहों को नियंत्रित करती हैं, जिससे नौग्रहों से प्राप्त होने वाले अनिष्ट प्रभाव से रक्षा होकर ग्रह जनीत पीडाएं भी शांत हो जाती हैं।

नवार्ण मंत्र: *ऐं ह्रीं क्लीं चामुंडायै विच्चे*

नव अक्षरों वाले इस अद्भुत नवार्ण मंत्र के हर अक्षर में देवी दुर्गा कि एक-एक शक्ति समायी हुई हैं, जिस का संबंध एक-एक ग्रहों से हैं।

यदि कोई मनुष्य अत्याधिक कष्ट या संकटों से ग्रस्त हो तो उसे प्रतिदिन स्नान इत्यादिसे शुद्ध होकर नवार्ण यंत्र के सम्मुख नवार्ण मंत्र का जाप 108 दाने कि माला से कम से कम तीन माला जाप अवश्य करना चाहिए।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य: नवार्ण बीसा यंत्र भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

शिव यंत्र

हिंदू संस्कृति में शिव को मनुष्य के कल्याण का प्रतीक माना जाता हैं। मान्यता हैं की शिव शब्द के उच्चारण या दर्शन मात्र से ही मनुष्य को परम आनंद की प्राप्ति होती हैं।

- जिस प्रकार से भगवान शिव भारतीय संस्कृति को दर्शन ज्ञान के द्वारा संजीवनी प्रदान करने वाले देव हैं, शिव यंत्र को भी उसी प्रकार से पूजन एवं दर्शन मात्र से परम कल्याण कारी माना जाता हैं।
- भगवान शिव का पूजन अनादि काल से हिन्दू संस्कृति में शिवलिंग में साकार मूर्ति के रुप एवं यंत्र का पूजन करने का विधान धर्म-शास्त्रों में वर्णित हैं।
- भगवान शिव एक मात्र एसे देव हैं जिसे भोले भंडारी कहा जाता हैं, क्योकि भगवान शिव थोडी सी पूजा-अर्चना से ही अपने भक्तों पर प्रसन्न हो जाते हैं। मानव जाति की उत्पत्ति भी भगवान शिव से मानी जाती हैं।
- अतः भगवान शिव की कृपा प्राप्त करना प्रत्येक शिव भक्त के लिए परम आवश्यक हैं। शिवजी की कृपा प्राप्ति हेतु शिव यंत्र का पूजन एवं दर्शन अत्यंत सरल माध्यम हैं।
- भगवान शिव का सतो गुण, रजो गुण, तमो गुण तीनों पर एक समान अधिकार हैं। सभी सोमवार शिव को प्रिय हैं, इस लिए शिव यंत्र को स्थापना एवं पूजा-अर्चना के लिए सोमवार का विशेष महत्व हैं, इस दिन व्रत रखने से या शिव यंत्र का पूजन करने से शिवजी की विशेष कृपा प्राप्त होती हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य :महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र । शिव पंचाक्षरी यंत्र । शिव यंत्र । अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र । श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

महामृत्युन्जय यंत्र

महामृत्युंजय यंत्र का विधि-विधान से पूजन करने मनुष्य के सकल रोग, शोक, भय इत्यादि का नाश होकर मनुष्य को स्वास्थ्य एवं आरोग्यता की प्राप्ति होती हैं।

- कुछ विद्वानों का अनुभव रहा हैं की जो मनुष्य नियमित महामृत्युंजय यंत्र का पूजन करता हैं, उस व्यक्ति को अकाल मृत्यु का भय नहीं रहता हैं।
- महामृत्युंजय मंत्र का जप करते हुवे महामृत्युंजय यंत्र पर जल की धार गिराकर उस जल को रोग निवृत्ति हेतु शरीर के रोग वाले हिस्से पर छिडकने या सेवन करने से शीघ्र स्वास्थ्य लाभ होता हैं। विशेष परिस्थितीयों में मंत्र सिद्ध महामृत्युंजय यंत्र पर

अभिमंत्रित किये गये जल का घर में छिड़काव करने से संपूर्ण परिवार के सदस्यों को स्वास्थ्य लाभ होता हैं।

- ❖ यदि किसी भी प्रकार के अरिष्ट की आशंका हो, तो उसके निवारण एवं शान्ति के लिये शास्त्रों में सम्पूर्ण विधि-विधान से महामृत्युंजय मंत्र के जप करने का उल्लेख किया गया हैं।
- ❖ जिस्से व्यक्ति मृत्यु पर विजय प्राप्ति का वरदान देने वाले देवो के देव महादेव प्रसन्न होकर अपने भक्त के समस्त रोगो का हरण कर व्यक्ति को रोगमुक्त कर उसे दीर्घायु प्रदान करते हैं।
- ❖ यदि किसी कारण वश व्यक्ति महामृत्युंजय के जप करने में असमर्थ हो तो उसे महामृत्युंजय यंत्र का पूजन अवश्य करना चाहिए।
- ❖ विद्वानों का अनुभव रहा हैं की महामृत्युंजय यंत्र, महामृत्युंजय मंत्र के समान ही फलदायक हैं।
- ❖ यदि यंत्र एवं मंत्र दोनों का प्रयोग एक साथ किया जाय तो मनुष्य को चमत्कारी परिणाम प्राप्त हो सकते हैं इसमें जरा भी संदेह नही हैं।
- ❖ शास्त्रों में मृत्यु भयको विपत्ति या संकट माना गया हैं, एवं शास्रो के अनुशार विपत्ति या मृत्य के निवारण के देवता शिव हैं।
- ❖ इस लिए महामृत्युंजय यंत्र के पूजन से व्यक्ति को विपत्ति या अकाल मृत्य के भय से मुक्ति मिलती हैं।

महामृत्युंजय यंत्र का पूजन या प्रयोग कब करना चाहिए...

महामृत्युंजय यंत्र का पूजन स्नान इत्यादि से निवृत होकर प्रतिदिन भी कर सकते हैं। महामृत्युंजय यंत्र के पूजन से मनुष्य के वर्तमान समय के कष्ट तो दूर होते ही हैं साथ में भविष्य में आने वाले कष्टोंका भी स्वतः ही निवारण हो जाता हैं। महामृत्युंजय यंत्र का नियमित पूजन करने से बहुतसी बाधाएँ दूर होती ऐसा हमने हमारे अनुभवो से जाना हैं। परंतु यदि विशेष स्थितियों में महामृत्युंजय यंत्र की विशेष मंत्रों से पूजा या साधना करने की आवश्यक्ता हो तो उसे किया जा सकता हैं।

- ❖ यदि घरका कोइ सदस्य रोग से पीड़ित हों। या उसकी सेहत बार बार खराब हो रही हों, तो स्वास्थ्य लाभ के लिए महामृत्युंजय से श्रेष्ठ अन्य कोई उपाय नहीं हैं।
- ❖ भयंकर महामारी से लोग मर रहे हों, तो यंत्र प्रयोग और मंत्र का जप अपने परिवार की सुरक्षा हेतु करना चाहिए।
- ❖ आकस्मिक दुर्घटना की आशंका होने पर महामृत्युंजय यंत्र का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।
- ❖ राजभय अर्थान्त सरकार से संबंधित कोइ पीडा या कष्ट हों, तो महामृत्युंजय यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं।
- ❖ साधक का मन धार्मिक कार्यों नहीं लग रहा हों, तब महामृत्युंजय यंत्र लाभकारी सिद्ध होता हैं।
- ❖ शत्रु से संबंधित परेशानि एवं क्लेश हों रहे हो तो महामृत्युंजय यंत्र का पूजन अवश्य किया जा सकता हैं।
- ❖ यदि ज्योतिष के अनुशार मारक ग्रहो द्वारा प्रतिकूल (अशुभ) फल प्राप्त हो रहें हों तो महामृत्युंजय यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- ❖ यदि जन्म, मास, गोचर और दशा, अंतर्दशा, स्थूलदशा आदि में ग्रहपीड़ा होने की आशंका हों, तब महामृत्युंजय यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- ❖ कुंडाली मेलापक में यदि नाड़ीदोष, षडाष्टक आदि दोष हों, तो महामृत्युंजय यंत्र का पूजन सर्वश्रेष्ठ उपाय हैं।
- ❖ एक से अधिक अशुभ ग्रह रोग एवं शत्रु स्थान(षष्टम भाव) में हों, तब महामृत्युंजय यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- ❖ दीर्घायु की कामना के लिये हर परिवार में महामृत्युंजय यंत्र की स्थापना अत्यंत लाभप्रद होती हैं। महामृत्युंजय यंत्र के पूजन व उपासना के तरीके आवश्यकता के अनुरूप हो सकते हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य :महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र । महामृत्युंजय कवच यंत्र । महामृत्युंजय पूजन यंत्र भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

कृष्ण यंत्र

भगवान विष्णु के अवतार श्रीकृष्ण का आशीर्वाद और कृपा प्राप्त करने के लिए कृष्ण यंत्र का पूज सर्वश्रेष्ठ उपायों में से एक हैं। यह भगवान कृष्ण का यंत्र हैं।

- कृष्ण यंत्र का नियमित पूजन करने से व्यक्ति को जीवन में सभी बाधाओं एवं कष्टों से मुक्ति मिलती हैं एवं धन-वैभव, भौतिक सुख-साधनों की प्राप्ति होती हैं।
- कृष्ण यंत्र के पूजन एवं साधना से व्यक्ति को जीवन में सबकुछ प्राप्त हो जाता हैं, उसे धीरे-धीरे सभी सिद्धियां प्राप्त होने लगती हैं। व्यक्ति का अत्मविश्वास बढ़ने लगता हैं उसके व्यक्तित्व में निखार आने लगता है। व्यक्ति की बोलने की कला में निखार आता हैं, उसकी वाणी में मधुरता एवं दूसरों को आकर्षित करने वाली सम्मोहन शक्तियों का विकास होने लगता हैं।
- कृष्ण यंत्र के नियमित पूजन से व्यक्ति सभी कार्यों में सफलता प्राप्त करता है। श्री कृष्ण यंत्र विजय प्राप्ति हेतु भी उत्तम सिद्ध हो सकता हैं।
- जीवन की विपरीत परिस्थितियों में उचित मार्ग का चयन करने हेतु श्री कृष्ण यंत्र अत्यंत लाभप्रद है। नकारात्मक उर्जा एवं विचारों को दूर करने और सकारात्मक ऊर्जा एवं विचारों की वृद्धि कृष्ण यंत्र लाभप्रद हैं।
- श्री कृष्ण यंत्र की उपासना से व्यक्ति कि समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं। श्री कृष्ण की कृपा प्राप्ति से व्यक्ति के जीवन में किसी भी प्रकार के संकट नहीं आते।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : संतान गोपाल यंत्र । श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र । कृष्ण बीसा यंत्र भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

धनदा यंत्र

- व्यवसायीक स्थान पर धनदा यंत्र को शुभ मुहूर्त में स्थापित करने से व्यक्ति को किसी भी प्रकार से आर्थिक संकट, कष्ट नहीं रहता।
- यदि पहले से संकट चली आरही हैं तो उससे शीघ्र मुक्ति मिलती हैं।
- विद्वानों का अनुभव हैं की धनदा यंत्र को व्यवसायीक स्थान की चौखट पर स्थापित करने से ग्राहक खींचे चले आते हैं।
- धनदा यंत्र को तिजोरी गल्ला इत्यादि धन रखने के स्थान पर रखने से धन की कभी कमी नहीं रहती।
- यदि किसी व्यक्ति को दरिद्रता पीछा नहीं छोड़ रही हो, निरंतर आर्थिक स्थिती कमजोर बनी रहती हो, तो धनदा यंत्र को एक लाल कपड़े में श्रीफल के साथ में

बांधकर बहते पानी में बहा दिया जाये तो उसकी दरिद्रता या संकट भी उसी के साथ में चले जाते हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : व्यापार वृद्धि कारक यंत्र । व्यापार वृद्धि यंत्र । व्यापार वर्धक यंत्र । व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

कल्पवृक्ष यंत्र

कल्पवृक्ष यंत्र के विषय में विद्वानों का कथन हैं, यदि यंत्र शुद्ध धातु में निर्मित हों, विद्वान ब्राह्मणों द्वारा पूर्ण विधि-विधान में शुभ मुहूर्त में प्राण-प्रतिष्ठित किया गया हो तो यह असंभव हैं कि कल्पवृक्ष यंत्र के प्रभाव से किसी व्यक्ति की कोई मनोकामनाएं अपूर्ण रह जाये।

- ❖ पौराणिक मान्यताओं के अनुशार इस धरा पर एक कल्पवृक्ष नाम एसा वृक्ष हैं, जिससे जो भी मांगा जाये, या मनोकामना की जाये तो वह अवश्य पूर्ण होती हैं।
- ❖ कल्पवृक्ष के इसी गुणों को संकलित कर कल्पवृक्ष यंत्र के रुप में निर्मित किया गया हैं। जो मनुष्य की समस्त मनोकामनाओं को शीघ्र पूर्ण करने में समर्थ हैं।
- ❖ कल्पवृक्ष यंत्र का विस्तृत वर्णन जैन धर्म-गंथों में किया गया हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : भाग्य वर्धक यंत्र । सर्व कार्य बीसा यंत्र । कार्य सिद्धि यंत्र । सुख समृद्धि यंत्र । सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र । सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र । ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र । सर्व सिद्धि यंत्र । सुख शांति दायक यंत्र भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

श्रीमहाकाली यंत्र

विभिन्न तंत्र प्रयोग एवं शमशान साधना में काली उपासना का अत्याधिक महत्व हैं। काली शब्द का श्रवण या स्मरण होते ही देवी महाकाली का शत्रु संहारक स्वरुप का स्मरण हो जाता हैं। यही कारण हैं की माँ महाकाली के यंत्र का प्रयोग मुख्य रुप से शत्रु नाश, मोहन, मारण, उच्चाटन इत्यादि कार्यों में किया जाता है।

- ❖ जब शत्रुओं का प्रकोप अधिक हो गया हों, और अन्य सभी उपाय, यंत्र मंत्र टोटके आदि असफ़ल हो रहे हो, तब श्रीमहाकाली यन्त्र का प्रयोग अवश्य करना चाहिए। क्योकि शत्रु संहार या मुक्ति हेतु माँ महाकाली की विधि-वत उपासना अमोघ है।
- ❖ श्रीमहाकाली यन्त्र के दैनिक पूजन एवं दर्शन से साधक के सभी अरिष्ट, विध्न, बाधाओं का स्वत :ही नाश होने लगता हैं।
- ❖ बड़े से बड़े शत्रु का प्रकोप भी शांत होने लगता हैं। देवी महाकाली के उपासकों के लिये श्रीमहाकाली यन्त्र

विशेष फ़लदायी सिद्ध होता है।

- किसी भी माह की अष्टमी इस श्रीमहाकाली यन्त्र की स्थापन और साधना उत्तम मानी जाती है।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : श्मशान काली पूजन यंत्र । दक्षिण काली पूजन यंत्र । संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र भी उपलब्ध हैं। नोटः हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

श्री गणेश यंत्र

गणेश यंत्र सर्व प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि प्रदाता एवं सभी प्रकार की उपलब्धियों देने में समर्थ है, क्योकी श्री गणेश यंत्र के पूजन का फल भी भगवान गणपति के पूजन के समान माना जाता हैं। हर मनुष्य को को जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति एवं नियमित जीवन में प्राप्त होने वाले विभिन्न कष्ट, बाधा-विघ्नों को नास के लिए श्री गणेश यंत्र को अपने पूजा स्थान में अवश्य स्थापित करना चाहिए। श्रीगणपत्यथर्वशीर्ष में वर्णित हैं ॐकार का ही व्यक्त स्वरूप श्री गणेश हैं। इसी लिए सभी प्रकार के शुभ मांगलिक कार्यों और देवता-प्रतिष्ठापनाओं में भगवान गणपति का प्रथम पूजन किया जाता हैं। जिस प्रकार से प्रत्येक मंत्र कि शक्ति को बढाने के लिये मंत्र के आगें ॐ (ओम्) आवश्य लगा होता हैं। उसी प्रकार प्रत्येक शुभ मांगलिक कार्यों के लिये भगवान् गणपति की पूजा एवं स्मरण अनिवार्य माना गया हैं। इस पौराणिक मत को सभी शास्त्र एवं वैदिक धर्म, सम्प्रदायों ने गणेश जी के पूजन हेतु इस प्राचीन परम्परा को एक मत से स्वीकार किया हैं।

- श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति को बुद्धि, विद्या, विवेक का विकास होता हैं और रोग, व्याधि एवं समस्त विध्न-बाधाओं का स्वतः नाश होता है। श्री गणेशजी की कृपा प्राप्त होने से व्यक्ति के मुश्किल से मुश्किल कार्य भी आसान हो जाते हैं।
- जिन लोगो को व्यवसाय-नौकरी में विपरीत परिणाम प्राप्त हो रहे हों, पारिवारिक तनाव, आर्थिक तंगी, रोगों से पीड़ा हो रही हो एवं व्यक्ति को अथक मेहनत करने के उपरांत भी नाकामयाबी, दुःख, निराशा प्राप्त हो रही हो, तो एसे व्यक्तियो की समस्या के निवारण हेतु चतुर्थी के दिन या बुधवार के दिन श्री गणेशजी की विशेष पूजा-अर्चना करने का विधान शास्त्रों में बताया हैं।
- जिसके फल से व्यक्ति की किस्मत बदल जाती हैं और उसे जीवन में सुख, समृद्धि एवं ऐश्वर्य की प्राप्ति होती हैं। जिस प्रकार श्री गणेश जी का पूजन अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु किया जाता हैं, उसी प्रकार श्री गणेश यंत्र का पूजन भी अलग-अलग उद्देश्य एवं कामनापूर्ति हेतु अलग-अलग किया जाता सकता हैं।
- श्री गणेश यंत्र के नियमित पूजन से मनुष्य को जीवन में सभी प्रकार की ऋद्धि-सिद्धि व धन-सम्पत्ति की प्राप्ति हेतु श्री गणेश यंत्र अत्यंत लाभदायक हैं। श्री गणेश यंत्र के पूजन से व्यक्ति की सामाजिक पद-प्रतिष्ठा और कीर्ति चारों और फैलने लगती हैं। विद्वानों का अनुभव हैं की किसी भी शुभ कार्य को प्रारंप करने से पूर्व या शुभकार्य हेतु घर से बाहर जाने से पूर्व गणपति यंत्र का पूजन एवं दर्शन करना शुभ फलदायक रहता हैं। जीवन से समस्त विघ्न दूर होकर धन, आध्यात्मिक चेतना के विकास एवं आत्मबल की प्राप्ति के लिए मनुष्य को गणेश यंत्र का पूजन करना चाहिए।
- गणपति यंत्र को किसी भी माह की गणेश चतुर्थी या बुधवार को प्रातः काल अपने घर, ओफिस, व्यवसायीक स्थल पर पूजा स्थल पर स्थापित करना शुभ रहता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : लक्ष्मी गणेश यंत्र | गणेश यंत्र | गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित) | गणेश सिद्ध यंत्र | एकाक्षर गणपति यंत्र | हरिद्रा

गणेश यंत्र भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

श्री महालक्ष्मी यंत्र

- धन कि देवी लक्ष्मी हैं जो मनुष्य को धन, समृद्धि एवं ऐश्वर्य प्रदान करती हैं। अर्थ(धन) के बिना मनुष्य जीवन दुःख, दरिद्रता, रोग, अभावों से पीडित होता हैं, और अर्थ(धन) से युक्त मनुष्य जीवन में समस्त सुख-सुविधाएं भोगता हैं।
- श्री महालक्ष्मी यंत्र के पूजन से मनुष्य की जन्मों जन्म की दरिद्रता का नाश होकर, धन प्राप्ति के प्रबल योग बनने लगते हैं, उसे धन-धान्य और लक्ष्मी की वृद्धि होती हैं।
- श्री महालक्ष्मी यंत्र के नियमित पूजन एवं दर्शन से धन की प्राप्ति होती है और यंत्र जी नियमित उपासना से देवी लक्ष्मी का स्थाई निवास होता है।
- श्री महालक्ष्मी यंत्र मनुष्य कि सभी भौतिक कामनाओं को पूर्ण कर धन ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ हैं। अक्षय तृतीया, धनतेरस, दीवावली, गुरु पुष्यामृत योग रविपुष्य इत्यादि शुभ मुहूर्त में यंत्र की स्थापना एवं पूजन का विशेष महत्व हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र) । श्री यंत्र (मंत्र रहित) । श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित) । श्री यंत्र (बीसा यंत्र) । श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र । श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय) । लक्ष्मी बीसा यंत्र । श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र) । अंकात्मक बीसा यंत्र । महालक्ष्मयै बीज यंत्र । महालक्ष्मी बीसा यंत्र । लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र । लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र । लक्ष्मी गणेश यंत्र । लक्ष्मी कुबेर धनाकर्षण यंत्र। ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र । कनक धारा यंत्र । वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)। भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र

- श्रीयंत्र को समस्त प्रकार के श्रीयंत्रों में सर्वश्रेष्ठ माना गया है और कुबेर यंत्र को देवताओं में धन के देवता कुबेर जी का सबसे प्रभावशाली यंत्र माना जाता हैं इस यंत्र के पूजन से अक्षय धन कोष की प्राप्ति होती हैं और मनुष्य के लिए नवीन आय के स्रोत बनते हैं। प्रतिदिन लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र का पूजन एवं दर्शन करने से व्यक्ति को जीवन में धन और ऐश्वर्य की कभी भी कमी नहीं होती है।
- विद्वानों ने अपने अनुभवों में पाया हैं की जो मनुष्य अपने गृहस्थ जीवन में धन, वैभव, ऐश्वर्य, सुख-समृद्धि, व्यापार में सफलता, विदेश लाभ, राजनीति में सफलता, नौकरी में पदौन्न्ति आदि की कामना रखता हैं तो उसके लिए श्री लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र सर्वश्रेष यंत्र हैं। मनुष्य को लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र के पूजन से जीवन के सभी क्षेत्र में सुख-समृद्धि एवं सौभाग्य की प्राप्त होने लगती है।
- यदि किसी व्यक्ति को व्यापार में यदि व्यापार में पूर्ण परिश्रम एवं लगने से कार्य करने पर भी अधिक लाभ की प्राप्ति नहीं हो रही हो, व्यापार मंदा चल रहा हो या बार-बार लाभ के स्थान पर हानि हो रही हो तो उसे लक्ष्मीकुबेर धन आकर्षण यंत्र को अवश्य अपने व्यवसायीक स्थान पर स्थापित करना चाहिए। जिससे व्यापार में बार-बार होने वाले घाटे या नुकसान से शीघ्र ही लाभ प्राप्त होने के योग बनने लगते हैं।

गणेश लक्ष्मी यंत्र

- प्राण-प्रतिष्ठित गणेश लक्ष्मी यंत्र को अपने घर-दुकान-ओफिस-फैक्टरी में पूजन स्थान, गल्ला या अलमारी में स्थापित करने व्यापार में विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। यंत्र के प्रभाव से भाग्य में उन्नति, मान-प्रतिष्ठा

एवं व्यापर में वृद्धि होती हैं एवं आर्थिक स्थिमें सुधार होता हैं।

- ❖ गणेश लक्ष्मी यंत्र को स्थापित करने से भगवान गणेश और देवी लक्ष्मी का संयुक्त आशीर्वाद प्राप्त होता हैं। श्री गणेश लक्ष्मी यंत्र के नियमित पूजन एवं दर्शन से व्यक्ति के सकल विध्नों एवं दुःख दरिद्रताका नाश होता हैं।
- ❖ जिस प्रकार भगवान गणेश के नाम स्मरण और दर्शन मात्र से व्यक्ति के सकल विघ्नों, संकट, आदि बाधाओं का स्वतः ही नाश होता हैं, उसी प्रकार देवी लक्ष्मी के स्मरण और दर्शन मात्र से व्यक्ति का दुर्भाग्य सौभाग्य में बदल जाता हैं उसके समस्त दुखः दरिद्रता का स्वतः ही नाश होता हैं।
- ❖ गणेश लक्ष्मी यंत्र के पूजन से परिवार में सुख-शांति एवं समृद्धि का आगमन होने लगता हैं यहि कारण हैं गणेश लक्ष्मी यंत्र की महिमा अपरंपार हैं।

कनकधारा यंत्र

- ❖ आज के भौतिक युग में हर व्यक्ति अतिशीघ्र समृद्ध बनना चाहता हैं। कनकधारा यंत्र कि पूजा अर्चना करने से व्यक्ति के जन्मों जन्म के ऋण और दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं। यंत्र के प्रभाव से व्यापार में उन्नति होती हैं, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति होती हैं।
- ❖ कनकधारा यंत्र अत्यंत दुर्लभ यंत्रो में से एक यंत्र हैं जिसे मां लक्ष्मी कि प्राप्ति हेतु अचूक प्रभावा शाली माना गया हैं। कनकधारा यंत्र को विद्वानो ने स्वयंसिद्ध तथा सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ माना हैं।
- ❖ आज के युग में हर व्यक्ति अतिशीघ्र समृद्ध बनना चाहता हैं। धन प्राप्ति हेतु प्राण-प्रतिष्ठित कनकधारा यंत्र के सामने बैठकर कनकधारा स्तोत्र का पाठ करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।
- ❖ इस कनकधारा यंत्र कि पूजा अर्चना करने से ऋण और दरिद्रता से शीघ्र मुक्ति मिलती हैं। व्यापार में उन्नति होती हैं, बेरोजगार को रोजगार प्राप्ति होती हैं।
- ❖ जैसे श्री आदि शंकराचार्य द्वारा कनकधारा स्तोत्र कि रचना कुछ इस प्रकार की गई हैं, कि जिसके श्रवण एवं पठन करने से आस-पास के वायुमंडल में विशेष अलौकिक दिव्य उर्जा उत्पन्न होती हैं। ठिक उसी प्रकार से कनकधारा यंत्र अत्यंत दुर्लभ यंत्रो में से एक यंत्र हैं जिसे मां लक्ष्मी कि प्राप्ति हेतु अचूक प्रभावा शाली माना गया हैं।
- ❖ कनकधारा यंत्र को विद्वानो ने स्वयंसिद्ध तथा सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करने में समर्थ माना हैं। जगद्गुरु शंकराचार्य ने दरिद्र ब्राह्मण के घर कनकधारा स्तोत्र के पाठ से स्वर्ण वर्षा कराने का उल्लेख ग्रंथ शंकर दिग्विजय में मिलता हैं।

कनकधारा मंत्र:- *ॐ वं श्रीं वं ऐं ह्रीं-श्रीं क्लीं कनक धारयै स्वाहा'*

कुबेर यंत्र

- ❖ आज के दौर में हर व्यक्ति की चाहता कि उसके पास अपार धन-संपत्ति हो। उसके पार दुनिया का हर ऐशो-आराम मौजुद हो, उसे कभी किसी चीज की कमी न हो। एसे लोगो के लिये कुबेर यंत्र एक प्रकार से चमत्कारी यंत्र है कुबेर यंत्र।
- ❖ कुबेर यंत्र के पूजन से स्वर्ण लाभ, रत्न लाभ, पैतृक सम्पत्ती एवं गड़े हुए धन से लाभ प्राप्ति कि कामना करने वाले व्यक्ति के लिये कुबेर यंत्र अत्यन्त सफलता दायक होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। कुबेर यंत्र के पूजन से एकाधिक स्त्रोत्र से धन का प्राप्त होकर धन संचय होता हैं।
- ❖ कुबेर यंत्र धन अधिपति धनेश कुबेर का यंत्र है, इस लिये कुबेर यंत्र के प्रभाव से यक्षराज कुबेर प्रसन्न होकर अतुल सम्पत्ति का वरदान देते हैं।

- धर्म शास्त्रों में वर्णित हैं लंकाधिपति रावण ने भगवान महादेव से कुबेर यंत्र प्राप्त कर उसका विधि-विधान से पूजन किया था, यही कारण हैं की रावण नें देवाधिराज कुबेर को प्रशन्न कर लिया था जिसके कारण ही उसका राज्य पूर्ण रुप से समृद्ध और वैभवशाली था। कुबेर यंत्र के प्रताप से ही रावणने पूरी लंका सोने की बनाई थी। इस लिए धन-संपत्तिकी कामना करने वाले मनुष्य को कुबेर यंत्र का पूजन अवश्य करना चाहिए।
- लक्ष्मी प्राप्ति हेतु उरोक्त यंत्र के अलावा अन्य यंत्र भी विशेष प्रभावशाली होते हैं। जिस यंत्रों का यहां समावेश नहीं किया गया हैं अतः उसकी महत्वता का कम होना या वह कम प्रभावी हैं एसा बिल्कुल नहीं हैं, केवल यहां समय के अभाव में एवं पाठको के शीघ्र मार्गदर्शन हेतु केवल अनुभूत यंत्रों का समावेश किया गया हैं।

बगलामुखी यंत्र

हिन्दू धर्म में देवी बगलामुखी दसमहाविद्या में आठवीं महाविद्या हैं। बगलामुखी देवी स्तम्भन की देवी हैं। शास्त्रों में वर्णित हैं की समग्र ब्रह्माण्ड की शक्ति एक होकर भी मां बगलामुखी का मुकाबला करने में असमर्थ हैं। बगलामुखी की उपासना से शत्रुओं का नाश, वाद-विवाद में विजय, वाकसिद्धि की प्राप्ति हेतु विशेष रुप से की जाती हैं।

- बगलामुखी यंत्र के पूजन से ज्ञात-अज्ञात सभी प्रकार के शत्रुओं से साधक की रक्षा होती हैं। देवी बगालामुखी बड़े-बड़े शत्रुओं को भी नष्ट करने में समर्थ हैं।
- बगलामुखी यंत्र पर विशेष साधना द्वारा शत्रु की बुद्धि को स्तम्भित करके उसे पराजित किया जा सकता हैं।
- बगलामुखी यंत्र से शत्रुओं पर विजय प्राप्ति एवं इच्छित सफलता प्राप्त की जा सकती हैं।

- बगलामुखी यंत्र शत्रु एवं दुष्ट शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष रुप से लाभकारी यंत्र हैं।
-
- कुछ विद्वानों का अनुभव हैं की मंत्र सिद्ध बगलामुखी यंत्र मानहानी, अकाल मृत्यु, लड़ाई-झगड़े, आकस्मिक दुर्घटना आदि से रक्षा करता हैं औए शत्रु की जिह्वा वाणी को स्तम्भन करने के लिए बगलामुखी यंत्र को सर्वश्रेष्ठ माना है।
- कुछ जानकारों का मानना हैं की बगलामुखी यंत्र के विशेष प्रयोग से भूत-प्रेत, पिशाच आदि बाधाओं का भी नाश होता है। अपने कार्य उद्देश्य में वांच्छित सफलता के लिए कोई भी व्यक्ति बगलामुखी यंत्र का पूजन कर सकता हैं।
- किसी साधारण कार्य की सिद्धि के लिए बगलामुखी मंत्र के 10,000 जप एवं तथा असाध्य कार्य की सिद्धि के लिए 1,00,000 मंत्र का जाप करना चाहिए। किसी कार्य कि सिद्धि हेतु या बगलामुखी देवी की उपासना में मंत्र के जाप से पूर्व बगलामुखी कवच का पाठ करना चाहिए।
- बगलामुखी देवी के पूजन में पीले वस्त्र, पीले पुष्प, पीली हल्दी की माला एवं केशर आदि का उपयोग सर्वश्रेष्ठ है। विद्वानों का अनुभव हैं की यदि बगलामुखी यंत्र पित्तल में निर्मित कर अभिमंत्रित करने से वह अत्यंत प्रभावशाली होता हैं। गुरुत्व कार्यालय द्वारा आप पित्तल एवं ताम्र दोनों में निर्मित बगलामुखी यंत्र प्राप्त कर सकते हैं।

विशेष नोट: मां बगलामुखी के पूजन या साधना से पूर्व किसी योग्य गुरु या जानकार से सलाह-विमर्श करलें। क्योकि पूजन या साधना में कोई भी भूल-चूक आदि होने पर अतिशीघ्र विपरित परिणामों की प्राप्त होने के उदाहरण हमारें समक्ष आते रहते हैं।

गायत्री यंत्र

हिन्दू धर्मग्रंथों में उल्लेख हैं की देवी गायत्री सभी प्रकार के ज्ञान और विज्ञान की जननी है। इसलिए तो जिन वेदों को समस्त विद्याओं का खजाना माना जाता हैं, चारों वेदों को देवी गायत्री के पुत्र माने जाते हैं। यहि कारण हैं, के देवी गायत्री को वेदों की माता अर्थात "वेदमाता" कहा गया हैं। सामान्यतः देवी के गायत्री मंत्र की महिमा एवं प्रभाव से प्रायः हर हिन्दु धर्म को मानने वाले लोग परिचित हैं।

- गायत्री मंत्र को "गुरु मंत्र" के रुप मे जाना जाता है। जिस प्रकार हिन्दु धर्म में गायत्री मन्त्र सभी मंत्रों में सर्वोच्च है और सबसे प्रबल शक्तिशाली मंत्र हैं, उसी प्रकार गायत्री यंत्र भी प्रबल शक्तिशाली यंत्र हैं।
- गायत्री यंत्र के नियमित पूजन एवं दर्शन से मनुष्य को सभी सिद्धि प्राप्त होने लगती हैं।
- गायत्री की यंत्र महिमा का वर्णन शब्दों में करना असंभव हैं। गायत्री यंत्र के पूजन से आत्म ज्ञान की प्राप्ति व सूक्ष्म बुद्धि का विकास होता हैं। व्यक्ति के

सकल पापों का नाश होता हैं, उसके भौतिक अभाव दूर होने लगते हैं।

- गायत्री यंत्र को स्थापित करने से भूत-प्रेत, तंत्र बाधा, चोट, मारण, मोहन, उच्चाटन, वशीकरण, स्तंभन, कामण-टूमण, इत्यादि उपद्रवों का नाश होकर सर्व सुखों की प्राप्ति होती हैं। रोग आदि के निवारण हेतु भी गायत्री यंत्र विशेष लाभकारी हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : गायत्री यंत्र । श्री गायत्री यंत्र संपूट । गायत्री बीसा यंत्र । गायत्री यंत्र (नवग्रह युक्त) । संकट निवारण गायत्री यंत्र भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

संकट मोचन यंत्र

- इस कलयुग में सर्वाधिक देवता के रुप में श्री रामभक्त हनुमानजी की ही पूजा की जाती हैं क्योंकि हनुमानजी को कलयुग का जीवंत अर्थात साक्षात देवता माना गया हैं। कलियुग में शीघ्र प्रसन्न होने वाले एवं प्रभावशाली एवं प्रत्यक्ष देव के रुप में हनुमान जी अपना विशेष स्थान रखते है। जो थोडे से पूजन-अर्चन से अपने भक्त पर प्रसन्न हो जाते हैं और अपने भक्त के सभी प्रकार के दुःख, कष्ट, संकटो इत्यादी का नाश कर उसकी रक्षा करते हैं।
- हनुमान यंत्र के पूजन से मनुष्य बल, बुद्धि कर्म, समर्पण, भक्ति, निष्ठा, कर्तव्य शील जैसे आदर्श गुणो से युक्त हो जाता हैं। अतः श्री हनुमानजी के पूजन से व्यक्ति में भक्ति, धर्म, गुण, शुद्ध विचार, मर्यादा, बल, बुद्धि, साहस इत्यादी गुणो का भी विकास हो जाता हैं।
- विद्वानो के मतानुशार हनुमानजी के प्रति दृढ आस्था और अटूट विश्वास के साथ पूर्ण भक्ति एवं समर्पण की भावना से हनुमान यन्त्र का पूजन-अर्चन और दर्शन कर व्यक्ति अपनी समस्याओं से मुक्त होकर जीवन में सभी प्रकार के सुख प्राप्त कर सकता हैं। हनुमान जी अपने भक्तों के सभी संकटों को दूर करने में समर्थ हैं इस लिए उन्हें संकटमोचन कहां जाता हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : हनुमान यंत्र । हनुमान पूजन यंत्र । मारुति भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

श्री हनुमान यंत्र

- श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा।
- जानकारो ने मतानुशार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं।
- श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

गुरुत्व कार्यालय में उपलब्ध अन्य : संकट मोचन यंत्र । हनुमान पूजन यंत्र । मारुति भी उपलब्ध हैं। नोट: हमारें सभी यंत्रों के विषय में अधिक जानकारी आप हमारी वेब साइट पर प्राप्त कर सकते हैं। Visit us on www.gurutvakaryalay.com

नवदुर्गा यन्त्र

✍ स्वस्तिक.ऎन.जोशी

शैलपुत्री

मां के शैलपुत्री को पर्वतराज (शैलराज) हिमालय के यहां पार्वती रुप में जन्म लेने से भगवती को शैलपुत्री कहा जाता हैं। मां शैलपुत्री को शास्त्रों में तीनो लोक के समस्त वन्य जीव-जंतुओं का रक्षक माना गया हैं। इसी कारण से वन्य जीवन जीने वाली सभ्यताओं में सबसे पहले शैलपुत्री के मंदिर की स्थापना की जाती हैं जिस सें उनका निवास स्थान एवं उनके आस-पास के स्थान सुरक्षित रहे। मां शैलपुत्री का मंत्र-ध्यान-कवच का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति को हमेशा धन-धान्य से संपन्न रहता हैं। अर्थात उसे जिवन में धन एवं अन्य सुख-साधनो को कमी महसूस नहीं होतीं।

ब्रह्मचारिणी

मां ब्रह्मचारिणी को विद्वानों ने तप का आचरण करने वाली भगवती हैं होने के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी कहा हैं। क्योकि ब्रह्म का अर्थ हैं तप। शास्त्रो में मां ब्रह्मचारिणी को समस्त विद्याओं की ज्ञाता माना गया हैं। धार्मिक मान्यताके अनुसार देवी ने भगवान शिव को प्राप्त करने के लिए 1000 साल तक सिर्फ फल खाकर तपस्या रत रहीं और 3000 साल तक शिव कि तपस्या सिर्फ पेड़ों से गिरी पत्तियां खाकर कि, उनकी इसी कठिन तपस्या के कारण उन्हें ब्रह्मचारिणी नाम से जाना गया। ब्रह्मचारिणी के मंत्र-ध्यान-कवच का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति को अनंत फल कि प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति में तप, त्याग, सदाचार, संयम जैसे सद् गुणों कि वृद्धि होती हैं।

चन्द्रघण्टा

चन्द्रघण्टा का स्वरूप शांतिदायक और परम कल्याणकारी हैं। चन्द्रघण्टा के मस्तक पर घण्टे के आकार का अर्धचन्द्र शोभित रहता हैं। इस लिये मां को चन्द्रघण्टा देवी कहा जाता हैं। इनके घण्टे सी भयानक प्रचंड ध्वनि से अत्याचारी दैत्य, दानव, राक्षस व दैव भयभित रहते हैं। चन्द्रघण्टा के मंत्र-ध्यान-कवच का विधि-विधान से पूजन करने से व्यक्ति का मणिपुर चक्र जाग्रत हो जाता हैं। देवी की उपासना से व्यक्ति को सभी पापों से मुक्ति मिलती हैं उसे समस्त सांसारिक आधि-व्याधि से मुक्ति मिलती हैं। इसके उपरांत व्यक्ति को चिरायु, आरोग्य, सुखी और संपन्न होनता प्राप्त होती हैं। व्यक्ति के साहस एव विरता में वृद्धि होती हैं। व्यक्ति स्वर में मिठास आती हैं उसके आकर्षण में भी वृद्धि होती हैं। चन्द्रघण्टा को ज्ञान की देवी भी माना गया है।

कूष्माण्डा

कूष्माण्डा देवी ने अपनी मंद हंसी द्वारा ब्रह्माण्ड को उत्पन्न किया था इसीके कारण इनका नाम कूष्माण्डा देवी रखा गया। शास्त्रोक्त उल्लेख हैं, कि जब सृष्टि का अस्तित्व नहीं था, तो चारों तरफ सिर्फ अंधकार हि था। उस समय कूष्माण्डा देवी ने अपने मंद से हास्य से ब्रह्मांड कि उत्पत्ति कि। कूष्माण्डा देवी को जीवन कि शक्ति प्रदान करता माना गया हैं। कूष्माण्डा देवी के मंत्र-ध्यान-कवच का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का अनाहत चक्र जाग्रत हो हैं। मां कूष्माण्डाका के पूजन से सभी प्रकार के रोग, शोक और क्लेश से मुक्ति मिलती हैं, उसे आयुष्य, यश, बल और बुद्धि प्राप्त होती हैं।

स्कंदमाता

स्कंदमाता कुमार अर्थात् कार्तिकेय की माता होने के कारण, उन्हें स्कन्दमाता के नाम से जाना जाता हैं। स्कंदमाता का स्वरुप परम कल्याणकारी मनागया हैं।

देवी का ध्यान-कवच का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का विशुद्ध चक्र जाग्रत होता हैं। व्यक्ति कि समस्त इच्छाओं की पूर्ति होती हैं एवं जीवन में परम सुख एवं शांति प्राप्त होती हैं।

कात्यायनी

महर्षि कात्यायन की पुत्री होने के कारण उन्हें कात्यायनी के नामसे जाना जाता हैं। मां के मंत्र-ध्यान-कवच का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का आज्ञा चक्र जाग्रत होता हैं। देवी कात्यायनी के पूजन से रोग, शोक, भय से मुक्ति मिलती हैं। कात्यायनी देवी को वैदिक युग में ये ऋषि-मुनियों को कष्ट देने वाले रक्ष-दानव, पापी जीव को अपने तेज से ही नष्ट कर देने वाली माना गया हैं। कात्यायनी यन्त्र के पूजन से शीघ्र विवाह के योग बनने लगते हैं एवं विवाह में आने वाली बाधाये दूर होती हैं।

कालरात्रि

मां कालरात्रि देवी के शरीर का रंग घने अंधकार कि तरह एकदम काला हैं, सिर के बाल फैलाकर रखने वाली हैं। मां कालरात्रि के मंत्र-ध्यान-कवच का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का भानु चक्र जाग्रत होता हैं। कालरात्रि के पूजन से अग्नि भय, आकाश भय, भूत पिशाच इत्यादी शक्तियां कालरात्रि देवी के स्मरण मात्र से ही भाग जाते हैं, कालरात्रि का स्वरूप देखने में अत्यंत भयानक होते हुवे भी सदैव शुभ फल देने वाला होता हैं, इस लिये कालरात्रि को शुभंकरी के नामसे भी जाना जाता हैं। कालरात्रि शत्रु एवं दुष्टों का संहार कर ने वाली देवी हैं।

महागौरी

महागौरी स्वरूप उज्जवल, कोमल, श्वेतवर्णा तथा श्वेत वस्त्रधारी हैं। महागौरी गायन एवं संगीत से प्रसन्न होने वाली 'महागौरी' माना जाता हैं। महागौरी के मंत्र-ध्यान-कवच का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का सोमचक्र जाग्रत होता हैं। महागौरी के पूजन से व्यक्ति के समस्त पाप धुल जाते हैं। महागौरी के पूजन करने वाले साधन के लिये मां अन्नपूर्णा के समान, धन, वैभव और सुख-शांति प्रदान करने वाली एवं संकट से मुक्तिदिला ने वाली देवी महागौरी हैं।

सिद्धिदात्री

देवी सिद्धिदात्री का स्वरूप कमल आसन पर विराजित, चार भुजा वाला, दाहिनी तरफ के नीचे वाले हाथ में चक्र, ऊपर वाले हाथ में गदा, बाई तरफ से नीचे वाले हाथ में शंख और ऊपर वाले हाथ में कमल पुष्प सुशोभित रहते हैं। देवी सिद्धिदात्री के मंत्र-ध्यान-कवच का विधि-विधान से पूजन करने वाले व्यक्ति का निर्वाण चक्र जाग्रत होता हैं। सिद्धिदात्री के पूजन से व्यक्ति कि समस्त कामनाओं कि पूर्ति होकर उसे ऋद्धि, सिद्धि कि प्राप्ति होती हैं। पूजन से यश, बल और धन कि प्राप्ति कार्यो में चले आ रहे बाधा-विध्न समाप्त हो जाते हैं। व्यक्ति को यश, बल और धन कि प्राप्ति होकर उसे मां कि कृपा से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष कि भी प्राप्ति स्वतः हो जाती हैं।

विद्वानों के मातानुशार मां दुर्गा के इन नौ-रुपों की कृपा प्राप्त करने का सरल उपाय नवदुर्गा यन्त्र की स्थापना एवं पूजन एवं दर्शन से विशेष फलों की प्राप्ति होती हैं।

यंत्र द्वारा वास्तु दोष निवारण

✍ चिंतन जोशी

हर भवन के निर्माण से उसमें शुभ एवं अशुभ दोनों प्रकार के तत्त्व व्याप्त होते हैं। केवल शुभ तत्त्व हो या केवल अशुभ तत्त्व हो यह संभव नहीं हैं। दोनों तत्त्वों का मिश्रीत प्रभाव उस भवन पर होता हैं। उसमें फर्क इतना ही होता हैं की कहीं शुभ तत्त्व की अधिक होती हैं तो कहीं अशुभ तत्त्व की अधिकता रहती हैं। इस लिए कोई भी भवन नातो पूर्ण रुप से शुभ तत्त्व से युक्त हो ता हैं नाहीं अशुभ तत्त्व से युक्त होता हैं। शुभ तत्त्व की अधिकता से उसे शुभ संकेत समझा जाता हैं एवं अशुभ तत्त्व की अधिकता को दोष के रुप में जाना जाता हैं। अशुभ तत्त्व की अधिकता से ही वास्तु दोष उत्पन्न होता हैं।

इस लिए वास्तु यन्त्र एवं अन्य उपायों का सहायता से भवन के शुभ तत्त्वों की वृद्धि एवं अशुभ तत्त्वों अर्थात दोषों को कम किया जा सकता हैं।

वास्तु दोष दूर करने के उपाय यदि भवन में संबंधित दिशा में वास्तु दोष हो तो उस दिशा में वास्तु यंत्र लगाना चाहिए।

घर में वास्तु दोषनाशक यंत्र को विधि-विधान से स्थापित करना चाहिए।

गणेश प्रतिमा

मुख्य द्वार के उपरी हिस्से में अंदर-बाहर मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र, कनक धारा यंत्र और दक्षिणावर्ती स्फटिक गणेश जी (दाहिनी सूंढ) को स्थापित करने से उस भवन के द्वार दोष और वास्तु दोष दूर होते हैं।

भवन के मुख्य द्वार के उपर मध्य भाग में श्रीगणेश की प्रतिमा परशु और अंकुश लिए बुद्धिमत्ता और समृद्धि के दाता के रुप में शुभदाय है। मुख्य द्वार पर बैठे हुए गणेशजी की प्रतिमा द्वार के उपर शुभ मानी जाती है। भगवान गणेश हमारे जीवन की सफलता के प्रतीक है। गणेश जी का विशाल उदर में पूरा ब्रह्मांड विद्यमान है। गणेशजी की सूंड विघ्नों को दूर करने के लिए मुडी हुई रहती है। हमारी संस्कृति में किसी भी शुभ कार्यो को प्रारंभ करने से पहले इनका प्रथम स्मरण करने का विधान हैं।

श्रीयंत्र

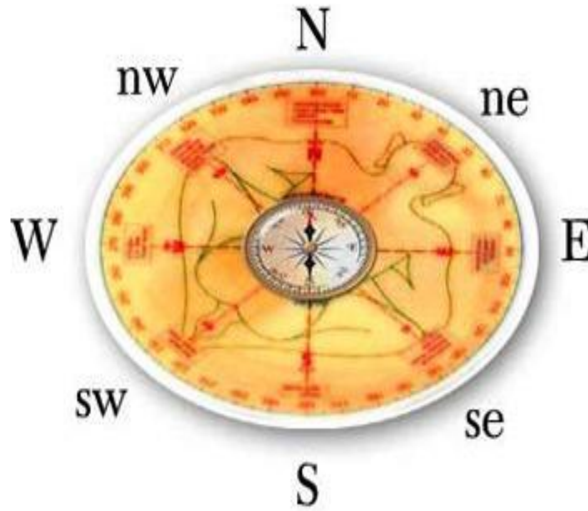
भवन के सभी प्रकार के दोष दूर करने के लिए मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित स्पफटिक श्रीयंत्र की स्थापना करने से एवं उसका प्रतिदिन पूजन-अर्चन करनी चाहिए।

मांगलिक चिह्न

भवन के मुख्यद्वार पर ॐ, स्वस्तिक शुभ-लाभ, ऋद्धि-सिद्धि आदि मंगलदायक प्रतिक चिह्न लगाने चाहिए। भवन के मुख्यद्वार पर प्रतिदिन गंगाजल का छिड़काव घर में करना चाहिए।

नवग्रह शांति यंत्र

नवग्रह ग्रहों के यंत्रों को उनकी संबंधित दिशाओं में इस प्रकार से लगाने चाहिए जहां ये आसानी से दिखाई देते हो। नवग्रह शांति यंत्र के पूजन एवं स्थापना से भी वास्तुदोषों का शमन होता है। उत्तर, पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, ईशान, आग्नेय, नैऋत्य, वायव्य या ब्रह्म स्थान में जहां भी वास्तु दोष हो उस दिशा में संबंधित देव का यंत्र स्थपित करे या उसे पूजा स्थान में स्थपित करे।



- ❖ भवन के उत्तर में बृहस्पति, कुबेर या वरुण यंत्र लगाना चाहिए।
- ❖ घर के आग्नेय कोण में वास्तु दोष हो तो आग्नेय कोण में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित चंद्र यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- ❖ यदि भवन में निवास करने वाले सदस्यों को मन नहीं लगने, इन्फेक्शन, अंतड़ियों की समस्या, भय, आर्थिक हानि आदि समस्या ये रहती हो तो भवन का नैऋत्य कोण में दोष होता हैं। एसी स्थिती में भवन के नैऋत्य कोण में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित राहु यंत्र और मृत्यंजय यंत्र को स्थापित करना चाहिए। नैऋत्य कोण में 7 इंच का गड्ढा खोदकर उसमें सवा 5 से 7 रत्ती का अभिमंत्रित गोमेद दबा देना चाहिए।
- ❖ यदि भवन के दक्षिण भाग में दोष हो तो प्रायः समय उस भवन में निवासकर्ता चिंता-तनाव आदि से ग्रस्त रहते हैं। मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित त्रिकोण मंगल यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- ❖ यदि भवन के वायव्य कोण में दोष हो तो प्रायः निवास कर्ता को कार्य क्षेत्र में समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित केतु यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- ❖ यदि भवन के पश्चिम भाग में दोष हो तो मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित शनि यंत्र को स्थापित करना चाहिए। भवन के मुख्य द्वार पर घोड़े की नाल को U आकार में लगाना चाहिए। उल्टा लगाने से विपरित परिणामों से सम्मुखिन होना पड़ता हैं।
- ❖ यदि भवन पूर्व भाग में दोष हो तो मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित सूर्य यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- ❖ भवन के ईशान कोण में दोष हो तो वास्तुदोषों को दूर करने हेतु मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित बृहस्पति यंत्र को स्थापित करना चाहिए।
- ❖ इससे इन दोनों दिशाओं जनित वास्तुदोष दूर होते हैं।

***

सर्व कार्य सिद्धि कवच

जिस व्यक्ति को लाख प्रयत्न और परिश्रम करने के बादभी उसे मनोवांछित सफलताये एवं किये गये कार्य में सिद्धि (लाभ) प्राप्त नहीं होती, उस व्यक्ति को सर्व कार्य सिद्धि कवच अवश्य धारण करना चाहिये।

कवच के प्रमुख लाभ: सर्व कार्य सिद्धि कवच के द्वारा सुख समृद्धि और **नव ग्रहों** के नकारात्मक प्रभाव को शांत कर धारण करता व्यक्ति के जीवन से सर्व प्रकार के दु:ख-दारिद्र का नाश हो कर सुख-सौभाग्य एवं उन्नति प्राप्ति होकर जीवन मे सभि प्रकार के शुभ कार्य सिद्ध होते हैं। जिसे धारण करने से व्यक्ति यदि व्यवसाय करता होतो कारोबार मे वृद्धि होति हैं और यदि नौकरी करता होतो उसमे उन्नति होती हैं।

- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **सर्वजन वशीकरण** कवच के मिले होने की वजह से धारण कर्ता की बात का दूसरे व्यक्तिओ पर प्रभाव बना रहता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **अष्ट लक्ष्मी** कवच के मिले होने की वजह से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)- धैर्य लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का अशीर्वाद प्राप्त होता हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **तंत्र रक्षा** कवच के मिले होने की वजह से तांत्रिक बाधाए दूर होती हैं, साथ ही नकारात्मक शक्तियो का कोइ कुप्रभाव धारण कर्ता व्यक्ति पर नहीं होता। इस कवच के प्रभाव से इर्षा-द्वेष रखने वाले व्यक्तिओ द्वारा होने वाले दुष्ट प्रभावो से रक्षा होती हैं।
- सर्व कार्य सिद्धि कवच के साथ में **शत्रु विजय** कवच के मिले होने की वजह से शत्रु से संबंधित समस्त परेशानिओ से स्वतः ही छुटकारा मिल जाता हैं। कवच के प्रभाव से शत्रु धारण कर्ता व्यक्ति का चाहकर कुछ नही बिगाड़ सकते।

अन्य कवच के बारे मे अधिक जानकारी के लिये कार्यालय में संपर्क करे:

किसी व्यक्ति विशेष को सर्व कार्य सिद्धि कवच देने नही देना का अंतिम निर्णय हमारे पास सुरक्षित हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

जन्म लग्न से रोग निवारण हेतु उपयुक्त यंत्र

चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऎन.जोशी

मेष लग्नः मेष लग्न में जन्म लेने वाले जातक कि कुंडली में लग्नेश मंगल लग्न भाव और अष्टम भाव का स्वामी होता हैं। कुंडली में चतुर्थ भाव में मंगल नीच का होने पर ज्यादातर व्यक्ति को छोटी-मोटी चोट लगती राहती हैं, उसे शल्य चिकित्सा(ऑपरेशने) भी करवानी पड सकती हैं। व्यक्ति को हृदय में दर्द, उच्च रक्तचाप (हाई बी.पी), जलीय स्थान से भय, जहरीले जीवजंतु के काटने और जहरीले पदार्थ से से कष्ट हो सकता हैं। मातृ पक्ष से परेशानी, भूमि-भवन इत्यादी संपती से हानि हो सकती हैं।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझावः मंगल ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित मंगल यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।



वृषभ लग्नःवृषभ लग्न में जन्म लेने वाले जातक कि कुंडली में लग्नेश शुक्र लग्न भाव और षष्ठम भाव का स्वामी होता हैं। कुंडली में पंचम भाव में शुक्र नीच का होने, पर शास्त्रोंक्त मत से शुक्र व्यक्ति को जड़ बुद्धि अर्थात मूर्ख बनाता हैं। एसे व्यक्ति का दिमाग गलत कार्यो कि और ज्यादा अग्रस्त रहता हैं, जिस्से व्यक्ति अधिक से अधिक लाभ प्राप्त करना चाहता हैं, और सफलता भी प्राप्त करता हैं। उसकी मित्रता निम्न-स्तर के लोगों के साथ होती हैं। व्यक्ति नीच स्त्री-पुरुष से संपर्क रखने वाला हो सकता हैं। व्यक्ति को स्त्री वर्ग के कारण कारावास कि सजा हो सकती हैं। शुक्र सौंदर्य, भोग-विलास, ऎश्वर्य, अलंकार, रति सुख, ऎशो-आराम, स्त्री वर्ग इत्यादी पर अपना स्वामीत्व रखता हैं। इस लिये इन सबके प्रति व्यक्ति का अधिक झुकाव
चरित्र से कमजोर कर देता हैं, जिस्से वह गलत कार्यों में सलग्न हो सकता हैं।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझावः शुक्र ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित शुक्र यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

मिथुन लग्नः मिथुन लग्न में जन्म लेने वाले जातक कि कुंडली में लग्नेश बुध लग्न भाव और चतुर्थ भाव का स्वामी होता हैं। कुंडली में दशम में बुध नीच का होने, पर व्यक्ति सांस की नली, आंतड़ियाँ, दमा, कफ जनीत रोग, गुह्य रोग, गैस, सांस फूलना, उदर रोग, वातरोग, कृष्ठ रोग, मंदाग्नि, शूल, फेफड़े इत्यादी के रोग से पीड़ित हो सकता हैं। व्यक्ति को व्यापार, नौकरी, साझेदारी से भी परेशानी उठानी पड़ सकती हैं। व्यक्ति को खासकर अपने पिता से संबंधो में कठिनाईया आसकती हैं।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझावः बुध ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित बुध यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

कर्क लग्नः कर्क लग्न में जन्म लेने वाले जातक कि कुंडली में लग्नेश चंद्र पंचम भाव में स्थित हों ने पर चंद्रमा नीचका होता हैं। कुंडली में पंचम में चंद्र नीच का

होने, पर व्यक्ति को ज्यादातर गैस, रक्तचाप (ब्लड प्रेशर), पेट के रोग, मानसिक अशांति, देहीक सौंदर्य, कफ, वात प्रकृति, अनिंद्रा, पांडुरोग, स्त्री संबंधित रोग इत्यादी से कष्ट हो सकता हैं। चंद्र पर अशुभ ग्रहों का प्रभाव होने पर व्यक्ति को पर पागलपन भी हो सकता हैं।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझाव: चंद्र ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित चंद्र यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

सिंह लग्न : सिंह लग्न वाले जातकों का सूर्य तृतीय में होगा तो नीच का होगा या नेत्र, हृदय एवं हड्डी से संबंधित बीमारी अवश्य होगी। ऐसा जातक कुंठित होगा। पराक्रमहीन होगा व बुरे कार्य में बल दिखाने वाला होगा। ऐसा जातक व्यर्थ की बातों को लेकर झगड़े में पड़ने वाला होगा। इनके छोटे भाई-बहन नहीं होंगे। यदि किसी कारणवश हुए भी तो उनसे लड़ता-झगड़ता रहेगा, लेकिन ये स्वयं भाग्यशाली होंगे क्योंकि भाग्य पर उच्च दृष्टि पड़ेगी।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझाव: सूर्य ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित सूर्य यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

कन्या लग्न :कन्या लग्न वाले जातकों का बुध दशमेश होकर सप्तम भाव में नीच का होने से दैनिक व्यापार-व्यवसाय में हानि, पार्टनर से धोखा, बेवफा पत्नी या पति मिलता है। ऐसा जातक शारीरिक दृष्टि से प्रभावी होता है, लेकिन नौकरी में सदैव परेशानियों से गुजरने वाला तथा शासन से अपयश ही मिलता है।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझाव: बुध ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित बुध यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

तुला लग्नतुला लग्न वालों का स्वामी शुक्र अष्टमेश होकर द्वादश भाव में होगा, जो नीच का होगा। ऐसे जातक दुर्व्यसनों में खर्च करने वाले होंगे एवं इन्हें अनैतिक कार्यों में जेल भी जाना पड़ सकता है। ऐसा व्यक्ति नशीले पदार्थों का सेवन करने वाला, अनेक स्त्रियों से संपर्क रखने वाला व तस्कर भी हो सकता है।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझाव: शुक्र ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित शुक्र यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

वृश्चिक लग्न :वृश्चिक लग्न वाले जातकों को षष्ठेश होकर नवम भाग्य भाव में नीच का मंगल होगा। ऐसे जातकों को भाग्योन्नति में बाधा आती है। धर्म के प्रति लापरवाह होते हैं। इन्हें अनेक बार गिरने से चोट लगती है एवं ऑपरेशन भी करना पड़ सकता है। ब्लडप्रेशर के शिकार भी हो सकते हैं। इनको भाइयों से उत्तम सहयोग मिलता है। वहीं ये पराक्रमी भी होते हैं। माता से शत्रुता रखने वाले भी हो सकते हैं।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझाव: मंगल ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित मंगल यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

धनु लग्न: धनु लग्न वाले जातकों को चतुर्थेश होकर द्वितीय भाव में नीच का गुरु होगा। ऐसे जातकों को आँखों की बीमारी, मोतियाबिन्द भी होगा व्यक्ति कोगचश्मा भी लग सकता है। इनकी वाणी कभी-कभी दूसरे लोगो को थोडी अव्यवहारपूर्ण लग सकती हैं। इन्हें परिवार से हानि तथा असहयोग मिलता रहता है। ऐसा जातक शीघ्र नशे के आधि हो सकते हैं।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझाव: गुरु(बृहस्पति) ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-

प्रतिष्ठित गुरु(बृहस्पति) यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

मकर लग्न: मकर लग्न वाले जातकों को द्वितीयेश होकर चतुर्थ भाव में नीच का शनि होने से जातक का स्वभाव अत्यंत कठोर हो जाता हैं। घुटनों में दर्द व छाती में दर्द की शिकायत हो सकती है। व्यक्ति की अपनी माता से नहीं बनेगी या बचपन से ही माता का साथ छूट जाएगा। मकान, भूमि, संपत्ति व वाहन से संबंधित कार्यो या निवेश से हानि पाएगा अथवा लम्बे समय तक जमीन-जायदाद के मुकदमों में फँसा रह सकता है। राजनैतिक कार्यो से परेशान रहेगी।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझाव: शनि ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित शनि यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

कुंभ लग्न: कुंभ लग्न वाले जातकों को द्वादशेश होकर तृतीय भाव में नीच का शनि होगा। ऐसे जातकों को छोटे भाई-बहनों का सुख कम मिलता हैं या नहीं मिलता। वहीं संतान से सम्बन्धित कष्ट भी बना रहता हैं। विद्या में कमजोर रहता है। हाथ में चोटे लग सकती हैं। स्वभाव भी कटुता भरा होता है।जोड़ोंमें दर्द, रीढ़की हड्डी बढ़ने का खतरा रहता है। नाक, कान, गले की बीमारी हो सकती है।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझाव: शनि ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित शनि यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

मीन लग्न: मीन लग्न वाले जातकों को दशमेश होकर एकादश भाव में नीच का गुरु होगा। ऎसा व्यक्ति थोडे व्यसनी, घमंडी, कटु वचन बोलने वाला हो सकता है। जातक के बड़े भाई-बहन का सुख पूर्ण नहीं मिलता। ऐसे जातक को पीलिया, दिल में छेद, जिगर की बीमारी होती है। लोहे की वस्तु से हानि भी हो सकती है। पत्नी व संतान से पूर्ण सुख में कमी रहती है। शिक्षा उत्तम होती है।

ग्रह शांति हेतु उपयुक्त यन्त्र सुझाव: गुरु(बृहस्पति) ग्रह कि शांति हेतु घर में पूजा स्थान में मंत्र सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित गुरु(बृहस्पति) यंत्र की स्थापना कर उसका नियमित धूप-दीप से पूजन करना लाभप्रद होता हैं।

उपरोक्त लग्न वाले जातकों को अनिष्ट प्रभाव हो तो उनके बचाव हेतु साथ में दिए गए अनुभूत यंत्र का उपाय करने से कष्टों में अवश्य कमी आएगी। लेकिन व्यक्ति को अपने किये गए कर्मो का फलतो भोगना ही पडता हैं।

यंत्र साधना हेतु उपयुक्त माला चयन

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

यंत्र साधना मे मंत्र जप के लिये माला का विशेष महत्व होता है। विभिन्न प्रकार के यंत्र एवं कार्य की सिद्धि हेतु माला का चयन निर्धारित यंत्र एवं कार्य उद्देश्य के अनुशार करने से साधक को अपने कार्य की सिद्धि जल्द प्राप्त होती हैं, क्योकी माला का चयन जिस इष्ट की साधना करनी हो, उस देवता से संबंधित यंत्र को संबंधित पदार्थ से निर्मित माला का प्रयोग अत्याधिक प्रभाव शाली माना गया हैं।

देवी- देवता के यंत्र विशेष को को सिद्ध करने के लिए उपयुक्त माला का चयन करना चाहिए-

लाल चंदन- (रक्त चंदन माला) गणेश यंत्र, दूर्गा यंत्र, मंगल यंत्र, पुष्टि कर्म, के लिए उत्तम है।

श्वेत चंदन- (सफेद चंदन माला) - लक्ष्मी यंत्र एवं शुक्र यंत्र के लिए उत्तम है।

तुलसी- विष्णु यंत्र, राम यंत्र व कृष्ण यंत्र कि पूजा अर्चना के लिए उत्तम है।

मूंग- लक्ष्मी यंत्र, गणेश यंत्र, हनुमान यंत्र, मंगल यंत्र के लिए उत्तम है।

मोती- लक्ष्मी यंत्र, चंद्र यंत्र के लिए उत्तम है।

कमल गटटा- ल लक्ष्मी यंत्र के लिए उत्तम है।

हल्दी - बगलामुखी यंत्र एवं बृहस्पति (गुरु) यंत्र के लिए उत्तम है।

काली हल्दी- दुर्भाग्य नाशक यंत्र, मां काली यंत्र के लिए उत्तम है।

स्फटिक – लक्ष्मी यंत्र, सरस्वती यंत्र, भैरवी की आराधना के लिए श्रेष्ठ होती है।

चाँदी - लक्ष्मी यंत्र, चंद्र यंत्र के लिए श्रेष्ठ होती है।

रुद्राक्ष – शिव यंत्र, हनुमान यंत्र के लिए श्रेष्ठ होती है।

नवरत्न - नवग्रह यंत्र हेतु।

सुवर्ण- लक्ष्मी कि प्रसन्नता हेतु।

अकीक - (हकीक) कि माला का प्रयोग उसके रंगो के अनुरुप किया जाता हैं।

रुद्राक्ष एवं स्फटिक की माला सभी देवी- देता की पूजा उपासना में प्रयोग कियाजा सकता हैं।

विद्वानो ने मतानुशार रुद्राक्ष की माला सर्वश्रेष्ठ होती हैं। रुद्राक्ष की माला से मन्त्र जाप करने से नवग्रहों के प्रभाव भी स्वतः शांत होने लगते हैं और मनुष्य के अनंत कोटी पातको का शमन होता हैं।

ग्रह शान्ति हेतु माला चयन:

1) सूर्य यंत्र के लिए माणिक्य की माला, गारनेट, माला रुद्राक्ष, बिल्व की लकड़ी से बनी की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

2) चन्द्र यंत्र के लिए मोती, शंख, सीप की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

3) मंगल यंत्र के लिए मूंगे या लाल चंदन की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

4) बुध यंत्र के लिए पन्ना या कुशामूल की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

5) बृहस्पति यंत्र के लिए हल्दी की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

6) शुक्र यंत्र के लिए स्फटिक की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

7) शनि यंत्र के लिए काले हकीक या वैजयन्ती की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

8) राहु यंत्र के लिए गोमेद या चन्द की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

9) केतु यंत्र के लिए हसुनिया या लाजवर्त की माला का प्रयोग करना लाभप्रद होता हैं।

विभिन्न माला से कामना पूर्ति

स्वस्तिक.ऎन.जोशी

- माला से मन्त्र जप करने का मूल उद्देश्य होता हैं, कि माला हाथ में रहने से ध्यान कम भटकता हैं और मन की एकाग्रता बढ़ती हैं।
- कामना की पूर्ति के लिए चांदी की माला से मंत्र जाप करना चाहिए।
- धन, ऎश्वर्य प्राप्ति, परीवार सुख समृद्धि एवं शांती प्राप्ति के लिए स्फटिक की माला से मंत्र जाप करना चाहिए।
- समस्त भोगों की प्राप्ति के लिए रक्त (लाल) चन्दन की माला से मंत्र जाप करना चाहिए।
- राजसिक प्रयोजन तथा आपदा से मुक्ति के लिए चाँदी की माला से मंत्र जाप करना चाहिए।
- वशीकरण के लिए मोती की माला से मंत्र जाप करना चाहिए।
- आकर्षण के लिए विधुत माला से मंत्र जाप करना चाहिए।
- संतान प्राप्ति के लिए पुत्र जीवा की से मंत्र जाप करना चाहिए।
- अभिचार कर्म के लिए कमल गट्टे की माला से मंत्र जाप करना चाहिए।
- पाप-नाश व दोष-मुक्ति के लिए कुश-मूल की माला से मंत्र जाप करना चाहिए।
- विघ्नहरण के लिए हल्दी की माला से मंत्र जाप करना चाहिए।
- शत्रु विनाश के लिए कमल गट्टे की माला धारण करने से लाभ होता हैं।
- वहीं नजर हरण हेतु हरिद्र की माला, नजर होने से बचाव के लिए व्याघ्र नख की माला एवं शत्रु विनाश के लिए कमल गट्टे की माला धारण किया जाता है। इस तरह हर माला अपना अलग-अलग प्रभाव होता है।
- पद्म पुराण में उल्लेख है, कि तुलसी कि माला गले में धारण करके भोजन करने से अश्वमेघ यज्ञ के समान फल मिलता हैं।
- तुलसी कि माला गले में धारण करके स्नान करने से समस्त तीर्थो के स्नान का फल मिलता हैं।
- तुलसी कि माला गले में हो तो साधक को मोक्ष की प्राप्ति होती हैं।
- तुलसी की माला से जप करने से मन एकाग्रचित्त होता हैं और रोगों से भी सुरक्षा होती है।
- स्फटिक की माला शान्ति कर्म और ज्ञान प्राप्ति; माँ सरस्वती व भैरवी की आराधना के लिए श्रेष्ठ होती है।

माला के 108 मनकों का रहस्य

चिंतन जोशी, स्वस्तिक.ऎन.जोशी

साधारणतः मनुष्य के भीतर एसे प्रश्न उठते रहते हैं की माला में 108 मनके ही क्यों होते हैं? इसका सरल उदाहरण आपके मार्गदर्शन हेतु यहां प्रस्तुत किए गए हैं।

- हिंदू धर्म में 108की संख्या को बहुत पवित्र और रहस्यमय माना जाता हैं। इस लिए हिंदू धर्म में माला मे 108 मनके (दाने) का अत्याधिक महत्व हैं।
- 108 मनके (दाने) का अध्यात्म की द्रष्टि से विचार किया जाये तो एक जाप माला मे 108 या 54 या 27 मनके (दाने) होते हैं, ज्यादातर मालाए 108 मनके की बनती हैं एवं बाजार मे यही ज्यदा उपलब्ध होती हैं। उसमे सुमेरु अलग से होता हैं।
- 108 मनके (दाने) को हिन्दु धर्मके उपनिषदों की संख्या से जोडा जाये तो प्रमुख उपनिषद की संख्या भी 108 हैं।
- हिन्दु धर्म में ब्रह्म को 9 अंक से जोड़ा गया हैं। इस लिए ब्रह्म के 9 अंक एवं आदित्य के 12 अंक का गुणन (9X12 =108) 108 होता हैं।
- ज्योतिष विज्ञान की द्रष्टि से विचार किया जाये तो 9 ग्रह एवं 12 राशियो (9X12 =108) से जोडा जाता हैं। क्योकि एसी ज्योतिषी मान्यता हैं की 9 ग्रह एवं 12 राशियां मनुष्य पर 108 प्रकार के प्रभाव डालते हैं।
- दूसरी द्रष्टि से विचार किया जाये तो 27 नक्षत्रों एवं हर नक्षत्र के 4 पाद या चरण होते हैं (27x 4 =108) से जोडा जाता हैं।
- अंकशास्त्र में भी एक से नौ तक के सारे अंक महत्वपूर्ण होते हैं। लेकिन अंक नौ खास विशेषता रखता हैं, क्योकि नौ का अंक ही ऐसा अंक हैं, जिसे किसी भी अंक से गुणा करने पर उसका मूलांक नौ ही प्राप्त होता हैं।
- इसी प्रकार हिन्दु संस्कृती में भी नौ का विशेष महत्व हैं। माला के 108 मनको का जोड़ भी 9 होता हैं। (1 + 0 + 8 = 9)
- ज्योतिष के अनुसार ग्रहों की संख्यानौ हैं और उससे जुडी राशियों को प्राप्त वर्णाक्षरों की संख्या भी नौ हैं।
- रत्नो की संख्या भी नौ हैं, देवी दुर्गा के नौ रुपों की उपासना का विधान हैं। नवरात्री भी नौ दिनोतक मनाई जाती हैं। रस की संख्या भी नौ मानी गई हैं इस लिए नौ रस कहां जाता हैं। प्रमुख आसनो की संख्याभी नौ हैं इस लिए उसे नौ आसन कहां जाता हैं।
- हिंदू संस्कृती में प्रमुख एवं विद्वान साधु-संतों के नाम से पूर्व भी श्री श्री 108 या श्री श्री 1008 की संख्या का योग लगाया जाता हैं जिसका भी कुल जोड नौ होता हैं। इस लिए नौ अंक अपने आप में गूढ रहस्य लिए हुए हैं।
- 9 अंक को मंगल ग्रह का प्रतिक या कारक माना जाता हैं। ज्योतिष में मंगल शक्ति एवं साहस का प्रतिक हैं इस लिए 9 अंक शक्ति, साहस और भाग्य का भी द्योतक माना जाता हैं। ऋग्वेद में ऋचाओं की संख्या 10 हजार 800 है। 2 शून्य हटाने पर 108 होती है।
- शांडिल्य विद्यानुसार यज्ञ वेदी में 10 हजार 800 ईंटों की आवश्यकता मानी गई है। 2 शून्य कम पर 108 संख्या शेष रहती है।
- व्यक्ति एक मिनट मे अंदाज से 15 सांसे लेता हैं। एक घंटे मे 60 मिनिट। एवं एक दिन मे 24 घंटे। 15 x 60 x 24 का कुल जोड = 21,600 = 21,600 / 200 = 108

आयुर्वेद के जानकार मानते हैं की मानव शरीर वात, पित्त और कफ तीनो के संयोग से बना हैं।

यदि मानव शरीर में ये तीनों एक संतुलीत रुप में विध्वमान हो, तो मानव शरीर स्वस्थ माना जाता हैं। यदि इन तीनों में से किसी एक का संतुलन बिगड़ जाए तो शरीर में रोग उत्पन्न होता हैं। हमारे विद्वान ऋषी-मुनियों नी हजारो वर्ष पूर्व यहं ज्ञात कर लिया था की, मान शरीर में उत्पन्न होने वाले प्रायः सभी रोग उसके मन के दोषों से उत्पन्न होते हैं, जिसे आजके आधुनिक युग में सिद्ध हो चुकी हैं की मनुष्य अपने मनोबल पर सदैव स्वस्थ रह सकता हैं, यदि छोटी-मोटी बीमारीयों को अपने मनोबल से दूर करने में समर्थ हैं।

माला फेरने से उंगली और अंगूठेके अग्र भाग पर दबाव पडता हैं। यह दबाव हमारे मन को एकाग्र करने में हमारी सहायता करता हैं और हमारे भितर आध्यात्मिकता का विकास होता हैं। अधिक माला फेरने से क्रोध एवं वासनाएं शांत होने लगती हैं। शरीर में नई उर्जा का संचार होने लगता हैं एवं साधक का चेहरा कांतिमय बनने लगता हैं।

माला फेरने से स्वास्थ्य लाभः

माला फेरते समय उंगली के माध्यम से विद्युत तरंग उत्पन्न होती है, जो धमनियों से हृदय में पहुंचकर मन मस्तिष्क को स्थिरता प्रदान करती हैं। माला फेरते समय मध्यमा उंगली पर पड़ने वाले दबाव से हृदय को रोग होने की संभावना को कम रहती हैं। माला फेरने से उंगली और अंगूठे के अग्र भाग पर दबाव पड़ता है और यही दबाव मन को एकाग्र करने में हमारी मदद करता है।

इसलिए ऋषी-मुनियों ने उस काल में ही खोज निकाला था की मन से ही प्रायः विभिना शारीरिक दोषों पर नियंत्रण रखा जा सकता हैं, इसलिए माला के 108 गुटकों या दानों का नाम भी मनका रखा गया होगा?

माला से संबंधित शास्त्रोक्त मत

✍ चिंतन जोशी

काली तंत्र में उल्लेख हैं,

शंख की माल से मन्त्र जप करने से सौगुना फल मिलता हैं। प्रवाल(मूंगे) की माला से सहस्त्र गुना, स्फटिक की माला से दस सहस्त्र गुना, मुक्तक से लाख गुना, कमल गट्टेकी माला से दशलाख गुना, कुशमूल की माला से सौ करोड़ गुना तथा रुद्राक्ष की माला से अनन्त कोटि फल की प्राप्ति होती हैं।

अन्य मत के अनुशार:

स्फाटिकी मौक्तिकी वापि प्रोतव्या सितत्रकैः।
सर्वकर्मसमृद्धयर्थं जपे रुद्राक्षमालयाः॥
स्फाटिकैलक्षसाहस्त्रं मैक्तिकैर्लक्षमेव च।
दशालक्षं राजताक्षैः सौवर्णैः कोटिरुच्यते॥

अर्थातः स्फटिक और मोतियों की माला धागे में पिरोकर धारण की जा सकती हैं लेकिन रुद्राक्ष को चांदि के तार में पिरोकर माला रुप में धारण करने पर तथा जप करने से कई कार्य सफल होते हैं। स्फटिक माला का हजारो लाखो गुना फल मिलता हैं मोतियों की माला लाख गुना फल देती हैं, और चांदि की माला लाख गुना व सुवर्ण की माला करोड़ो गुना फल देती हैं।

काली तंत्र के अनुसार श्मसान में स्थित धतूरे की माला श्रेष्ठ होती हैं। शत्रुनाश के लिए कमलगट्टे की माला, पापनाश के लिए कुशमूल की माला, संतान प्राप्ति हेतु पुत्रजीवा के बीज की माला, ऎश्वर्य की प्राप्ति के लिए मूंगे की माला का प्रयोग करना चाहिए।

गौतमीय तंत्र में उल्लेख हैं, की अर्थ प्राप्ति के लिए तीस मनकों की माला, सर्व कामना सिद्धि के लिए सत्ताईस मनकों की माला, मारण कार्य के लिए पन्द्रह मनकों की माला का प्रयोग करना चाहिए।

हेरण्ड तंत्र के अनुसार स्तम्भन, वशीकरन आदि कार्यों में अंगूठे के अग्रभाव से माला का जप करना चाहिए। आकर्षण के लिए अंगूठा व तर्जनी का प्रयोग करना चाहिए, मारण के लिए अंगूठा और कनिष्ठा का प्रयोग करना चाहिए।

मन्त्र जप हेतु दिशा चयन

- वशीकरण कार्यो के लिए पूर्व दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- मारण कार्यों के लिए दक्षिण दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- धन प्राप्ति के लिए पश्चिम दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- समस्त शुभकार्यों एवं शांति कर्म में उत्तर दिशा की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- आकर्षण कार्यो के लिए अग्नि कोण की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- शत्रु नाश के लिए वायव्य कोण की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- इष्ट दर्शन के लिए नैऋत्य कोण की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।
- ज्ञान की प्राप्ति के लिए ईशान कोण की ओर मुंह करके जप करना चाहिए।

जप के नियम

विशेष मन्त्र साधना में जप का विशेष महत्व होता हैं।

जप के महत्व को बतात हुए स्वयं भगवान ने कहां हैं:-

यज्ञाना जप यज्ञो स्मि

पाठको के मार्गदर्शन के उद्देश्य से यहां कुछ विशेष नियम दिए जा रहे हैं। क्योकि मन्त्र जप के लिए कुछ विशेष नियमो का ध्यान रखना आवश्यक माना गया हैं।

- जप करने से पूर्व ब्राह्मण को शिखा बन्धन अवश्य करना चाहिए। क्योकि बिना शिखा में गांठ दिये जो मन्त जप किया जाता हैं, वह निष्फल होता हैं।

इस लिए शास्त्रों में उल्लेख हैं की...

सदो पवीतिना भाव्यं सदा बद्ध शिखेन च।
विशिखो व्युपवीततश्च् यत् करोति न तत कृतम्॥

ब्रह्माण्ड पुराण के अनुशार:

- मन्त्र जप करते समय आसन बिछा होना चाहिए। आसन यदि फटा हो, टूटा-कटा हो, जीर्ण या छिद्र होगए हो तो उसका त्याग करना चाहिए।
- बिना आसन के केवल भूमि पर बैठकर जप करने से दुख की प्राप्ति होती हैं।
- बांस के आसन पर बैठकर मन्त्र जप करने से दरिद्रता आती हैं।
- पत्थर के आसन पर बैठकर मन्त्र जप करने से रोग होते हैं।
- काष्ठ अर्थात लकडी के आसन पर बैठकर मन्त्र जप करने से दुर्भाग्य की प्राप्ति होती हैं।
- तृणासन के आसन पर बैठकर मन्त्र जप करने से यश-कीर्ति नष्ट होती हैं।
- पत्तों के आसन पर बैठकर मन्त्र जप करने से चित्त की उद्विग्नता बढ़ती हैं।

शास्त्रों में उल्लेख हैं:-

काम्यार्थ कम्बलं चैव श्रेष्ठं च रक्त कम्बलम्।
कुशासने मन्त्रसिद्धिर्नात्र कार्य विचारणा।

बिना संख्या अर्थात गिनती के जप करने से फल का नाश होता हैं, अंगिरा स्मृति में उल्लेख हैं की- बिना दंभ के धार्मिक कार्य, बिना जल के दान एवं बिना गणना के जप निष्फल होते हैं।

बिना दमभेंश्च यत्कृत्यं यच्चदानं विनोदकम्।
असंख्यया तु यज्जप्तं त्तसर्व निष्फलं भवत्॥

जप का फल:-

गृहे चैकगुणः प्रोक्तः गोष्ठे शतगुणः स्मृतः ।
पुण्यारण्ये तथा तीर्थे सहस्त्रगुणमुच्यते ॥
अयुतः पर्वते पुण्यं नद्यां लक्षगुणो जपः ।
कोटिर्देवलये प्राप्ते अनन्तं शिवसंनिधौ ॥

- घर में बैठ कर मन्त्र जप करने से एक गुना फल मिलता हैं।
- गौशाला में मन्त्र जप करने से सौगुना फल प्राप्त हैं।
- पुण्य स्थान वन-वाटिका या तीर्थ स्थान पर मन्त्र जप करने से हजार गुना फल प्राप्त हैं।
- पर्वत पर मन्त्र जप करने से दस हजार गुना फल प्राप्त हैं।
- नदी तट पर मन्त्र जप करने से लाख गुना फल प्राप्त हैं।
- देवालय में मन्त्र जप करने से करोड़ गुना फल प्राप्त हैं।
- शिवलिङ्गके निकट मन्त्र जप करने से अनंत कोटि फल की प्राप्ति होती हैं।

विशेष नोट:

- मन्त्र जप में प्रयोग की जाने वाली या धारण कि गई माला को कभी खूंटी आदि पर लटकाना नहीं चाहिए।
- धारण कि हुई माल जब उतारे तो उसे देवस्थान पर रखना चाहिए।
- माला को रजस्वला स्त्री का स्पर्श या परछाई से दूर रखनी चाहिए।
- श्मशान जात समय या मृतक को छुते समय माला को निकाल देना चाहिए।

हमारे विशेष यंत्र

व्यापार वृद्धि यंत्र: हमारे अनुभवों के अनुशार यह यंत्र व्यापार वृद्धि एवं परिवार में सुख समृद्धि हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

भूमिलाभ यंत्र: भूमि, भवन, खेती से संबंधित व्यवसाय से जुड़े लोगों के लिए भूमिलाभ यंत्र विशेष लाभकारी सिद्ध हुवा हैं।

तंत्र रक्षा यंत्र: किसी शत्रु द्वारा किये गये मंत्र-तंत्र आदि के प्रभाव को दूर करने एवं भूत, प्रेत नज़र आदि बुरी शक्तियों से रक्षा हेतु विशेष प्रभावशाली हैं।

आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र: अपने नाम के अनुशार ही मनुष्य को आकस्मिक धन प्राप्ति हेतु फलप्रद हैं इस यंत्र के पूजन से साधक को अप्रत्याशित धन लाभ प्राप्त होता हैं। चाहे वह धन लाभ व्यवसाय से हो, नौकरी से हो, धन-संपत्ति इत्यादि किसी भी माध्यम से यह लाभ प्राप्त हो सकता हैं। हमारे वर्षो के अनुसंधान एवं अनुभवों से हमने आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से शेयर ट्रेडिंग, सोने-चांदी के व्यापार इत्यादि संबंधित क्षेत्र से जुडे लोगो को विशेष रुप से आकस्मिक धन लाभ प्राप्त होते देखा हैं। आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र से विभिन्न स्रोत से धनलाभ भी मिल सकता हैं।

पदौन्नति यंत्र: पदौन्नति यंत्र नौकरी पैसा लोगो के लिए लाभप्रद हैं। जिन लोगों को अत्याधिक परिश्रम एवं श्रेष्ठ कार्य करने पर भी नौकरी में उन्नति अर्थात प्रमोशन नहीं मिल रहा हो उनके लिए यह विशेष लाभप्रद हो सकता हैं।

रत्नेश्वरी यंत्र: रत्नेश्वरी यंत्र हीरे-जवाहरात, रत्न पत्थर, सोना-चांदी, ज्वैलरी से संबंधित व्यवसाय से जुडे लोगों के लिए अधिक प्रभावी हैं। शेर बाजार में सोने-चांदी जैसी बहुमूल्य धातुओं में निवेश करने वाले लोगों के लिए भी विशेष लाभदाय हैं।

भूमि प्राप्ति यंत्र: जो लोग खेती, व्यवसाय या निवास स्थान हेतु उत्तम भूमि आदि प्राप्त करना चाहते हैं, लेकिन उस कार्य में कोई ना कोई अड़चन या बाधा-विघ्न आते रहते हो जिस कारण कार्य पूर्ण नहीं हो रहा हो, तो उनके लिए भूमि प्राप्ति यंत्र उत्तम फलप्रद हो सकता हैं।

गृह प्राप्ति यंत्र: जो लोग स्वयं का घर, दुकान, ओफिस, फैक्टरी आदि के लिए भवन प्राप्त करना चाहते हैं। यथार्थ प्रयासो के उपरांत भी उनकी अभिलाषा पूर्ण नहीं हो पारही हो उनके लिए गृह प्राप्ति यंत्र विशेष उपयोगी सिद्ध हो सकता हैं।

कैलास धन रक्षा यंत्र: कैलास धन रक्षा यंत्र धन वृद्धि एवं सुख समृद्धि हेतु विशेष फलदाय हैं।

आर्थिक लाभ एवं सुख समृद्धि हेतु 19 दुर्लभ लक्ष्मी यंत्र

विभिन्न लक्ष्मी यंत्र

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र	श्री श्री यंत्र (ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र	अंकात्मक बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी बीसा यंत्र	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	लक्ष्मी गणेश यंत्र	धनदा यंत्र

धन प्राप्ति हेतु उत्तम फलदायी हैं स्फटिक श्रीयंत्र

✍ चिंतन जोशी

आज के भौतिक युग में अर्थ (धन (जीवन कि मुख्य आवश्यक्ताओं में से एक है। धनाढ्य व्यक्तिओं जीवनशैली को देखकर प्रभावित होते हुवे साधारण व्यकि कि भी कामना होती हैं, कि उसके पास भी इतना धन हो कि वह अपने जीवन में समस्त भौतिक सुखो को भोग ने में समर्थ हों। एसी स्थिमें मेहनत, परिश्रम से कमाई करके धन अर्जित करने के बजाय कुछ लोग अल्प समय में ज्यादा कमाने कि मानसिकता के कारण कभी-कभी गलत तरीकें अपनाते हैं।



जिसके फल स्वरुप एसे लोग धन का वास्तविक सुख भोगने से वंचित रह जाते हैं और रोग, तनाव, मानसिक अशांति जेसी अन्य समस्याओं से ग्रस्त हो जाते हैं।

जहां गलत तरीकें से कमाये हुवे धन के कारण समाज एसे लोगो को हीन भाव से देखते हैं। जबकि मेहनत, परिश्रम से कामाये हुवे धन से स्वयं का आत्मविश्वास बढता हैं एवं समाज में प्रतिष्ठा और मान सम्मान भी सरलता से प्राप्त हो जाता हैं।

जो व्यक्ति धार्मिक विचार धाराओं से जुडे हो वह इश्वर में विश्वार रखते हुवे स्वयं कि मेहनत, परिश्रम के बल पर कमाये हुवे धन को हि सच्चा सुख मानते हैं। धर्म में आस्था एवं विश्वास रखने वाले व्यक्ति के लिये मेहनत, परिश्रम करने के उपरांत अपनी आर्थिक स्थिमें उन्नति एवं लक्ष्मी को स्थिर करने हेतु, श्री यंत्र के पूजन का उपाय अपनाकर जीवन में किसी भी सुख से वंचित नहीं रह सकते, उन्हें अपने जीवन में कभी धन का अभाव नहीं रहता। उनके समस्त कार्य सुचारु रुप से चलते हैं। लक्ष्मी कृपा प्राप्ति के लिए श्रीयंत्र का सरल पूजन विधान जिसे अपना कर साधारण व्यक्ति विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं। इस में जरा भी संशय नहीं हैं।

श्रीयंत्र का पूजन रंक से राजा बनाने वाला एवं व्यक्ति कि दरिद्रता को दूर करने वाला हैं।

- अपने पूजा स्थान में प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र को पूजन के लिये स्थापित करें।)प्राण-प्रतिष्ठित श्रीयंत्र किसी भी योग्य विद्वान ब्राह्मण या योग्य जानकार से सिद्ध करवाले
- श्री यंत्र को प्रत्येक शुक्रवार को दुध, दही, शहद, घी और शक्कर (गुड) अर्थात पंचामृत बनाकर स्नान कराये।
- स्नान के पश्चयात उसे लाल कपडे से पोछ दें।
- श्री यंत्र को किसी चांदी या तांबे कि प्लेट में स्थापीत करें।
- श्री यंत्र के नीचे 5 रुपये या 10 रुपये का नोट रखदें। (5,10 रुपये का सिक्का नहीं)
- श्री यंत्र स्थापित करने वाली प्लेट में श्रीयंत्र पर स्फटिक कि माला को चारों ओर घुमाते हुवे स्थापित करें।
- श्री यंत्र के उपर मौली का टुकडा 3-5 बार घुमाते हुवे अर्पित करें।
- श्री यंत्र के उपर सुखा अष्ट गंध छिडकें।
- यदि संभव हो तो लाल पुष्प अर्पित करें। (कमल, मंदार(जासूद) या गुलाब हो तो उत्तम)
- धूप-दीप इत्यादी से विधिवत पूजन करें।
- उपरोक्त विधन प्रति शुक्रवार करें एवं अन्य दिन केवल धूप-दीप करें।
- किसी एक लक्ष्मी मंत्र का एक माला मंत्र जप करें। श्रीसूक्त, अष्ट लक्ष्मी स्तोत्र इत्यादी का पाठ करें यदि पाठ करने में आप असमर्थ होतो बाजार में श्रीसूक्त, अष्ट लक्ष्मी इत्यादी स्तोत्र कि केसेट सीडी मिलती हैं उसका श्रवण करें।

- पूजा में जाने-अनजाने हुई गलती के लिए लक्ष्मीजी का स्मरण करते हुवे क्षमा मांगकर सुख, सौभाग्य और समृद्धि कि कामना करें।
- प्रति शुक्रवार उपरोक्त पूजन करने से जीवन में किसी भी प्रकार का आर्थिक संकट नहीं आता।
- यदी आर्थिक संकट से परेशान हैं तो श्री यंत्र के पूजन से समस्त प्रकार के आर्थिक संकट धीरे-धीरे दूर हो जाते हैं।

नोट: श्री यंत्र के के नीचे रखा हुवा नोट प्रति एक-दो मास में एक बार किसी देवी मंदीर में भेट कर दें। (लाभ प्राप्त होने पर बदले)

- प्रथन बार रखा हुवा नोट श्री यंत्र के पूजन से लाभ होने के बाद ही बदले। लाभ प्राप्त होना शुरु होने तक नोट को रखे रहें।
- लाभ प्राप्त होना शुरु होने के पश्चयात प्रति माह में एक बारे प्रतिपदा(एकम) को पुराना नोट बदल कर नये नोट रखें।
- जेसे-जेसे लाभ प्राप्त होने लगे आप के अनुकूल कार्य हो ने लगे तो नोट कि रकम बढाते रहें। अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

उदाहृण: यदि पहले 5 रुपये का नोट रखा हैं तो उस्से लाभ होने के पश्चयात नोट बदलते हुवे 10 रुपये का नोट रखे। 10 रुपये का नोट रखने से लाभ होने के पश्चयात नोट बदलते हुवे 20 रुपये का नोट रखे। इसी प्रकार नोट को बदते रहें इस्से अधिक लाभ प्राप्त होता हैं।

अधिक लाभ प्राप्ति हेतु सामान्य नियम:

पूजन के दिन ब्रह्मचर्य का पालन करें।

पूजन के दिन सुगंधित तेल, परफ्यूम, इत्र का प्रयोग करने से बचे।

बिना प्याज-लहसून का शाकाहारी भोजन ग्रहण करें। शुक्रवार सफेद मिष्ठान भोजन में ग्रहण करें।

द्वादश महा यंत्र

यंत्र को अति प्राचिन एवं दुर्लभ यंत्रो के संकलन से हमारे वर्षो के अनुसंधान द्वारा बनाया गया हैं।

- परम दुर्लभ वशीकरण यंत्र,
- भाग्योदय यंत्र
- मनोवांछित कार्य सिद्धि यंत्र
- राज्य बाधा निवृत्ति यंत्र
- गृहस्थ सुख यंत्र
- शीघ्र विवाह संपन्न गौरी अनंग यंत्र
- सहस्त्राक्षी लक्ष्मी आबद्ध यंत्र
- आकस्मिक धन प्राप्ति यंत्र
- पूर्ण पौरुष प्राप्ति कामदेव यंत्र
- रोग निवृत्ति यंत्र
- साधना सिद्धि यंत्र
- शत्रु दमन यंत्र

उपरोक्त सभी यंत्रो को द्वादश महा यंत्र के रुप में शास्त्रोक्त विधि-विधान से मंत्र सिद्ध पूर्ण प्राणप्रतिष्ठित एवं चैतन्य युक्त किये जाते हैं। जिसे स्थापीत कर बिना किसी पूजा अर्चना-विधि विधान विशेष लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

Buy and View Product Online

Visit. www.gurutvakaryalay.com

Kawach....

सर्वजन वशीकरण कवच	श्री कृष्ण बीसा कवच	अष्ट लक्ष्मी कवच	अमोद्य महामृत्युंजय कवच
Sarva Jan Vasikan Kawach copy	Shri Krushna Bisa Kawach	Ashta Lakshmi Kawach.	Amogh Mahamrutyunjay Kawach
~~Rs : 2000/-~~ Rs :1450	~~Rs : 2500/-~~ Rs :1900	~~Rs : 3000/-~~ Rs :1250	~~Rs : 25000/-~~ Rs :10900

View more >>

Yantra....



Saraswati Yantra (2"X2" Copper)

~~Rs : 750/-~~ Rs :460



Ram Raksha Yantra (3"X3" Gold Plated)

~~Rs : 1650/-~~ Rs :1450



Vyapar Vruddhi Yantra (6"X6" Gold Plated)

~~Rs : 7500/-~~ Rs :3600



Vyapar Vruddhi Yantra (6"X6" Copper)

~~Rs : 5000/-~~ Rs :1900

View more >>

Rudraksh....



Real 9 Mukhi Rudraksh

~~Rs : 910/-~~ Rs :1250



Real 7 Face Rudraksh

~~Rs : 500/-~~ Rs :300



Real 14 Face Rudraksh

~~Rs : 12500/-~~ Rs :10500



Real 13 Mukhi Rudraksh

~~Rs : 5500/-~~ Rs :4600

View more >>

Buy and View Product Online

Visit. www.gurutvakaryalay.com

Idols....


Crystal Ganesh-50 Gram
~~Rs : 1200/-~~ Rs :730


Panna Ganesh (Jade)- 100 Gram
~~Rs : 2000/-~~ Rs :1050


Mangal Ganesh-50 Gram
~~Rs : 1000/-~~ Rs :550


Panna Ganesh (Jade)- 50 Gram
~~Rs : 1000/-~~ Rs :550

View more >>

Durlabh Sa....


Bhagya Lakshmi Dibbi Big
~~Rs : 15000/-~~ Rs :8200


Indrajaal
~~Rs : 2100/-~~ Rs :1050


Rankt Gunja 11 Pcs
~~Rs : 100/-~~ Rs :77


Kali Haldi (2 Inch Size)
~~Rs : 1000/-~~ Rs :370

View more >>

Special Pr....


Dakshina Varti Shankha 6.5 Inch
~~Rs : 2000/-~~ Rs :1250


Laghu Shriphal
~~Rs : 100/-~~ Rs :11


Hatha Jodi Special)
~~Rs : 1500/-~~ Rs :750


Moti Shankh 4-5 Inch Size
~~Rs : 2000/-~~ Rs :1250

View more >>

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र



शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारणकरने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं।

गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं। Rs: 2350, 2800, 3250, 3700, 4600, 5500 से 10,900 तक

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY

92/3BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785

Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

मंत्र सिद्ध वाहन दुर्घटना नाशक मारुति यंत्र

पौराणिक ग्रंथो में उल्लेख हैं की महाभारत के युद्ध के समय अर्जुन के रथ के अग्रभाग पर मारुति ध्वज एवं मारुति यन्त्र लगा हुआ था। इसी यंत्र के प्रभाव के कारण संपूर्ण युद्ध के दौरान हज़ारों-लाखों प्रकार के आग्नेय अस्त्र-शस्त्रों का प्रहार होने के बाद भी अर्जुन का रथ जरा भी क्षतिग्रस्त नहीं हुआ। भगवान श्री कृष्ण मारुति यंत्र के इस अद्भुत रहस्य को जानते थे कि जिस रथ या वाहन की रक्षा स्वयं श्री मारुति नंदन करते हों, वह दुर्घटनाग्रस्त कैसे हो सकता हैं। वह रथ या वाहन तो वायुवेग से, निर्बाधित रुप से अपने लक्ष्य पर विजय पतका लहराता हुआ पहुंचेगा। इसी लिये श्री कृष्ण नें अर्जुन के रथ पर श्री मारुति यंत्र को अंकित करवाया था।

जिन लोगों के स्कूटर, कार, बस, ट्रक इत्यादि वाहन बार-बार दुर्घटना ग्रस्त हो रहे हो!, अनावश्यक वाहन को नुक्षान हो रहा हों! उन्हें हानी एवं दुर्घटना से रक्षा के उद्देश्य से अपने वाहन पर मंत्र सिद्ध श्री मारुति यंत्र अवश्य लगाना चाहिए। जो लोग ट्रान्स्पोर्टिंग (परिवहन) के व्यवसाय से जुडे हैं उनको श्रीमारुति यंत्र को अपने वाहन में अवश्य स्थापित करना चाहिए, क्योकि, इसी व्यवसाय से जुडे सैकडों लोगों का अनुभव रहा हैं की श्री मारुति यंत्र को स्थापित करने से उनके वाहन अधिक दिन तक अनावश्यक खर्चो से एवं दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहे हैं। हमारा स्वयंका एवं अन्य विद्वानो का अनुभव रहा हैं, की जिन लोगों ने श्री मारुति यंत्र अपने वाहन पर लगाया हैं, उन लोगों के वाहन बडी से बडी दुर्घटनाओं से सुरक्षित रहते हैं। उनके वाहनो को कोई विशेष नुक्शान इत्यादि नहीं होता हैं और नाहीं अनावश्यक रुप से उसमें खराबी आति हैं।

वास्तु प्रयोग में मारुति यंत्र: यह मारुति नंदन श्री हनुमान जी का यंत्र है। यदि कोई जमीन बिक नहीं रही हो, या उस पर कोई वाद-विवाद हो, तो इच्छा के अनुरूप वहँ जमीन उचित मूल्य पर बिक जाये इस लिये इस मारुति यंत्र का प्रयोग किया जा सकता हैं। इस मारुति यंत्र के प्रयोग से जमीन शीघ्र बिक जाएगी या विवादमुक्त हो जाएगी। इस लिये यह यंत्र दोहरी शक्ति से युक्त है।

मारुति यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 255 से 10900 तक**

श्री हनुमान यंत्र शास्त्रों में उल्लेख हैं की श्री हनुमान जी को भगवान सूर्यदेव ने ब्रह्मा जी के आदेश पर हनुमान जी को अपने तेज का सौवाँ भाग प्रदान करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया था, कि मैं हनुमान को सभी शास्त्र का पूर्ण ज्ञान दूँगा। जिससे यह तीनोलोक में सर्व श्रेष्ठ वक्ता होंगे तथा शास्त्र विद्या में इन्हें महारत हासिल होगी और इनके समन बलशाली और कोई नहीं होगा। जानकारो ने मतानुशार हनुमान यंत्र की आराधना से पुरुषों की विभिन्न बीमारियों दूर होती हैं, इस यंत्र में अद्भुत शक्ति समाहित होने के कारण व्यक्ति की स्वप्न दोष, धातु रोग, रक्त दोष, वीर्य दोष, मूर्छा, नपुंसकता इत्यादि अनेक प्रकार के दोषो को दूर करने में अत्यन्त लाभकारी हैं। अर्थात यह यंत्र पौरुष को पुष्ट करता हैं। श्री हनुमान यंत्र व्यक्ति को संकट, वाद-विवाद, भूत-प्रेत, द्यूत क्रिया, विषभय, चोर भय, राज्य भय, मारण, सम्मोहन स्तंभन इत्यादि से संकटो से रक्षा करता हैं और सिद्धि प्रदान करने में सक्षम हैं।

श्री हनुमान यंत्र के विषय में अधिक जानकारी के लिये गुरुत्व कार्यालय में संपर्क करें। **मूल्य Rs- 730 से 10900 तक**

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA,
BHUBNESWAR-751018, (ORISSA), Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

विभिन्न देवताओं के यंत्र		
गणेश यंत्र	महामृत्युंजय यंत्र	राम रक्षा यंत्र राज
गणेश यंत्र (संपूर्ण बीज मंत्र सहित)	महामृत्युंजय कवच यंत्र	राम यंत्र
गणेश सिद्ध यंत्र	महामृत्युंजय पूजन यंत्र	द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र पूजन यंत्र
एकाक्षर गणपति यंत्र	महामृत्युंजय युक्त शिव खप्पर माहा शिव यंत्र	विष्णु बीसा यंत्र
हरिद्रा गणेश यंत्र	शिव पंचाक्षरी यंत्र	गरुड पूजन यंत्र
कुबेर यंत्र	शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र राज
श्री द्वादशाक्षरी रुद्र पूजन यंत्र	अद्वितीय सर्वकाम्य सिद्धि शिव यंत्र	चिंतामणी यंत्र
दत्तात्रय यंत्र	नृसिंह पूजन यंत्र	स्वर्णाकर्षणा भैरव यंत्र
दत्त यंत्र	पंचदेव यंत्र	हनुमान पूजन यंत्र
आपदुद्धारण बटुक भैरव यंत्र	संतान गोपाल यंत्र	हनुमान यंत्र
बटुक यंत्र	श्री कृष्ण अष्टाक्षरी मंत्र पूजन यंत्र	संकट मोचन यंत्र
व्यंकटेश यंत्र	कृष्ण बीसा यंत्र	वीर साधन पूजन यंत्र
कार्तवीर्यार्जुन पूजन यंत्र	सर्व काम प्रद भैरव यंत्र	दक्षिणामूर्ति ध्यानम् यंत्र

मनोकामना पूर्ति एवं कष्ट निवारण हेतु विशेष यंत्र		
व्यापार वृद्धि कारक यंत्र	अमृत तत्व संजीवनी काया कल्प यंत्र	त्रय तापोंसे मुक्ति दाता बीसा यंत्र
व्यापार वृद्धि यंत्र	विजयराज पंचदशी यंत्र	मधुमेह निवारक यंत्र
व्यापार वर्धक यंत्र	विद्यायश विभूति राज सम्मान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	ज्वर निवारण यंत्र
व्यापारोन्नति कारी सिद्ध यंत्र	सम्मान दायक यंत्र	रोग कष्ट दरिद्रता नाशक यंत्र
भाग्य वर्धक यंत्र	सुख शांति दायक यंत्र	रोग निवारक यंत्र
स्वस्तिक यंत्र	बाला यंत्र	तनाव मुक्त बीसा यंत्र
सर्व कार्य बीसा यंत्र	बाला रक्षा यंत्र	विद्युत मानस यंत्र
कार्य सिद्धि यंत्र	गर्भ स्तम्भन यंत्र	गृह कलह नाशक यंत्र
सुख समृद्धि यंत्र	पुत्र प्राप्ति यंत्र	कलेश हरण बत्तिसा यंत्र
सर्व रिद्धि सिद्धि प्रद यंत्र	प्रसूता भय नाशक यंत्र	वशीकरण यंत्र
सर्व सुख दायक पैंसठिया यंत्र	प्रसव-कष्टनाशक पंचदशी यंत्र	मोहिनि वशीकरण यंत्र
ऋद्धि सिद्धि दाता यंत्र	शांति गोपाल यंत्र	कर्ण पिशाचनी वशीकरण यंत्र
सर्व सिद्धि यंत्र	त्रिशूल बीशा यंत्र	वार्ताली स्तम्भन यंत्र
साबर सिद्धि यंत्र	पंचदशी यंत्र (बीसा यंत्र युक्त चारों प्रकारके)	वास्तु यंत्र
शाबरी यंत्र	बेकारी निवारण यंत्र	श्री मत्स्य यंत्र
सिद्धाश्रम यंत्र	षोडशी यंत्र	वाहन दुर्घटना नाशक यंत्र
ज्योतिष तंत्र ज्ञान विज्ञान प्रद सिद्ध बीसा यंत्र	अडसठिया यंत्र	प्रेत-बाधा नाशक यंत्र
ब्रह्माण्ड साबर सिद्धि यंत्र	अस्सीया यंत्र	भूतादी व्याधिहरण यंत्र
कुण्डलिनी सिद्धि यंत्र	ऋद्धि कारक यंत्र	कष्ट निवारक सिद्धि बीसा यंत्र
क्रान्ति और श्रीवर्धक चौंतीसा यंत्र	मन वांछित कन्या प्राप्ति यंत्र	भय नाशक यंत्र
श्री क्षेम कल्याणी सिद्धि महा यंत्र	विवाहकर यंत्र	स्वप्न भय निवारक यंत्र

ज्ञान दाता महा यंत्र	लग्न विघ्न निवारक यंत्र	कुदृष्टि नाशक यंत्र
काया कल्प यंत्र	लग्न योग यंत्र	श्री शत्रु पराभव यंत्र
दीर्धायु अमृत तत्व संजीवनी यंत्र	दरिद्रता विनाशक यंत्र	शत्रु दमनार्णव पूजन यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष दैवी यंत्र सूचि

आद्य शक्ति दुर्गा बीसा यंत्र (अंबाजी बीसा यंत्र)	सरस्वती यंत्र
महान शक्ति दुर्गा यंत्र (अंबाजी यंत्र)	सप्तसती महायंत्र(संपूर्ण बीज मंत्र सहित)
नव दुर्गा यंत्र	काली यंत्र
नवार्ण यंत्र (चामुंडा यंत्र)	श्मशान काली पूजन यंत्र
नवार्ण बीसा यंत्र	दक्षिण काली पूजन यंत्र
चामुंडा बीसा यंत्र (नवग्रह युक्त)	संकट मोचिनी कालिका सिद्धि यंत्र
त्रिशूल बीसा यंत्र	खोडियार यंत्र
बगला मुखी यंत्र	खोडियार बीसा यंत्र
बगला मुखी पूजन यंत्र	अन्नपूर्णा पूजा यंत्र
राज राजेश्वरी वांछा कल्पलता यंत्र	एकांक्षी श्रीफल यंत्र

मंत्र सिद्ध विशेष लक्ष्मी यंत्र सूचि

श्री यंत्र (लक्ष्मी यंत्र)	महालक्ष्मयै बीज यंत्र
श्री यंत्र (मंत्र रहित)	महालक्ष्मी बीसा यंत्र
श्री यंत्र (संपूर्ण मंत्र सहित)	लक्ष्मी दायक सिद्ध बीसा यंत्र
श्री यंत्र (बीसा यंत्र)	लक्ष्मी दाता बीसा यंत्र
श्री यंत्र श्री सूक्त यंत्र	लक्ष्मी गणेश यंत्र
श्री यंत्र (कुर्म पृष्ठीय)	ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्र पूजन यंत्र
लक्ष्मी बीसा यंत्र	कनक धारा यंत्र
श्री श्री यंत्र (श्रीश्री ललिता महात्रिपुर सुन्दर्यै श्री महालक्ष्मयैं श्री महायंत्र)	वैभव लक्ष्मी यंत्र (महान सिद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र)
अंकात्मक बीसा यंत्र	

ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस (Gold Plated)		ताम्र पत्र पर रजत पोलीस (Silver Plated)		ताम्र पत्र पर (Copper)	
साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1" X 1"	460	1" X 1"	370	1" X 1"	255
2" X 2"	820	2" X 2"	640	2" X 2"	460
3" X 3"	1650	3" X 3"	1090	3" X 3"	730
4" X 4"	2350	4" X 4"	1650	4" X 4"	1090
6" X 6"	3600	6" X 6"	2800	6" X 6"	1900
9" X 9"	6400	9" X 9"	5100	9" X 9"	3250
12" X12"	10800	12" X12"	8200	12" X12"	6400

यंत्र के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

राशि रत्न

मेष राशि:	वृषभ राशि:	मिथुन राशि:	कर्क राशि:	सिंह राशि:	कन्या राशि:
मूंगा	हीरा	पन्ना	मोती	माणेक	पन्ना
Red Coral (Special)	Diamond (Special)	Green Emerald (Special)	Naturel Pearl (Special)	Ruby (Old Berma) (Special)	Green Emerald (Special)
5.25" Rs. 1050	10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 9100	5.25" Rs. 910	2.25" Rs. 12500	5.25" Rs. 9100
6.25" Rs. 1250	20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 12500	6.25" Rs. 1250	3.25" Rs. 15500	6.25" Rs. 12500
7.25" Rs. 1450	30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 14500	7.25" Rs. 1450	4.25" Rs. 28000	7.25" Rs. 14500
8.25" Rs. 1800	40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 19000	8.25" Rs. 1900	5.25" Rs. 46000	8.25" Rs. 19000
9.25" Rs. 2100	50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 23000	9.25" Rs. 2300	6.25" Rs. 82000	9.25" Rs. 23000
10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000	10.25" Rs. 2800		10.25" Rs. 28000
** All Weight In Rati	All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

तुला राशि:	वृश्चिक राशि:	धनु राशि:	मकर राशि:	कुंभ राशि:	मीन राशि:
हीरा	मूंगा	पुखराज	नीलम	नीलम	पुखराज
Diamond (Special)	Red Coral (Special)	Y.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	B.Sapphire (Special)	Y.Sapphire (Special)
10 cent Rs. 4100	5.25" Rs. 1050	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000	5.25" Rs. 30000
20 cent Rs. 8200	6.25" Rs. 1250	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000	6.25" Rs. 37000
30 cent Rs. 12500	7.25" Rs. 1450	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000	7.25" Rs. 55000
40 cent Rs. 18500	8.25" Rs. 1800	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000	8.25" Rs. 73000
50 cent Rs. 23500	9.25" Rs. 2100	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000	9.25" Rs. 91000
	10.25" Rs. 2800	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000	10.25" Rs.108000
All Diamond are Full White Colour.	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati	** All Weight In Rati

* उपयोक्त वजन और मूल्य से अधिक और कम वजन और मूल्य के रत्न एवं उपरत्न भी हमारे यहा व्यापारी मूल्य पर उप्लब्ध हैं।

मंत्र सिद्ध रूद्राक्ष

Rudraksh List	Rate In Indian Rupee	Rudraksh List	Rate In Indian Rupee
एकमुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2800, 5500	आठ मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	820,1250
एकमुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	750,1050, 1250,	आठ मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	1900
दो मुखी रूद्राक्ष (हरिद्वार, रामेश्वर)	30,50,75	नौ मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	910,1250
दो मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	नौ मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2050
दो मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	450,1250	दस मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	1050,1250
तीन मुखी रूद्राक्ष (हरिद्वार, रामेश्वर)	30,50,75,	दस मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2100
तीन मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	ग्यारह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	1450,
तीन मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	450,1250,	ग्यारह मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2750,
चार मुखी रूद्राक्ष (हरिद्वार, रामेश्वर)	25,55,75,	बारह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	2350,
चार मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	बारह मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	2750,
पंच मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	25,55,	तेरह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	4500,5500
पंच मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	225, 550,	तेरह मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	6400,
छह मुखी रूद्राक्ष (हरिद्वार, रामेश्वर)	25,55,75,	चौदह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	10500, 12500
छह मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	50,100,	चौदह मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	14500
सात मुखी रूद्राक्ष (हरिद्वार, रामेश्वर)	75, 155,	गौरीशंकर रूद्राक्ष	1900
सात मुखी रूद्राक्ष (नेपाल)	225, 450,	गणेश रुद्राक्ष (नेपाल)	730
सात मुखी रूद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	1250	गणेश रुद्राक्ष (इन्डोनेशिया)	820

रुद्राक्ष के विषय में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

GURUTVA KARYALAY,
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA),
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र

किसी भी व्यक्ति का जीवन तब आसान बन जाता हैं जब उसके चारों और का माहोल उसके अनुरुप उसके वश में हों। जब कोई व्यक्ति का आकर्षण दुसरो के उपर एक चुम्बकीय प्रभाव डालता हैं, तब लोग उसकी सहायता एवं सेवा हेतु तत्पर होते है और उसके प्रायः सभी कार्य बिना अधिक कष्ट व परेशानी से संपन्न हो जाते हैं। आज के भौतिकता वादि युग में हर व्यक्ति के लिये दूसरो को अपनी और खीचने हेतु एक प्रभावशालि चुंबकत्व को कायम रखना अति आवश्यक हो जाता हैं। आपका आकर्षण और व्यक्तित्व आपके चारो ओर से लोगों को आकर्षित करे इस लिये सरल उपाय हैं, **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र**। क्योकि भगवान श्री कृष्ण एक अलौकिव एवं दिवय चुंबकीय व्यक्तित्व के धनी थे। इसी कारण से **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन एवं दर्शन से आकर्षक व्यक्तित्व प्राप्त होता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के साथ व्यक्तिको दृढ इच्छा शक्ति एवं उर्जा प्राप्त होती हैं, जिस्से व्यक्ति हमेशा एक भीड में हमेशा आकर्षण का केंद्र रहता हैं।

यदि किसी व्यक्ति को अपनी प्रतिभा व आत्मविश्वास के स्तर में वृद्धि, अपने मित्रो व परिवारजनो के बिच में रिश्तो में सुधार करने की ईच्छा होती हैं उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** का पूजन एक सरल व सुलभ माध्यम साबित हो सकता हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र पर अंकित शक्तिशाली विशेष रेखाएं, बीज मंत्र एवं अंको से व्यक्ति को अद्भुत आंतरिक शक्तियां प्राप्त होती हैं जो व्यक्ति को सबसे आगे एवं सभी क्षेत्रो में अग्रणिय बनाने में सहायक सिद्ध होती हैं।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र के पूजन व नियमित दर्शन के माध्यम से भगवान श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त कर समाज में स्वयं का अद्वितीय स्थान स्थापित करें।

श्रीकृष्ण बीसा यंत्र अलौकिक ब्रह्मांडीय उर्जा का संचार करता हैं, जो एक प्राकृत्ति माध्यम से व्यक्ति के भीतर सद्भावना, समृद्धि, सफलता, उत्तम स्वास्थ्य, योग और ध्यान के लिये एक शक्तिशाली माध्यम हैं!

- **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के पूजन से व्यक्ति के सामाजिक मान-सम्मान व पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होती हैं।
- विद्वानो के मतानुशार **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** के मध्यभाग पर ध्यान योग केंद्रित करने से व्यक्ति कि चेतना शक्ति जाग्रत होकर शीघ्र उच्च स्तर को प्राप्तहोती हैं।
- जो पुरुषों और महिला अपने साथी पर अपना प्रभाव डालना चाहते हैं और उन्हें अपनी और आकर्षित करना चाहते हैं। उनके लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** उत्तम उपाय सिद्ध हो सकता हैं।
- पति-पत्नी में आपसी प्रम की वृद्धि और सुखी दाम्पत्य जीवन के लिये **श्रीकृष्ण बीसा यंत्र** लाभदायी होता हैं।

मूल्य:- Rs. 730 से Rs. 10900 तक उप्लब्द्ध

श्रीकृष्ण बीसा कवच

श्रीकृष्ण बीसा कवच को केवल विशेष शुभ मुहुर्त में निर्माण किया जाता हैं। कवच को विद्वान कर्मकांडी ब्राहमणों द्वारा शुभ मुहुर्त में शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त करके निर्माण किया जाता हैं। जिस के फल स्वरुप धारण करता व्यक्ति को शीघ्र पूर्ण लाभ प्राप्त होता हैं। कवच को गले में धारण करने से वहं अत्यंत प्रभाव शाली होता हैं। गले में धारण करने से कवच हमेशा हृदय के पास रहता हैं जिस्से व्यक्ति पर उसका लाभ अति तीव्र एवं शीघ्र ज्ञात होने लगता हैं।

मूलय मात्र: 1900

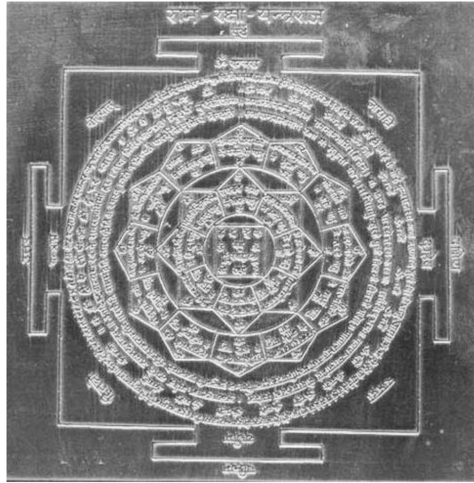
राम रक्षा यंत्र

राम रक्षा यंत्र सभी भय, बाधाओं से मुक्ति व कार्यो में सफलता प्राप्ति हेतु उत्तम यंत्र हैं। जिसके प्रयोग से धन लाभ होता हैं व व्यक्ति का सर्वांगी विकार होकर उसे सुख-समृद्धि, मानसम्मान की प्राप्ति होती हैं। राम रक्षा यंत्र सभी प्रकार के अशुभ प्रभाव को दूर कर व्यक्ति को जीवन की सभी प्रकार की कठिनाइयों से रक्षा करता हैं। विद्वानो के मत से जो व्यक्ति भगवान राम के भक्त हैं या श्री हनुमानजी के भक्त हैं उन्हें अपने निवास स्थान, व्यवसायीक स्थान पर राम रक्षा यंत्र को अवश्य स्थापीत करना चाहिये जिससे आने वाले संकटो से रक्षा हो उनका जीवन सुखमय व्यतीत हो सके एवं उनकी समस्त आदि भौतिक व आध्यात्मिक मनोकामनाएं पूर्ण हो सके।



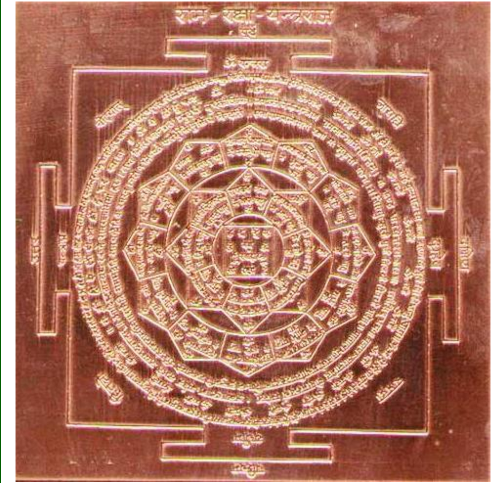
ताम्र पत्र पर सुवर्ण पोलीस

(Gold Plated)



ताम्र पत्र पर रजत पोलीस

(Silver Plated)



ताम्र पत्र पर

(Copper)

साईज	मूल्य	साईज	मूल्य	साईज	मूल्य
1” X 1”	460	1” X 1”	370	1” X 1”	255
2” X 2”	820	2” X 2”	640	2” X 2”	460
3” X 3”	1650	3” X 3”	1090	3” X 3”	730
4” X 4”	2350	4” X 4”	1650	4” X 4”	1090
6” X 6”	3600	6” X 6”	2800	6” X 6”	1900
9” X 9”	6400	9” X 9”	5100	9” X 9”	3250
12” X12”	10800	12” X12”	8200	12” X12”	6400

जैन धर्मके विशिष्ट यंत्रो की सूची	
श्री चौबीस तीर्थंकरका महान प्रभावित चमत्कारी यंत्र	श्री एकाक्षी नारियेर यंत्र
श्री चोबीस तीर्थंकर यंत्र	सर्वतो भद्र यंत्र
कल्पवृक्ष यंत्र	सर्व संपत्तिकर यंत्र
चिंतामणी पार्श्वनाथ यंत्र	सर्वकार्य-सर्व मनोकामना सिद्धिअ यंत्र (१३० सर्वतोभद्र यंत्र)
चिंतामणी यंत्र (पैंसठिया यंत्र)	ऋषि मंडल यंत्र
चिंतामणी चक्र यंत्र	जगदवल्लभ कर यंत्र
श्री चक्रेश्वरी यंत्र	ऋद्धि सिद्धि मनोकामना मान सम्मान प्राप्ति यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर यंत्र	ऋद्धि सिद्धि समृद्धि दायक श्री महालक्ष्मी यंत्र
श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र (अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)	विषम विष निग्रह कर यंत्र
श्री पद्मावती यंत्र	क्षुद्रो पद्रव निर्नाशन यंत्र
श्री पद्मावती बीसा यंत्र	बृहच्चक्र यंत्र
श्री पार्श्वपद्मावती ह्रींकार यंत्र	वंध्या शब्दापह यंत्र
पद्मावती व्यापार वृद्धि यंत्र	मृतवत्सा दोष निवारण यंत्र
श्री धरणेन्द्र पद्मावती यंत्र	कांक वंध्यादोष निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ ध्यान यंत्र	बालग्रह पीडा निवारण यंत्र
श्री पार्श्वनाथ प्रभुका यंत्र	लधुदेव कुल यंत्र
भक्तामर यंत्र (गाथा नंबर १ से ४४ तक)	नवगाथात्मक उवसग्गहरं स्तोत्रका विशिष्ट यंत्र
मणिभद्र यंत्र	उवसग्गहरं यंत्र
श्री यंत्र	श्री पंच मंगल महाश्रृत स्कंध यंत्र
श्री लक्ष्मी प्राप्ति और व्यापार वर्धक यंत्र	ह्रींकार मय बीज मंत्र
श्री लक्ष्मीकर यंत्र	वर्धमान विद्या पट्ट यंत्र
लक्ष्मी प्राप्ति यंत्र	विद्या यंत्र
महाविजय यंत्र	सौभाग्यकर यंत्र
विजयराज यंत्र	डाकिनी, शाकिनी, भय निवारक यंत्र
विजय पतका यंत्र	भूतादि निग्रह कर यंत्र
विजय यंत्र	ज्वर निग्रह कर यंत्र
सिद्धचक्र महायंत्र	शाकिनी निग्रह कर यंत्र
दक्षिण मुखाय शंख यंत्र	आपत्ति निवारण यंत्र
दक्षिण मुखाय यंत्र	शत्रुमुख स्तंभन यंत्र

श्री घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र
(अनुभव सिद्ध संपूर्ण श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र)



घंटाकर्ण महावीर सर्व सिद्धि महायंत्र को स्थापीत करने से साधक की सर्व मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। सर्व प्रकार के रोग भूत-प्रेत आदि उपद्रव से रक्षण होता हैं। जहरीले और हिंसक प्राणीं से संबंधित भय दूर होते हैं। अग्नि भय, चोरभय आदि दूर होते हैं।

दुष्ट व असुरी शक्तियों से उत्पन्न होने वाले भय से यंत्र के प्रभाव से दूर हो जाते हैं।

यंत्र के पूजन से साधक को धन, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य, संतत्ति-संपत्ति आदि की प्राप्ति होती हैं। साधक की सभी प्रकार की सात्विक इच्छाओं की पूर्ति होती हैं।

यदि किसी परिवार या परिवार के सदस्यो पर वशीकरण, मारण, उच्चाटन इत्यादि जादू-टोने वाले प्रयोग किये गयें होतो इस यंत्र के प्रभाव से स्वतः नष्ट हो जाते हैं और भविष्य में यदि कोई प्रयोग करता हैं तो रक्षण होता हैं।

कुछ जानकारो के श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र से जुडे अद्भुत अनुभव रहे हैं। यदि घर में श्री घंटाकर्ण महावीर पतका यंत्र स्थापित किया हैं और यदि कोई इर्षा, लोभ, मोह या शत्रुतावश यदि अनुचित कर्म करके किसी भी उद्देश्य से साधक को परेशान करने का प्रयास करता हैं तो यंत्र के प्रभाव से संपूर्ण परिवार का रक्षण तो होता ही हैं, कभी-कभी शत्रु के द्वारा किया गया अनुचित कर्म शत्रु पर ही उपर उलट वार होते देखा हैं।

मूल्य:- Rs. 1650 से Rs. 10900 तक उप्लब्द्ध

संपर्क करें। GURUTVA KARYALAY
Call Us – 91 + 9338213418, 91 + 9238328785
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

मासिक राशि फल

चिंतन जोशी

मेष: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : पूंजि निवेश द्वारा आकस्मिक धन हानि के योग बन रहे है इस लिए पूंजि निवेष से जुडे महत्वपूर्ण निर्णय लेने से बचें। जिस कारण आर्थिक पक्ष कमजोर हो सकता हैं। इष्ट मित्र एवं परिवार के सदस्यो से सहयोग लेना पड़ सकता हैं। आपकी मानसिक चिन्ताओं में वृद्धि हो सकती हैं। अपनी अधिक खर्च करने कि प्रवृत्ति पर नियंत्रण करने का प्रयास करें।



16 से 31 दिसम्बर 2012 : आपके महत्व पूर्ण कार्यो में अतिरिक्त सावधानी रखनी चाहिये अन्यथा कुछ कार्यो में नुक्शान हो सकता है। व्यवसायिक समस्याओं के कारण धन का अभाव रह सकता हैं। मित्र एवं परिवार के सहयोग से धन लाभ होगा। आवश्यकता से अधिक संघर्ष करना पड सकता है। मानसिक चिन्ताओं में कमी आयेगी। अविवाह है तो विवाह होने के योग बन रहे हैं।

वृषभ: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : आकस्मिक धन प्राप्त होने के योग हैं। सामाजिक मान-सम्मान और पद-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। भूमि-भवन से संबंधित कार्यों मे सफलता प्राप्त होगी। कार्य कि व्यस्तता, अत्याधिक भागदौड़ के कारण आपको थकावट हो सकती। उत्तम वाहन सुख के योग बन रहे हैं। दूरस्थानो की व्यवास्थीक यात्राएं लाभप्रद रहेगी। प्रेम संबंधो में सफलता प्राप्त होगी। अविवाहित हैं तो विवाह संभव हैं।

16 से 31 दिसम्बर 2012 : यदि आप नौकरी में हैं तो पदौन्नति संभव हैं। परिवार के लोग एवं मित्र वर्ग का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपका सामाजिक जीवन उच्च स्तर का हो सकता हैं। परिवार में समाचार प्राप्त हो सकते है। अपनी अधिक खर्च करने कि प्रवृत्ति पर नियंत्रण करने का प्रयास करें। खाने- पीने का विशेष ध्यान रखे मौसम के बदलाव से स्वास्थ्य नरम रह सकता हैं।



मिथुन: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : नई नौकरी-व्यवसाय के लिए समय उत्तम साबित हो सकता हैं। रुके हुए कार्यो से धन प्राप्ति के योग अच्छे हैं। पुराने ऋण को चुकाने में आप पूर्णरुप से समर्थ होंगे। इस अवधि में आपको कुछ अनजान समस्याओं का सामना करना पड सकता हैं। संतान से संबंधित मामलो में थोडी चिंता हो सकती हैं। पुराने रोग से कष्ट हो सकता हैं।

16 से 31 दिसम्बर 2012 : इष्ट मित्रों एवं परिजनो से आर्थिक मदद प्राप्त हो सकती है। मौसम के बदलाव से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल रह सकता हैं। दूरस्थ स्थानो की यात्राएं कष्ट प्रद हो सकती हैं। अतः यात्रा में अतिरिक्त सावधानी बरते। जीवन साथी के पूर्ण सहयोग से दांपत्य जीवन में मधुरता आएगी। मित्र एवं परिवार के लोगो का सहयोग प्राप्त होगा।

कर्क: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : आपके लिए यह समय अति उत्तम सिद्ध होगा। आपको चारों और से सफलता प्राप्त होने के योग बन रहे हैं। नौकरी-व्यवसाय में आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति हो सकती हैं। अपने खान-पान का विशेष ध्यान रखें अन्यथा स्वास्थ्य नरम हो सकता हैं। आपके लिए इस दौरान इष्ट आराधना विशेष फलप्रद रहेगी।



16 से 31 दिसम्बर 2012 : आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। नौकरी-व्यवसाय में प्रायः आपके सभी कार्य पूर्ण होने के योग हैं। आपके भौतिक सुख-साधनो में वृद्धि होगी। आपकी सामजिक प्रतिष्ठाभी इस अवधि में बढेगी। अपनी सेहत का विशेष रुप से खयाल रखें, लापरवाही कष्टदायक हो सकती हैं। अपने परिजनो का पूर्ण प्रेम व सहयोग आपको प्राप्त होगा।

सिंह: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : इष्ट मित्रों के सहयोग से नये मित्र बन सकते हैं। विपरीत लिंग के प्रति आपका विशेष झुकाव रहेगा। अपको सुझ-बुझ से प्रेम संबंधों में सफलता प्राप्त हो सकती हैं। किये गये पूंजि निवेश द्वारा आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बन रहे है। कोर्ट-कचहरी के कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती हैं। घरमें मांगलिक कार्य संपन्न होने के योग हैं। खान-पान का विशेष ध्यान रखें।



16 से 31 दिसम्बर 2012: नौकरी-व्यवसाय से जुडे कार्य विशेष धनलाभ प्रदान करने वाले होंगे। जीवनसाथी का स्वास्थ्य थोडा नरम रह सकता हैं। आपके विरोधी एवं शत्रु पक्ष परास्त होंगे। इष्ट मित्रों से व्यवसायीक साझेदारी का निर्णय कर रहे हैं। तो उस पर पुनः विचार करलें जिससे आपके रिश्ते खराब नहों। जीवन साथी से सहयोग प्राप्त होगा।

कन्या: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : यदि आप नौकरी में हैं तो अपने कार्य का अच्छा प्रदर्शन करने में समर्थ होंगे। किये गये पूंजि निवेश द्वारा आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बन रहे है। आपको भूमि- भवन-वाहन से संबंधित मामलो से भी धन लाभ प्राप्त हो सकता हैं। मौसम के बदलाव से परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य प्राभावित हो सकता हैं। आपका आध्यात्मिक जीवन उच्च स्तर का हो सकता हैं।



16 से 31 दिसम्बर 2012 : नौकरी-व्यवसाय में किये गये प्रयासो से पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। परिवार और रिश्तेदारों से लाभ प्राप्त हो सकते हैं। अधिक खर्च करने के प्रवृत्ति पर नियंत्रण करने का प्रयास करें हैं। आपकी रुचि इष्ट आराधना में अधिक हो सकती हैं। अविवाह है तो विवाह होने के योग बन रहे हैं। प्रकृति में बदलाव से आपका स्वास्थ्य नरम रह सकता है।

तुला: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : नया व्यवसाय या नौकरी प्राप्त हो सकती हैं या आपके कार्य क्षेत्र में नये बदलाव हो सकते हैं। उच्चाधिकारियों से लाभ प्राप्त होगा। नौकरी, व्यापार, पूंजी निवेश इत्यादि से आकस्मिक रुप से धन प्राप्ति हो सकती हैं। शत्रुओं पर आपका प्रभाव रहेगा। मौसम के बदलाव से अपने खाने-पीने का विशेष ध्यान रखे अन्यथा आपका का स्वास्थ्य नरम हो सकता है। जीवनसाथी का पूर्णसहयोग प्राप्त होगा।



16 से 31 दिसम्बर 2012 : आकस्मिक धन प्राप्ति के योग बनेगें जिस्से आर्थिक स्थिती में सुधार होगा। भूमि-भवन-वाहन से संबंधित कार्यो में लाभ प्राप्त होगा। नौकरी व्यवसाय में उच्च अधिकारी एवं सहकर्मी के कार्य परेशानीयों संभव हैं। सावधान रहें। अपनी वाणी एवं क्रोध पर नियंत्रण रखे अन्यथा आपके बने बनाये कार्य बिगड सकते हैं। पारीवारिक जीवन सुखमय रहेगा। स्वास्थ्य संबंधित समस्याएं संभव हैं।

वृश्चिक: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : मानसिक अस्थितार कार्यो में महत्वपूर्ण निर्णय लेने में विलंब कर सकती हैं। अपने रुके हुए कार्यो को कुशलता से पूरा करने का प्रयास करे। अल-अचल संपत्ति में पूंजि निवेश धन भविष्य के लिए लाभदायक सिद्ध होगा। परिवार में खुशियो का माहोल रहेगा। प्रेम संबंधित मामलो में अतिरिक्त सावधानी बरते अन्यथा विवाद हो सकते है।



16 से 31 दिसम्बर 2012 : नौकरी-व्यवसाय में अत्याधिक परिश्रम एवं मेहनत के उपरांत बहुत मुश्किल से धन लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आपको मानसिक अस्थिरता का अनुभव हो सकता हैं। आपको शुभ समाचार प्राप्त हो सकये है। विरोधी एवं शत्रु पक्ष से परेशानी हो सकती हैं। मौसम के बदलाव से स्वास्थ्य चिंता का विषय हो सकता हैं। जीवन साथी के साथ में विचारों में मतभेद संभव हैं।

धनु: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : नौकरी से संबंधित कार्य में नये बदलाव हो सकते हैं, व्यवसाय में हैं तो उन्नती के नए मार्ग प्राप्त होंगे। भूमि-भवन से संबंधिअ मामलों में विलंब संभव हैं। आपके भौतिक सुख साधनो में वृद्धि होगी। स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी फिर भी खाने- पीने का विशेष ध्यान रखना हितकारी रहेगा। जीवन साथी से पूर्णसहयोग प्राप्त होगा।



16 से 31 दिसम्बर 2012 : नौकरी-व्यवसाय में उन्नति व आयके नए स्त्रोत मिलने के योग हैं। आपकी आर्थिक में सुधार होगा। व्यवसायीक यात्राएं सफल होगी। कोर्ट-कचहरी के कार्यो में सफलता प्राप्त हो सकती हैं। परिवार के लोग एवं मित्र वर्ग का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। आपका सामाजिक जीवन उच्च स्तर का हो सकता हैं। परिवार के किसी सदस्य का स्वस्थ्य कमजोर हो सकता हैं।

मकर: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : एकाधिक स्त्रोत से धन प्राप्ति के योग बन रहे हैं। यदि आप नौकरी में हैं तो पदौन्नति हो सकती हैं या नई नौकरी प्राप्त हो सकती हैं, व्यवसाय में हैं तो उन्नती कि मार्ग प्रसस्त होंगे। वाहन सावधानी से चलाये। मित्र एवं परिवार के लोगो का सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य के प्रति सचेत रहे लापरवाही नुक्शान दे सहकती हैं। जीवन साथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा।



16 से 31 दिसम्बर 2012 : आपको लंबे समय से रुका हुवा भुगतान प्राप्त हो सकता हैं। इस अवधि में चल-अचल संपत्ति में पूंजि निवेश करना आपके लिए विशेष रुप से फायदेमंद हो सकता हैं। शत्रु एवं विरोधी पक्ष आपका नाम और प्रतिष्ठा को दूषित करने का प्रयास कर सकते हैं। अपने खाने- पीने का ध्यान रखे अन्यथा आपका का स्वास्थ्य नरम हो सकता है। जीवनसाथी से संबंधो में मधुरता आएगी।

कुंभ: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : समय आपके लिए उत्तम साबित हो सकता हैं। व्यवसायीक कार्यो में पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती हैं। परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य प्राभावित हो सकता हैं। दूरस्थानो की व्यवसायीक यात्राएं आपके लिए लाभदायक हो सकती हैं। परिवार में सुख-शांति बनाए रखने का प्रयास करें। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह के उत्तम योग बन रहे हैं। अपने खाने-पीने का विशेष ध्यान रखे।



16 से 31 दिसम्बर 2012 : भूमि-भवन इत्यादि कार्यो में विशेष लाभ प्राप्ति हो सकती हैं। आपके भौतिक सुख साधनो में वृद्धि होगी। परिवार के किसी सदस्य का स्वास्थ्य आपकी चिंता का विषय हो सकता हैं। इष्ट मित्रो एवं प्रियजनो से आर्थिक लाभ प्राप्त हो सकता हैं। कोर्ट-कचहरी के कार्यो में विजय प्राप्त हो सकती हैं। खाने- पीने का ध्यान रखे नहीं तो स्वास्थ्य नरम हो सकता है। जीवन साथी से पूर्णसहयोग प्राप्त होगा।

मीन: 1 से 15 दिसम्बर 2012 : किये गये पूंजि निवेश द्वारा आकस्मिक धन हानी के योग हैं अतः भारी मात्रा में पूंजि निवेश करने से बचे। व्यवसायिक समस्याओं के कारण धन का अभाव रह सकता हैं। आवश्यकता से अधिक संघर्ष करना पड सकता है। मानसिक चिन्ताओं में कमी आयेगी। इष्ट मित्र एवं परिवार के सदस्यो से सहयोग लेना पड़ सकता हैं। प्रेम संबंधित मामलो में सफलता प्राप्त होगी।



16 से 31 दिसम्बर 2012 : आपके महत्व पूर्ण कार्यो में अतिरिक्त सावधानी रखनी चाहिये अन्यथा कुछ कार्यो में नुक्शान हो सकता है। पूंजि निवेष से जुडे महत्वपूर्ण निर्णय लेने से बचें। जिस कारण आर्थिक पक्ष कमजोर हो सकता हैं। मित्र एवं परिवार के सहयोग से धन लाभ होगा। अपनी अधिक खर्च करने कि प्रवृत्ति पर नियंत्रण करने का प्रयास करें। अपने खाने- पीने का ध्यान रखे।

दिसम्बर 2012 मासिक पंचांग

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	नक्षत्र	समाप्ति	योग	समाप्ति	करण	समाप्ति	चंद्र राशि	समाप्ति
1	शनि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	तृतीया	27:54:41	आद्रा	23:41:34	शुभ	25:05:00	वणिज	14:46:15	मिथुन	-
2	रवि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	चतुर्थी	29:57:19	पुनर्वसु	26:16:04	शुक्ल	25:34:49	बव	16:59:12	मिथुन	19:40:00
3	सोम	मार्गशीर्ष	कृष्ण	पंचमी	31:34:39	पुष्य	28:25:16	ब्रह्म	25:45:54	कौलव	18:49:39	कर्क	-
4	मंगल	मार्गशीर्ष	कृष्ण	पंचमी	07:34:27	आश्लेषा	30:05:24	इन्द्र	25:33:31	तैतिल	07:34:27	कर्क	30:05:00
5	बुध	मार्गशीर्ष	कृष्ण	षष्ठी	08:38:01	मघा	31:08:01	वैधृति	24:53:01	वणिज	08:38:01	सिंह	-
6	गुरु	मार्गशीर्ष	कृष्ण	सप्तमी	09:05:00	मघा	07:08:45	विषकुंभ	23:40:37	बव	09:05:00	सिंह	-
7	शुक्र	मार्गशीर्ष	कृष्ण	अष्टमी	08:48:51	पूर्वाफाल्गुनी	07:31:02	प्रीति	21:55:24	कौलव	08:48:51	सिंह	13:30:00
8	शनि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	नवमी	07:49:33	उत्तराफाल्गुनी	07:12:03	आयुष्मान	19:36:26	गर	07:49:33	कन्या	-
9	रवि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	एकादशी	27:46:31	चित्रा	28:30:34	सौभाग्य	16:43:42	बव	17:01:31	कन्या	17:26:00
10	सोम	मार्गशीर्ष	कृष्ण	द्वादशी	24:52:50	स्वाती	26:20:01	शोभन	13:22:50	कौलव	14:23:46	तुला	-
11	मंगल	मार्गशीर्ष	कृष्ण	त्रयोदशी	21:32:53	विशाखा	23:41:19	अतिगंड	09:36:38	गर	11:15:04	तुला	18:23:00
12	बुध	मार्गशीर्ष	कृष्ण	चतुर्दशी	17:56:03	अनुराधा	20:47:37	धृति	25:16:41	विष्टि	07:45:44	वृश्चिक	-
13	गुरु	मार्गशीर्ष	कृष्ण	अमावस्या	14:11:42	जेष्ठा	17:48:16	शूल	20:58:35	नाग	14:11:42	वृश्चिक	17:49:00
14	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	प्रतिपदा	10:31:05	मूल	14:54:32	गंड	16:45:09	बव	10:31:05	धनु	-
15	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	तृतीया	27:59:50	पूर्वाषाढ़	12:14:50	वृद्धि	12:45:47	तैतिल	17:27:58	धनु	17:39:00
16	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्थी	25:29:30	उत्तराषाढ़	10:02:19	ध्रुव	09:08:53	वणिज	14:39:49	मकर	-
17	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	पंचमी	23:42:17	श्रवण	08:26:21	हर्षण	27:27:17	बव	12:30:06	मकर	19:54:00
18	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	षष्ठी	22:42:51	धनिष्ठा	07:33:29	वज्र	25:31:36	कौलव	11:05:21	कुंभ	-
19	बुध	मार्गशीर्ष	शुक्ल	सप्तमी	22:34:02	शतभिषा	07:29:21	सिद्धि	24:17:10	गर	10:32:10	कुंभ	25:59:00
20	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	अष्टमी	23:16:46	पूर्वाभाद्रपद	08:15:49	व्यतिपात	23:42:04	विष्टि	10:49:34	मीन	-
21	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	नवमी	24:45:24	उत्तराभाद्रपद	09:48:13	वरियान	23:38:50	बालव	11:54:46	मीन	-

22	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	दशमी	26:49:39	रेवति	12:01:50	परिग्रह	24:05:35	तैतिल	13:44:01	मीन	12:02:00
23	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	एकादशी	29:20:07	अश्विनी	14:45:26	शिव	24:51:03	वणिज	16:02:18	मेष	-
24	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	द्वादशी	32:03:42	भरणी	17:48:42	सिद्ध	25:48:42	बव	18:40:16	मेष	24:35:00
25	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	द्वादशी	08:03:11	कृतिका	20:58:30	साध्य	26:49:08	बालव	08:03:11	वृष	-
26	बुध	मार्गशीर्ष	शुक्ल	त्रयोदशी	10:48:36	रोहिणि	24:05:28	शुभ	27:46:43	तैतिल	10:48:36	वृष	-
27	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्दशी	13:26:29	मृगशिरा	27:03:03	शुक्ल	28:33:59	वणिज	13:26:29	वृष	13:35:00
28	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	पूर्णिमा	15:51:13	आद्रा	29:44:40	ब्रह्म	29:09:58	बव	15:51:13	मिथुन	-
29	शनि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	प्रतिपदा	17:57:11	पुनर्वसु	32:06:34	इन्द्र	29:31:53	कौलव	17:57:11	मिथुन	25:33:00
30	रवि	पौष	कृष्ण	द्वितीया	19:42:30	पुनर्वसु	08:06:53	वैधृति	29:35:57	गर	19:42:30	कर्क	-
31	सोम	पौष	कृष्ण	तृतीया	21:04:22	पुष्य	10:08:07	विषकुंभ	29:22:10	वणिज	08:25:55	कर्क	-

दिसम्बर-2012 मासिक व्रत-पर्व-त्यौहार

दि	वार	माह	पक्ष	तिथि	समाप्ति	प्रमुख व्रत-त्योहार
1	शनि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	तृतीया	27:54:41	सौभाग्यसुंदरी व्रत,
2	रवि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	चतुर्थी	29:57:19	संकष्टी श्रीगणेश चतुर्थी व्रत, (चं.उ.रा.8:36)
3	सोम	मार्गशीर्ष	कृष्ण	पंचमी	31:34:39	वीड पंचमी (श्रीमनसादेवी), अन्नपूर्णामाता व्रत प्रारंभ (काशी), डा. राजेंद्र प्रसाद जयंती,
4	मंगल	मार्गशीर्ष	कृष्ण	पंचमी	07:34:27	स्वामी ब्रह्मानंद लोधी जयंती, नौसेना दिवस,
5	बुध	मार्गशीर्ष	कृष्ण	षष्ठी	08:38:01	योगी अरविन्द स्मृति दिवस,
6	गुरु	मार्गशीर्ष	कृष्ण	सप्तमी	09:05:00	श्रीकाल भैरवाष्टमी व्रत (कालाष्टमी), कालभैरव दर्शन-पूजन, भैरवनाथ जयंती महोत्सव, डा. अम्बेडकर स्मृति दिवस
7	शुक्र	मार्गशीर्ष	कृष्ण	अष्टमी	08:48:51	प्रथमाष्टमी (ओड़ीसा), सशस्त्र सेना दिवस, झण्डा दिवस,
8	शनि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	नवमी	07:49:33	अनला नवमी (ओड़ीसा), श्रीमहावीर स्वामी दीक्षा कल्याणक (जैन)
9	रवि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	एकादशी	27:46:31	उत्पत्ति एकादशी व्रत (स्मार्त), वैतरणी एकादशी, राजगोपालाचार्य जयंती,
10	सोम	मार्गशीर्ष	कृष्ण	द्वादशी	24:52:50	एकादशी व्रत (वैष्णव), मानवाधिकार दिवस,
11	मंगल	मार्गशीर्ष	कृष्ण	त्रयोदशी	21:32:53	भौम-प्रदोष व्रत (ऋणमोचन हेतु उत्तम), मासिक शिवरात्रि व्रत, संत ज्ञानेश्वर समाधि दिवस, ओशो जन्मोत्सव,
12	बुध	मार्गशीर्ष	कृष्ण	चतुर्दशी	17:56:03	स्वदेशी दिवस, मेला पुरमण्डल एवं देविका स्नान (जम्मू)
13	गुरु	मार्गशीर्ष	कृष्ण	अमावस्या	14:11:42	स्नान-दान हेतु उत्तम श्राद्ध की मार्गशीर्षी अमावस्या, गोरी तपो व्रत, रुद्रव्रत,
14	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	प्रतिपदा	10:31:05	नवीन चंद्र दर्शन, मार्तण्ड भैरव षड्रात्र प्रारम्भ, धन्यव्रत, ऊर्जा बचत दिवस
15	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	तृतीया	27:59:50	धनु संक्रान्ति रात्रि 8:14 बजे, संक्रान्ति में स्नान-दान हेतु पुण्यकाल मध्याह्न से सूर्यास्त तक, खर मास प्रारंभ, शुभ कार्यों में वर्जित धनु मास प्रारंभ, सरदार वल्लभभाई पटेल स्मृति दिवस
16	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्थी	25:29:30	वरदविनायक चतुर्थी व्रत (च.उ.रा 08: 37)
17	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	पंचमी	23:42:17	विवाहपंचमी, श्रीसीता एवं श्रीराम विवाहोत्सव, विहारपंचमी, श्रीबांकेबिहारी

						का प्राकट्योत्सव (वृंदावन), नागपंचमी (द.भा)
18	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	षष्ठी	22:42:51	चम्पा षष्ठी, मार्तण्डभैर का उत्थापन, मूलकरूपिणी षष्ठी (प.बं), सुब्रह्मण्यम षष्ठी (द.भा.), स्कन्द कुमार षष्ठी व्रत, श्रीअन्नपूर्णा माता का शृंगार,
19	बुध	मार्गशीर्ष	शुक्ल	सप्तमी	22:34:02	विष्णु-नन्दा-भद्रा सप्तमी, मित्र सप्तमी (प.बं), निम्ब सप्तमी, कात्यायनी सप्तमी (महापूजा), नरसिंह मेहता जयंती, संत तारण तरण जयंती
20	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	अष्टमी	23:16:46	श्रीदुर्गाष्टमी व्रत, कात्यायनी अष्टमी (महापूजा),
21	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	नवमी	24:45:24	नंदिनी नवमी, कात्यायनी नवमी (महापूजा), सूर्य सायन मकर राशि में सायं 4:42 बजे, सौर-शिशिर ऋतु प्रारंभ
22	शनि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	दशमी	26:49:39	दशादित्य व्रत
23	रवि	मार्गशीर्ष	शुक्ल	एकादशी	29:20:07	मोक्षदा एकादशी व्रत, गीता जयंती, वैकुण्ठ एकादशी (द.भा.), मौनी ग्यारस (जैन), किसान दिवस, श्रद्धानन्द बलिदान दिवस
24	सोम	मार्गशीर्ष	शुक्ल	द्वादशी	32:03:42	एकादशी व्रत (निम्बार्क वैष्णव), अखण्ड द्वादशी, केशव द्वादशी, मस्त्य द्वादशी, व्यंजन द्वादशी, धन द्वादशी (ओड़ीसा), पक्षवर्द्धिनी महाद्वादशी, श्यामबाबा द्वादशी, धरणी व्रत, उपभोक्ता दिवस
25	मंगल	मार्गशीर्ष	शुक्ल	द्वादशी	08:03:11	भौम-प्रदोष (ऋणमोचन हेतु उत्तम), अनंगत्रयोदशी (द.भा.), कृत्तिका दीपम (द.भा.), ईसा मसीह जयंती-बड़ा दिन (Christmas)
26	बुध	मार्गशीर्ष	शुक्ल	त्रयोदशी	10:48:36	रोहिणी व्रत (जैन),
27	गुरु	मार्गशीर्ष	शुक्ल	चतुर्दशी	13:26:29	पिशाच-मोचन चतुर्दशी, कपर्दीश्वर दर्शन-पूजन (काशी), पूर्णिमा व्रत, श्रीसत्यनारायण व्रत-कथा, दत्तात्रेय जयंती (प्रदोषव्यापिनी पूर्णिमा), बत्तीसी पूर्णिमा चंद्रपूजा, लवणदान,
28	शुक्र	मार्गशीर्ष	शुक्ल	पूर्णिमा	15:51:13	स्नान-दान हेतु उत्तम मार्गशीर्षी (आग्रहायणी) पूर्णिमा, त्रिपुरा महाविद्या जयंती, अन्नपूर्णा जयंती, छप्पनभोग (बलदेवजी-मथुरा), बहुचराजी में मेला, अरुद्र-दर्शन (द.भा.), कात्यायनी मासिक पूजा पूर्ण
29	शनि	मार्गशीर्ष	कृष्ण	प्रतिपदा	17:57:11	-
30	रवि	पौष	कृष्ण	द्वितीया	19:42:30	गौना उत्सव (अयोध्या)
31	सोम	पौष	कृष्ण	तृतीया	21:04:22	सौभाग्यसुंदरी व्रत, प्राचीन मतानुसार संकष्टी चतुर्थी व्रत, बलिनाथ बैरवा जयंती (म.प्र.छत्तीसगढ़), ईसाई नववर्ष की पूर्वसंध्या

नवरत्न जड़ित श्री यंत्र

शास्त्र वचन के अनुसार शुद्ध सुवर्ण या रजत में निर्मित श्री यंत्र के चारों और यदि नवरत्न जड़वा ने पर यह नवरत्न जड़ित श्री यंत्र कहलाता हैं। सभी रत्नो को उसके निश्चित स्थान पर जड़ कर लॉकेट के रूप में धारण करने से व्यक्ति को अनंत एश्वर्य एवं लक्ष्मी की प्राप्ति होती हैं। व्यक्ति को एसा आभास होता हैं जैसे मां लक्ष्मी उसके साथ हैं। नवग्रह को श्री यंत्र के साथ लगाने से ग्रहों की अशुभ दशा का धारण करने वाले व्यक्ति पर प्रभाव नहीं होता हैं। गले में होने के कारण यंत्र पवित्र रहता हैं एवं स्नान करते समय इस यंत्र पर स्पर्श कर जो जल बिंदु शरीर को लगते हैं, वह गंगा जल के समान पवित्र होता हैं। इस लिये इसे सबसे तेजस्वी एवं फलदायि कहजाता हैं। जैसे अमृत से उत्तम कोई औषधि नहीं, उसी प्रकार लक्ष्मी प्राप्ति के लिये श्री यंत्र से उत्तम कोई यंत्र संसार में नहीं हैं एसा शास्त्रोक्त वचन हैं। इस प्रकार के नवरत्न जड़ित श्री यंत्र गुरूत्व कार्यालय द्वारा शुभ मुहूर्त में प्राण प्रतिष्ठित करके बनावाए जाते हैं।

अष्ट लक्ष्मी कवच

अष्ट लक्ष्मी कवच को धारण करने से व्यक्ति पर सदा मां महा लक्ष्मी की कृपा एवं आशीर्वाद बना रहता हैं। जिस्से मां लक्ष्मी के अष्ट रुप (१)-आदि लक्ष्मी, (२)-धान्य लक्ष्मी, (३)-धैरीय लक्ष्मी, (४)-गज लक्ष्मी, (५)-संतान लक्ष्मी, (६)-विजय लक्ष्मी, (७)-विद्या लक्ष्मी और (८)-धन लक्ष्मी इन सभी रुपो का स्वतः अशीर्वाद प्राप्त होता हैं। **मूल्य मात्र: Rs-1250**

मंत्र सिद्ध व्यापार वृद्धि कवच

व्यापार वृद्धि कवच व्यापार के शीघ्र उन्नति के लिए उत्तम हैं। चाहें कोई भी व्यापार हो अगर उसमें लाभ के स्थान पर बार-बार हानि हो रही हैं। किसी प्रकार से व्यापार में बार-बार बांधा उत्पन्न हो रही हो! तो **संपूर्ण प्राण प्रतिष्ठित मंत्र सिद्ध पूर्ण चैतन्य युक्त व्यापात वृद्धि यंत्र** को व्यपार स्थान या घर में स्थापित करने से शीघ्र ही व्यापार वृद्धि एवं नितन्तर लाभ प्राप्त होता हैं। **मूल्य मात्र: Rs.730 & 1050**

मंगल यंत्र

(त्रिकोण) मंगल यंत्र को जमीन-जायदाद के विवादो को हल करने के काम में लाभ देता हैं, इस के अतिरिक्त व्यक्ति को ऋण मुक्ति हेतु मंगल साधना से अति शीध्र लाभ प्राप्त होता हैं। विवाह आदि में मंगली जातकों के कल्याण के लिए मंगल यंत्र की पूजा करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं। **मूल्य मात्र Rs- 730**

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call us: 91 + 9338213418, 91+ 9238328785
Mail Us: gurutva.karyalay@gmail.com, gurutva_karyalay@yahoo.in,
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

विवाह संबंधित समस्या

क्या आपके लडके-लडकी कि आपकी शादी में अनावश्यक रूप से विलम्ब हो रहा हैं या उनके वैवाहिक जीवन में खुशियां कम होती जारही हैं और समस्या अधिक बढती जारही हैं। एसी स्थिती होने पर अपने लडके-लडकी कि कुंडली का अध्ययन अवश्य करवाले और उनके वैवाहिक सुख को कम करने वाले दोषों के निवारण के उपायो के बार में विस्तार से जनकारी प्राप्त करें।

शिक्षा से संबंधित समस्या

क्या आपके लडके-लडकी की पढाई में अनावश्यक रूप से बाधा-विघ्न या रुकावटे हो रही हैं? बच्चो को अपने पूर्ण परिश्रम एवं मेहनत का उचित फल नहीं मिल रहा? अपने लडके-लडकी की कुंडली का विस्तृत अध्ययन अवश्य करवाले और उनके विद्या अध्ययन में आनेवाली रुकावट एवं दोषो के कारण एवं उन दोषों के निवारण के उपायो के बार में विस्तार से जनकारी प्राप्त करें।

क्या आप किसी समस्या से ग्रस्त हैं?

आपके पास अपनी समस्याओं से छुटकारा पाने हेतु पूजा-अर्चना, साधना, मंत्र जाप इत्यादि करने का समय नहीं हैं? अब आप अपनी समस्याओं से बीना किसी विशेष पूजा-अर्चना, विधि-विधान के आपको अपने कार्य में सफलता प्राप्त कर सके एवं आपको अपने जीवन के समस्त सुखो को प्राप्त करने का मार्ग प्राप्त हो सके इस लिये गुरुत्व कार्यालत द्वारा हमारा उद्देश्य शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त विभिन्न प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

ज्योतिष संबंधित विशेष परामर्श

ज्योति विज्ञान, अंक ज्योतिष, वास्तु एवं आध्यात्मिक ज्ञान सें संबंधित विषयों में हमारे 30 वर्षो से अधिक वर्ष के अनुभवों के साथ ज्योतिस से जुडे नये-नये संशोधन के आधार पर आप अपनी हर समस्या के सरल समाधान प्राप्त कर सकते हैं।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

ओनेक्स

जो व्यक्ति पन्ना धारण करने मे असमर्थ हो उन्हें बुध ग्रह के उपरत्न **ओनेक्स** को धारण करना चाहिए। उच्च शिक्षा प्राप्ति हेतु और स्मरण शक्ति के विकास हेतु ओनेक्स रत्न की अंगूठी को दायें हाथ की सबसे छोटी उंगली या लॉकेट बनवा कर गले में धारण करें। ओनेक्स रत्न धारण करने से विद्या-बुद्धि की प्राप्ति हो होकर स्मरण शक्ति का विकास होता हैं।

दिसम्बर 2012 -विशेष योग

कार्य सिद्धि योग			
2/3	रात्रि 2.15 से 4 दिसंबर को प्रात: 4.25 तक	21	प्रात: 9.47 से दिन-रात
4	सूर्योदय से 5 दिसंबर को प्रात: 6.05 तक	23	सूर्योदय से दिन 2.44 तक
12	सूर्योदय से रात्रि 8.47 तक	25	सूर्योदय से रात्रि 8.57 तक
16	सूर्योदय से प्रात: 10.03 तक	26	सम्पूर्ण दिन-रात
17	सूर्योदय से प्रात: 8.25 तक	30	प्रात: 8.05 से 31 दिसंबर को प्रात: 10.07 तक
अमृत योग			
12	सूर्योदय से रात्रि 8.47 तक	21	प्रात: 9.47 से दिन-रात
त्रिपुष्कर योग (तीन गुना) योग		**द्विपुष्कर (दोगुना फल) योग**	
25	सूर्योदय से प्रात: 8.02 तक	09/10	रात्रि 3.45 से शेषरात्रि 4.30 तक
29	सायं 5.56 से 30 दिसंबर को प्रात: 8.05 तक		
विघ्नकारक भद्रा			
1	दिन 2.43 से रात 3.54 तक	19	रात्रि 10.33 से 20 दिसंबर को प्रात: 10.55 तक
5	प्रात: 8.37 से रात्रि 8.50 तक	23	सायं 4.04 से 24 दिसंबर को प्रात: 5.19 तक
8	सायं 6.57 से 9 दिसंबर को प्रात: 6.06 तक	27	दिन 1.26 से देररात 2.38 तक
11	रात्रि 9.32 से 12 दिसंबर को प्रात: 7.44 तक	31	प्रात: 8.22 से रात्रि 9.03 तक
16	दिन 2.43 से देर रात 1.28 तक		

योग फल :

- कार्य सिद्धि योग मे किये गये शुभ कार्य मे निश्चित सफलता प्राप्त होती हैं, एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- त्रिपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ तीन गुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- द्विपुष्कर योग में किये गये शुभ कार्यो का लाभ दोगुना होता हैं। एसा शास्त्रोक्त वचन हैं।
- शास्त्रोक्त मत से विघ्नकारक भद्रा या भद्रा योग में शुभ कार्य करना वर्जित हैं।

दैनिक शुभ एवं अशुभ समय ज्ञान तालिका

वार	गुलिक काल (शुभ) समय अवधि	यम काल (अशुभ) समय अवधि	राहु काल (अशुभ) समय अवधि
रविवार	03:00 से 04:30	12:00 से 01:30	04:30 से 06:00
सोमवार	01:30 से 03:00	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00
मंगलवार	12:00 से 01:30	09:00 से 10:30	03:00 से 04:30
बुधवार	10:30 से 12:00	07:30 से 09:00	12:00 से 01:30
गुरुवार	09:00 से 10:30	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00
शुक्रवार	07:30 से 09:00	03:00 से 04:30	10:30 से 12:00
शनिवार	06:00 से 07:30	01:30 से 03:00	09:00 से 10:30

दिन के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
07:30 से 09:00	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
09:00 से 10:30	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
10:30 से 12:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
03:00 से 04:30	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
04:30 से 06:00	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल

रात के चौघडिये

समय	रविवार	सोमवार	मंगलवार	बुधवार	गुरुवार	शुक्रवार	शनिवार
06:00 से 07:30	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ
07:30 से 09:00	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग
09:00 से 10:30	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ
10:30 से 12:00	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत
12:00 से 01:30	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल
01:30 से 03:00	लाभ	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग
03:00 से 04:30	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ	शुभ	चल	काल
04:30 से 06:00	शुभ	चल	काल	उद्वेग	अमृत	रोग	लाभ

शास्त्रोक्त मत के अनुशार यदि किसी भी कार्य का प्रारंभ शुभ मुहूर्त या शुभ समय पर किया जाये तो कार्य में सफलता प्राप्त होने कि संभावना ज्यादा प्रबल हो जाती हैं। इस लिये दैनिक शुभ समय चौघड़िया देखकर प्राप्त किया जा सकता हैं।

नोट: प्रायः दिन और रात्रि के चौघड़िये कि गिनती क्रमशः सूर्योदय और सूर्यास्त से कि जाती हैं। प्रत्येक चौघड़िये कि अवधि 1 घंटा 30 मिनिट अर्थात डेढ़ घंटा होती हैं। समय के अनुसार चौघड़िये को शुभाशुभ तीन भागों में बांटा जाता हैं, जो क्रमशः शुभ, मध्यम और अशुभ हैं।

चौघडिये के स्वामी ग्रह

शुभ चौघडिया		मध्यम चौघडिया		अशुभ चौघड़िया	
चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह	चौघडिया	स्वामी ग्रह
शुभ	गुरु	चर	शुक्र	उद्वेग	सूर्य
अमृत	चंद्रमा			काल	शनि
लाभ	बुध			रोग	मंगल

* हर कार्य के लिये शुभ/अमृत/लाभ का चौघड़िया उत्तम माना जाता हैं।

* हर कार्य के लिये चल/काल/रोग/उद्वेग का चौघड़िया उचित नहीं माना जाता।

दिन कि होरा - सूर्योदय से सूर्यास्त तक												
वार	1.घं	2.घं	3.घं	4.घं	5.घं	6.घं	7.घं	8.घं	9.घं	10.घं	11.घं	12.घं
रविवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
सोमवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
मंगलवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
बुधवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल
गुरुवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
शुक्रवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
शनिवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
रात कि होरा – सूर्यास्त से सूर्योदय तक												
रविवार	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध
सोमवार	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु
मंगलवार	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र
बुधवार	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि
गुरुवार	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य
शुक्रवार	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र
शनिवार	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल	सूर्य	शुक्र	बुध	चंद्र	शनि	गुरु	मंगल

होरा मुहूर्त को कार्य सिद्धि के लिए पूर्ण फलदायक एवं अचूक माना जाता हैं, दिन-रात के २४ घंटों में शुभ-अशुभ समय को समय से पूर्व ज्ञात कर अपने कार्य सिद्धि के लिए प्रयोग करना चाहिये।

विद्वानो के मत से इच्छित कार्य सिद्धि के लिए ग्रह से संबंधित होरा का चुनाव करने से विशेष लाभ प्राप्त होता हैं।

- सूर्य कि होरा सरकारी कार्यो के लिये उत्तम होती हैं।
- चंद्रमा कि होरा सभी कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- मंगल कि होरा कोर्ट-कचेरी के कार्यों के लिये उत्तम होती हैं।
- बुध कि होरा विद्या-बुद्धि अर्थात पढाई के लिये उत्तम होती हैं।
- गुरु कि होरा धार्मिक कार्य एवं विवाह के लिये उत्तम होती हैं।
- शुक्र कि होरा यात्रा के लिये उत्तम होती हैं।
- शनि कि होरा धन-द्रव्य संबंधित कार्य के लिये उत्तम होती हैं।

ग्रह चलन दिसम्बर -2012

Day	Sun	Mon	Ma	Me	Jup	Ven	Sat	Rah	Ket	Ua	Nep	Plu
1	07:15:09	02:10:57	08:16:32	06:25:27	01:17:32	06:17:02	06:12:34	07:02:00	01:02:00	11:10:38	10:06:25	08:14:13
2	07:16:10	02:22:53	08:17:18	06:26:08	01:17:24	06:18:16	06:12:41	07:01:58	01:01:58	11:10:37	10:06:26	08:14:14
3	07:17:10	03:04:58	08:18:04	06:26:55	01:17:15	06:19:31	06:12:47	07:01:56	01:01:56	11:10:37	10:06:27	08:14:16
4	07:18:11	03:17:13	08:18:50	06:27:49	01:17:07	06:20:45	06:12:53	07:01:54	01:01:54	11:10:36	10:06:27	08:14:18
5	07:19:12	03:29:41	08:19:36	06:28:47	01:16:59	06:22:00	06:13:00	07:01:52	01:01:52	11:10:36	10:06:28	08:14:20
6	07:20:13	04:12:27	08:20:22	06:29:50	01:16:51	06:23:15	06:13:06	07:01:51	01:01:51	11:10:35	10:06:29	08:14:22
7	07:21:14	04:25:33	08:21:09	07:00:56	01:16:43	06:24:29	06:13:12	07:01:51	01:01:51	11:10:35	10:06:30	08:14:24
8	07:22:15	05:09:02	08:21:55	07:02:06	01:16:35	06:25:44	06:13:18	07:01:51	01:01:51	11:10:35	10:06:31	08:14:26
9	07:23:16	05:22:56	08:22:41	07:03:19	01:16:27	06:26:59	06:13:25	07:01:53	01:01:53	11:10:34	10:06:32	08:14:28
10	07:24:17	06:07:15	08:23:28	07:04:34	01:16:19	06:28:13	06:13:31	07:01:54	01:01:54	11:10:34	10:06:33	08:14:30
11	07:25:18	06:21:58	08:24:14	07:05:52	01:16:11	06:29:28	06:13:37	07:01:55	01:01:55	11:10:34	10:06:34	08:14:32
12	07:26:19	07:06:59	08:25:01	07:07:11	01:16:03	07:00:43	06:13:43	07:01:55	01:01:55	11:10:34	10:06:35	08:14:34
13	07:27:20	07:22:11	08:25:47	07:08:32	01:15:55	07:01:58	06:13:49	07:01:54	01:01:54	11:10:34	10:06:36	08:14:36
14	07:28:21	08:07:24	08:26:34	07:09:54	01:15:47	07:03:13	06:13:55	07:01:52	01:01:52	11:10:34	10:06:37	08:14:38
15	07:29:22	08:22:28	08:27:20	07:11:18	01:15:39	07:04:28	06:14:00	07:01:48	01:01:48	11:10:34	10:06:38	08:14:40
16	08:00:23	09:07:14	08:28:07	07:12:43	01:15:31	07:05:43	06:14:06	07:01:44	01:01:44	11:10:34	10:06:39	08:14:43
17	08:01:24	09:21:36	08:28:54	07:14:08	01:15:24	07:06:57	06:14:12	07:01:40	01:01:40	11:10:34	10:06:40	08:14:45
18	08:02:25	10:05:30	08:29:40	07:15:34	01:15:16	07:08:12	06:14:18	07:01:36	01:01:36	11:10:34	10:06:41	08:14:47
19	08:03:26	10:18:54	09:00:27	07:17:02	01:15:09	07:09:27	06:14:23	07:01:34	01:01:34	11:10:35	10:06:43	08:14:49
20	08:04:27	11:01:52	09:01:14	07:18:29	01:15:02	07:10:42	06:14:29	07:01:33	01:01:33	11:10:35	10:06:44	08:14:51
21	08:05:28	11:14:26	09:02:01	07:19:58	01:14:54	07:11:57	06:14:34	07:01:33	01:01:33	11:10:35	10:06:45	08:14:53
22	08:06:30	11:26:42	09:02:48	07:21:26	01:14:47	07:13:12	06:14:39	07:01:34	01:01:34	11:10:36	10:06:46	08:14:55
23	08:07:31	00:08:44	09:03:35	07:22:56	01:14:40	07:14:27	06:14:45	07:01:36	01:01:36	11:10:36	10:06:48	08:14:57
24	08:08:32	00:20:37	09:04:21	07:24:25	01:14:33	07:15:42	06:14:50	07:01:38	01:01:38	11:10:37	10:06:49	08:14:59
25	08:09:33	01:02:24	09:05:08	07:25:55	01:14:27	07:16:57	06:14:55	07:01:38	01:01:38	11:10:37	10:06:51	08:15:01
26	08:10:34	01:14:11	09:05:55	07:27:26	01:14:20	07:18:12	06:15:00	07:01:37	01:01:37	11:10:38	10:06:52	08:15:04
27	08:11:35	01:26:00	09:06:42	07:28:56	01:14:14	07:19:27	06:15:05	07:01:34	01:01:34	11:10:38	10:06:54	08:15:06
28	08:12:36	02:07:53	09:07:29	08:00:28	01:14:07	07:20:42	06:15:10	07:01:29	01:01:29	11:10:39	10:06:55	08:15:08
29	08:13:37	02:19:53	09:08:16	08:01:59	01:14:01	07:21:57	06:15:15	07:01:23	01:01:23	11:10:40	10:06:57	08:15:10
30	08:14:38	03:02:00	09:09:04	08:03:31	01:13:55	07:23:12	06:15:20	07:01:14	01:01:14	11:10:41	10:06:58	08:15:12
31	08:15:40	03:14:16	09:09:51	08:05:03	01:13:49	07:24:28	06:15:25	07:01:06	01:01:06	11:10:42	10:07:00	08:15:14

सर्व रोगनाशक यंत्र/कवच

मनुष्य अपने जीवन के विभिन्न समय पर किसी ना किसी साध्य या असाध्य रोग से ग्रस्त होता हैं। उचित उपचार से ज्यादातर साध्य रोगो से तो मुक्ति मिल जाती हैं, लेकिन कभी-कभी साध्य रोग होकर भी असाध्य होजाते हैं, या कोइ असाध्य रोग से ग्रसित होजाते हैं। हजारो लाखो रुपये खर्च करने पर भी अधिक लाभ प्राप्त नहीं हो पाता। डॉक्टर द्वारा दिजाने वाली दवाईया अल्प समय के लिये कारगर साबित होती हैं, एसी स्थिती में लाभ प्राप्ति के लिये व्यक्ति एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के चक्कर लगाने को बाध्य हो जाता हैं।

भारतीय ऋषीयोने अपने योग साधना के प्रताप से रोग शांति हेतु विभिन्न आयुर्वेर औषधो के अतिरिक्त यंत्र, मंत्र एवं तंत्र का उल्लेख अपने ग्रंथो में कर मानव जीवन को लाभ प्रदान करने का सार्थक प्रयास हजारो वर्ष पूर्व किया था। बुद्धिजीवो के मत से जो व्यक्ति जीवनभर अपनी दिनचर्या पर नियम, संयम रख कर आहार ग्रहण करता हैं, एसे व्यक्ति को विभिन्न रोग से ग्रसित होने की संभावना कम होती हैं। लेकिन आज के बदलते युग में एसे व्यक्ति भी भयंकर रोग से ग्रस्त होते दिख जाते हैं। क्योकि समग्र संसार काल के अधीन हैं। एवं मृत्यु निश्चित हैं जिसे विधाता के अलावा और कोई टाल नहीं सकता, लेकिन रोग होने कि स्थिती में व्यक्ति रोग दूर करने का प्रयास तो अवश्य कर सकता हैं। इस लिये **यंत्र मंत्र एवं तंत्र** के कुशल जानकार से योग्य मार्गदर्शन लेकर व्यक्ति रोगो से मुक्ति पाने का या उसके प्रभावो को कम करने का प्रयास भी अवश्य कर सकता हैं।

ज्योतिष विद्या के कुशल जानकर भी काल पुरुषकी गणना कर अनेक रोगो के अनेको रहस्य को उजागर कर सकते हैं। ज्योतिष शास्त्र के माध्यम से रोग के मूलको पकडने मे सहयोग मिलता हैं, जहा आधुनिक चिकित्सा शास्त्र अक्षम होजाता हैं वहा ज्योतिष शास्त्र द्वारा रोग के मूल(जड़) को पकड कर उसका निदान करना लाभदायक एवं उपायोगी सिद्ध होता हैं।

हर व्यक्ति में लाल रंगकी कोशिकाए पाइ जाती हैं, जिसका नियमीत विकास क्रम बद्ध तरीके से होता रहता हैं। जब इन कोशिकाओ के क्रम में परिवर्तन होता है या विखंडिन होता हैं तब व्यक्ति के शरीर में स्वास्थ्य संबंधी विकारो उत्पन्न होते हैं। एवं इन कोशिकाओ का संबंध नव ग्रहो के साथ होता हैं। जिस्से रोगो के होने के कारण व्यक्ति के जन्मांग से दशा-महादशा एवं ग्रहो कि गोचर स्थिती से प्राप्त होता हैं।

सर्व रोग निवारण कवच एवं महामृत्युंजय यंत्र के माध्यम से व्यक्ति के जन्मांग में स्थित कमजोर एवं पीडित ग्रहो के अशुभ प्रभाव को कम करने का कार्य सरलता पूर्वक किया जासकता हैं। जेसे हर व्यक्ति को ब्रह्मांड कि उर्जा एवं पृथ्वी का गुरुत्वाकर्षण बल प्रभावीत कर्ता हैं ठिक उसी प्रकार कवच एवं यंत्र के माध्यम से ब्रह्मांड कि उर्जा के सकारात्मक प्रभाव से व्यक्ति को सकारात्मक उर्जा प्राप्त होती हैं जिस्से रोग के प्रभाव को कम कर रोग मुक्त करने हेतु सहायता मिलती हैं।

रोग निवारण हेतु महामृत्युंजय मंत्र एवं यंत्र का बडा महत्व हैं। जिस्से हिन्दू संस्कृति का प्रायः हर व्यक्ति महामृत्युंजय मंत्र से परिचित हैं।

कवच के लाभ :

- एसा शास्त्रोक्त वचन हैं जिस घर में महामृत्युंजय यंत्र स्थापित होता हैं वहा निवास कर्ता हो नाना प्रकार कि आधि-व्याधि-उपाधि से रक्षा होती हैं।
- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच किसी भी उम्र एवं जाति धर्म के लोग चाहे स्त्री हो या पुरुष धारण कर सकते हैं।
- जन्मांगमें अनेक प्रकारके खराब योगो और खराब ग्रहो कि प्रतिकूलता से रोग उतपन्न होते हैं।
- कुछ रोग संक्रमण से होते हैं एवं कुछ रोग खान-पान कि अनियमितता और अशुद्धतासे उत्पन्न होते हैं। कवच एवं यंत्र द्वारा एसे अनेक प्रकार के खराब योगो को नष्ट कर, स्वास्थ्य लाभ और शारीरिक रक्षण प्राप्त करने हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र सर्व उपयोगी होता हैं।
- आज के भौतिकता वादी आधुनिक युगमे अनेक एसे रोग होते हैं, जिसका उपचार ओपरेशन और दवासे भी कठिन हो जाता हैं। कुछ रोग एसे होते हैं जिसे बताने में लोग हिचकिचाते हैं शरम अनुभव करते हैं एसे रोगो को रोकने हेतु एवं उसके उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र लाभादायि सिद्ध होता हैं।
- प्रत्येक व्यक्ति कि जेसे-जेसे आयु बढती हैं वैसे-वसै उसके शरीर कि ऊर्जा कम होती जाती हैं। जिसके साथ अनेक प्रकार के विकार पैदा होने लगते हैं एसी स्थिती में उपचार हेतु सर्वरोगनाशक कवच एवं यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस घर में पिता-पुत्र, माता-पुत्र, माता-पुत्री, या दो भाई एक हि नक्षत्रमे जन्म लेते हैं, तब उसकी माता के लिये अधिक कष्टदायक स्थिती होती हैं। उपचार हेतु महामृत्युंजय यंत्र फलप्रद होता हैं।
- जिस व्यक्ति का जन्म परिधि योगमे होता हैं उन्हे होने वाले मृत्यु तुल्य कष्ट एवं होने वाले रोग, चिंता में उपचार हेतु सर्व रोगनाशक कवच एवं यंत्र शुभ फलप्रद होता हैं।

नोट:- पूर्ण प्राण प्रतिष्ठित एवं पूर्ण चैतन्य युक्त सर्व रोग निवारण कवच एवं यंत्र के बारे में अधिक जानकारी हेतु संपर्क करें।

मंत्र सिद्ध कवच

मंत्र सिद्ध कवच को विशेष प्रयोजन में उपयोग के लिए और शीघ्र प्रभाव शाली बनाने के लिए तेजस्वी मंत्रो द्वारा शुभ महूर्त में शुभ दिन को तैयार किये जाते हैं. अलग-अलग कवच तैयार करने केलिए अलग-अलग तरह के मंत्रो का प्रयोग किया जाता हैं.

- क्यों चुने मंत्र सिद्ध कवच?
- उपयोग में आसान कोई प्रतिबन्ध नहीं
- कोई विशेष निति-नियम नहीं
- कोई बुरा प्रभाव नहीं
- कवच के बारे में अधिक जानकारी हेतु

मंत्र सिद्ध कवच सूचि

सर्व कार्य सिद्धि	4600/-	ऋण मुक्ति	910/-	विघ्न बाधा निवारण	550/-
सर्व जन वशीकरण	1450/-	धन प्राप्ति	820/-	नज़र रक्षा	550/-
अष्ट लक्ष्मी	1250/-	तंत्र रक्षा	730/-	दुर्भाग्य नाशक	460/-
संतान प्राप्ति	1250/-	शत्रु विजय	730/-	* वशीकरण (२-३ व्यक्तिके लिए)	1050/-
स्पे- व्यापर वृद्धि	1050/-	विवाह बाधा निवारण	730/-	* पत्नी वशीकरण	640/-
कार्य सिद्धि	1050/-	व्यापर वृद्धि	730/-	* पति वशीकरण	640/-
आकस्मिक धन प्राप्ति	1050/-	सर्व रोग निवारण	730/-	सरस्वती (कक्षा +10 के लिए)	550/-
नवग्रह शांति	910/-	मस्तिष्क पृष्टि वर्धक	640/-	सरस्वती (कक्षा 10 तकके लिए)	460/-
भूमि लाभ	910/-	कामना पूर्ति	640/-	* वशीकरण (1 व्यक्ति के लिए)	640/-
काम देव	910/-	विरोध नाशक	640/-	रोजगार प्राप्ति	550/-
पदौं उन्नति	910/-	रोजगार वृद्धि	730/-		

*कवच मात्र शुभ कार्य या उद्देश्य के लिये

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)

GURUTVA KARYALAY

	YANTRA LIST	EFFECTS
	Our Splecial Yantra	
1	12 – YANTRA SET	For all Family Troubles
2	VYAPAR VRUDDHI YANTRA	For Business Development
3	BHOOMI LABHA YANTRA	For Farming Benefits
4	TANTRA RAKSHA YANTRA	For Protection Evil Sprite
5	AAKASMIK DHAN PRAPTI YANTRA	For Unexpected Wealth Benefits
6	PADOUNNATI YANTRA	For Getting Promotion
7	RATNE SHWARI YANTRA	For Benefits of Gems & Jewellery
8	BHUMI PRAPTI YANTRA	For Land Obtained
9	GRUH PRAPTI YANTRA	For Ready Made House
10	KAILASH DHAN RAKSHA YANTRA	-
	Shastrokt Yantra	
11	AADHYA SHAKTI AMBAJEE(DURGA) YANTRA	Blessing of Durga
12	BAGALA MUKHI YANTRA (PITTAL)	Win over Enemies
13	BAGALA MUKHI POOJAN YANTRA (PITTAL)	Blessing of Bagala Mukhi
14	BHAGYA VARDHAK YANTRA	For Good Luck
15	BHAY NASHAK YANTRA	For Fear Ending
16	CHAMUNDA BISHA YANTRA (Navgraha Yukta)	Blessing of Chamunda & Navgraha
17	CHHINNAMASTA POOJAN YANTRA	Blessing of Chhinnamasta
18	DARIDRA VINASHAK YANTRA	For Poverty Ending
19	DHANDA POOJAN YANTRA	For Good Wealth
20	DHANDA YAKSHANI YANTRA	For Good Wealth
21	GANESH YANTRA (Sampurna Beej Mantra)	Blessing of Lord Ganesh
22	GARBHA STAMBHAN YANTRA	For Pregnancy Protection
23	GAYATRI BISHA YANTRA	Blessing of Gayatri
24	HANUMAN YANTRA	Blessing of Lord Hanuman
25	JWAR NIVARAN YANTRA	For Fewer Ending
26	JYOTISH TANTRA GYAN VIGYAN PRAD SHIDDHA BISHA YANTRA	For Astrology & Spritual Knowlage
27	KALI YANTRA	Blessing of Kali
28	KALPVRUKSHA YANTRA	For Fullfill your all Ambition
29	KALSARP YANTRA (NAGPASH YANTRA)	Destroyed negative effect of Kalsarp Yoga
30	KANAK DHARA YANTRA	Blessing of Maha Lakshami
31	KARTVIRYAJUN POOJAN YANTRA	-
32	KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in work
33	• SARVA KARYA SHIDDHI YANTRA	For Successes in all work
34	KRISHNA BISHA YANTRA	Blessing of Lord Krishna
35	KUBER YANTRA	Blessing of Kuber (Good wealth)
36	LAGNA BADHA NIVARAN YANTRA	For Obstaele Of marriage
37	LAKSHAMI GANESH YANTRA	Blessing of Lakshami & Ganesh
38	MAHA MRUTYUNJAY YANTRA	For Good Health
39	MAHA MRUTYUNJAY POOJAN YANTRA	Blessing of Shiva
40	MANGAL YANTRA (TRIKON 21 BEEJ MANTRA)	For Fullfill your all Ambition
41	MANO VANCHHIT KANYA PRAPTI YANTRA	For Marriage with choice able Girl
42	NAVDURGA YANTRA	Blessing of Durga

YANTRA LIST		EFFECTS
43	NAVGRAHA SHANTI YANTRA	For good effect of 9 Planets
44	NAVGRAHA YUKTA BISHA YANTRA	For good effect of 9 Planets
45	• SURYA YANTRA	Good effect of Sun
46	• CHANDRA YANTRA	Good effect of Moon
47	• MANGAL YANTRA	Good effect of Mars
48	• BUDHA YANTRA	Good effect of Mercury
49	• GURU YANTRA (BRUHASPATI YANTRA)	Good effect of Jyupiter
50	• SUKRA YANTRA	Good effect of Venus
51	• SHANI YANTRA (COPER & STEEL)	Good effect of Saturn
52	• RAHU YANTRA	Good effect of Rahu
53	• KETU YANTRA	Good effect of Ketu
54	PITRU DOSH NIVARAN YANTRA	For Ancestor Fault Ending
55	PRASAW KASHT NIVARAN YANTRA	For Pregnancy Pain Ending
56	RAJ RAJESHWARI VANCHA KALPLATA YANTRA	For Benefits of State & Central Gov
57	RAM YANTRA	Blessing of Ram
58	RIDDHI SHIDDHI DATA YANTRA	Blessing of Riddhi-Siddhi
59	ROG-KASHT DARIDRATA NASHAK YANTRA	For Disease- Pain- Poverty Ending
60	SANKAT MOCHAN YANTRA	For Trouble Ending
61	SANTAN GOPAL YANTRA	Blessing Lorg Krishana For child acquisition
62	SANTAN PRAPTI YANTRA	For child acquisition
63	SARASWATI YANTRA	Blessing of Sawaswati (For Study & Education)
64	SHIV YANTRA	Blessing of Shiv
65	SHREE YANTRA (SAMPURNA BEEJ MANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & Peace
66	SHREE YANTRA SHREE SUKTA YANTRA	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth
67	SWAPNA BHAY NIVARAN YANTRA	For Bad Dreams Ending
68	VAHAN DURGHATNA NASHAK YANTRA	For Vehicle Accident Ending
69	VAIBHAV LAKSHMI YANTRA (MAHA SHIDDHI DAYAK SHREE MAHALAKSHAMI YANTRA)	Blessing of Maa Lakshami for Good Wealth & All Successes
70	VASTU YANTRA	For Bulding Defect Ending
71	VIDHYA YASH VIBHUTI RAJ SAMMAN PRAD BISHA YANTRA	For Education- Fame- state Award Winning
72	VISHNU BISHA YANTRA	Blessing of Lord Vishnu (Narayan)
73	VASI KARAN YANTRA	Attraction For office Purpose
74	• MOHINI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Female
75	• PATI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Husband
76	• PATNI VASI KARAN YANTRA	Attraction For Wife
77	• VIVAH VASHI KARAN YANTRA	Attraction For Marriage Purpose

Yantra Available @:- Rs- 255, 370, 460, 550, 640, 730, 820, 910, 1250, 1850, 2300, 2800 and Above…..

GURUTVA KARYALAY

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)

Call Us - 09338213418, 09238328785

Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/

Email Us:- chintan_n_joshi@yahoo.co.in, gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

GURUTVA KARYALAY

NAME OF GEM STONE		GENERAL	MEDIUM FINE	FINE	SUPER FINE	SPECIAL
Emerald	(पन्ना)	200.00	500.00	1200.00	1900.00	2800.00 & above
Yellow Sapphire	(पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Blue Sapphire	(नीलम)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
White Sapphire	(सफ़ेद पुखराज)	550.00	1200.00	1900.00	2800.00	4600.00 & above
Bangkok Black Blue	**(बैंकोक नीलम)**	100.00	150.00	200.00	500.00	1000.00 & above
Ruby	(माणिक)	100.00	190.00	370.00	730.00	1900.00 & above
Ruby Berma	(बर्मा माणिक)	5500.00	6400.00	8200.00	10000.00	21000.00 & above
Speenal	(नरम माणिक/लालडी)	300.00	600.00	1200.00	2100.00	3200.00 & above
Pearl	(मोति)	30.00	60.00	90.00	120.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति तक)	(लाल मूंगा)	75.00	90.00	12.00	180.00	280.00 & above
Red Coral (4 रति से उपर)	(लाल मूंगा)	120.00	150.00	190.00	280.00	550.00 & above
White Coral	(सफ़ेद मूंगा)	20.00	28.00	42.00	51.00	90.00 & above
Cat's Eye	(लहसुनिया)	25.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Cat's Eye Orissa	(उडिसा लहसुनिया)	460.00	640.00	1050.00	2800.00	5500.00 & above
Gomed	(गोमेद)	15.00	27.00	60.00	90.00	120.00 & above
Gomed CLN	(सिलोनी गोमेद)	300.00	410.00	640.00	1800.00	2800.00 & above
Zarakan	(जरकन)	350.00	450.00	550.00	640.00	910.00 & above
Aquamarine	(बेरुज)	210.00	320.00	410.00	550.00	730.00 & above
Lolite	(नीली)	50.00	120.00	230.00	390.00	500.00 & above
Turquoise	(फ़िरोजा)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Golden Topaz	(सुनहला)	15.00	30.00	45.00	60.00	90.00 & above
Real Topaz	(उडिसा पुखराज/टोपज)	60.00	120.00	280.00	460.00	640.00 & above
Blue Topaz	**(नीला टोपज)**	60.00	90.00	120.00	280.00	460.00 & above
White Topaz	(सफ़ेद टोपज)	60.00	90.00	120.00	240.00	410.00& above
Amethyst	(कटेला)	20.00	30.00	45.00	60.00	120.00 & above
Opal	(उपल)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Garnet	(गारनेट)	30.00	45.00	90.00	120.00	190.00 & above
Tourmaline	(तुर्मलीन)	120.00	140.00	190.00	300.00	730.00 & above
Star Ruby	(सुर्यकान्त मणि)	45.00	75.00	90.00	120.00	190.00 & above
Black Star	(काला स्टार)	15.00	30.00	45.00	60.00	100.00 & above
Green Onyx	(ओनेक्स)	09.00	12.00	15.00	19.00	25.00 & above
Real Onyx	(ओनेक्स)	60.00	90.00	120.00	190.00	280.00 & above
Lapis	(लाजर्वत)	15.00	25.00	30.00	45.00	55.00 & above
Moon Stone	(चन्द्रकान्त मणि)	12.00	21.00	30.00	45.00	100.00 & above
Rock Crystal	(स्फ़टिक)	09.00	12.00	15.00	30.00	45.00 & above
Kidney Stone	(दाना फ़िरंगी)	09.00	11.00	15.00	19.00	21.00 & above
Tiger Eye	(टाइगर स्टोन)	03.00	05.00	10.00	15.00	21.00 & above
Jade	(मरगच)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Sun Stone	(सन सितारा)	12.00	19.00	23.00	27.00	45.00 & above
Diamond (.05 to .20 Cent)	(हीरा)	50.00 (Per Cent)	100.00 (Per Cent)	200.00 (PerCent)	370.00 (Per Cent)	460.00 & above (Per Cent)

Note : **Bangkok** (Black) Blue for Shani, not good in looking but mor effective, **Blue Topaz** not Sapphire This Color of Sky Blue, For Venus

BOOK PHONE/ CHAT CONSULTATION

We are mostly engaged in spreading the ancient knowledge of Astrology, Numerology, Vastu and Spiritual Science in the modern context, across the world.

Our research and experiments on the basic principals of various ancient sciences for the use of common man. exhaustive guide lines exhibited in the original Sanskrit texts

BOOK APPOINTMENT PHONE/ CHAT CONSULTATION

Please book an appointment with Our expert Astrologers for an internet chart . We would require your birth details and basic area of questions so that our expert can be ready and give you rapid replied. You can indicate the area of question in the special comments box. In case you want more than one person reading, then please mention in the special comment box . We shall confirm before we set the appointment. Please choose from :

PHONE/ CHAT CONSULTATION	
Consultation 30 Min.:	RS. 1250/-*
Consultation 45 Min.:	RS. 1900/-*
Consultation 60 Min.:	RS. 2500/-*

*While booking the appointment in Addvance

How Does it work Phone/Chat Consultation

This is a unique service of **GURUATVA KARYALAY** where we offer you the option of having a personalized discussion with our expert astrologers. There is no limit on the number of question although time is of consideration.

Once you request for the consultation, with a suggestion as to your convenient time we get back with a confirmation whether the time is available for consultation or not.

- We send you a Phone Number at the designated time of the appointment
- We send you a Chat URL / ID to visit at the designated time of the appointment
- You would need to refer your Booking number before the chat is initiated
- Please remember it takes about 1-2 minutes before the chat process is initiated.
- Once the chat is initiated you can commence asking your questions and clarifications
- We recommend 25 minutes when you need to consult for one persona Only and usually the time is sufficient for 3-5 questions depending on the timing questions that are put.
- For more than these questions or one birth charts we would recommend 60/45 minutes Phone/chat is recommended
- Our expert is assisted by our technician and so chatting & typing is not a bottle neck

In special cases we don't have the time available about your Specific Questions We will taken some time for properly Analysis your birth chart and we get back with an alternate or ask you for an alternate.

All the time mentioned is Indian Standard Time which is + 5.30 hr ahead of G.M.T.

Many clients prefer the chat so that many questions that come up during a personal discussion can be answered right away.

BOOKING FOR PHONE/ CHAT CONSULTATION PLEASE CONTECT

GURUTVA KARYALAY

Call Us:- 91+9338213418, 91+9238328785.

Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com, chintan_n_joshi@yahoo.co.in,

सूचना

- पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख पत्रिका के अधिकारों के साथ ही आरक्षित हैं।
- लेख प्रकाशित होना का मतलब यह कतई नहीं कि कार्यालय या संपादक भी इन विचारो से सहमत हों।
- नास्तिक/ अविश्वासु व्यक्ति मात्र पठन सामग्री समझ सकते हैं।
- पत्रिका में प्रकाशित किसी भी नाम, स्थान या घटना का उल्लेख यहां किसी भी व्यक्ति विशेष या किसी भी स्थान या घटना से कोई संबंध नहीं हैं।
- प्रकाशित लेख ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित होने के कारण यदि किसी के लेख, किसी भी नाम, स्थान या घटना का किसी के वास्तविक जीवन से मेल होता हैं तो यह मात्र एक संयोग हैं।
- प्रकाशित सभी लेख भारतिय आध्यात्मिक शास्त्रों से प्रेरित होकर लिये जाते हैं। इस कारण इन विषयो कि सत्यता अथवा प्रामाणिकता पर किसी भी प्रकार कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं।
- अन्य लेखको द्वारा प्रदान किये गये लेख/प्रयोग कि प्रामाणिकता एवं प्रभाव कि जिन्मेदारी कार्यालय या संपादक कि नहीं हैं। और नाहीं लेखक के पते ठिकाने के बारे में जानकारी देने हेतु कार्यालय या संपादक किसी भी प्रकार से बाध्य हैं।
- ज्योतिष, अंक ज्योतिष, वास्तु, मंत्र, यंत्र, तंत्र, आध्यात्मिक ज्ञान पर आधारित लेखो में पाठक का अपना विश्वास होना आवश्यक हैं। किसी भी व्यक्ति विशेष को किसी भी प्रकार से इन विषयो में विश्वास करने ना करने का अंतिम निर्णय स्वयं का होगा।
- पाठक द्वारा किसी भी प्रकार कि आपत्ती स्वीकार्य नहीं होगी।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी लेख हमारे वर्षो के अनुभव एवं अनुशंधान के आधार पर लिखे होते हैं। हम किसी भी व्यक्ति विशेष द्वारा प्रयोग किये जाने वाले मंत्र- यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोकी जिन्मेदारी नहिं लेते हैं।
- यह जिन्मेदारी मंत्र-यंत्र या अन्य प्रयोग या उपायोको करने वाले व्यक्ति कि स्वयं कि होगी। क्योकि इन विषयो में नैतिक मानदंडों, सामाजिक, कानूनी नियमों के खिलाफ कोई व्यक्ति यदि नीजी स्वार्थ पूर्ति हेतु प्रयोग कर्ता हैं अथवा प्रयोग के करने मे त्रुटि होने पर प्रतिकूल परिणाम संभव हैं।
- हमारे द्वारा पोस्ट किये गये सभी मंत्र-यंत्र या उपाय हमने सैकडोबार स्वयं पर एवं अन्य हमारे बंधुगण पर प्रयोग किये हैं जिस्से हमे हर प्रयोग या मंत्र-यंत्र या उपायो द्वारा निश्चित सफलता प्राप्त हुई हैं।
- पाठकों कि मांग पर एक हि लेखका पूनः प्रकाशन करने का अधिकार रखता हैं। पाठकों को एक लेख के पूनः प्रकाशन से लाभ प्राप्त हो सकता हैं।
- अधिक जानकारी हेतु आप कार्यालय में संपर्क कर सकते हैं।

(सभी विवादो केलिये केवल भुवनेश्वर न्यायालय ही मान्य होगा।)

FREE
E CIRCULAR

गुरुत्व ज्योतिष पत्रिका दिसम्बर -2012

संपादक

चिंतन जोशी

संपर्क

गुरुत्व ज्योतिष विभाग

गुरुत्व कार्यालय

92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA) INDIA

फोन

91+9338213418, 91+9238328785

ईमेल

gurutva.karyalay@gmail.com,
gurutva_karyalay@yahoo.in,

वेब

www.gurutvakaryalay.com
http://gk.yolasite.com/
http://www.gurutvakaryalay.blogspot.com/

हमारा उद्देश्य

प्रिय आत्मिय

बंधु/ बहिन

जय गुरुदेव

जहाँ आधुनिक विज्ञान समाप्त हो जाता हैं। वहां आध्यात्मिक ज्ञान प्रारंभ हो जाता हैं, भौतिकता का आवरण ओढे व्यक्ति जीवन में हताशा और निराशा में बंध जाता हैं, और उसे अपने जीवन में गतिशील होने के लिए मार्ग प्राप्त नहीं हो पाता क्योकि भावनाए हि भवसागर हैं, जिसमे मनुष्य की सफलता और असफलता निहित हैं। उसे पाने और समजने का सार्थक प्रयास ही श्रेष्ठकर सफलता हैं। सफलता को प्राप्त करना आप का भाग्य ही नहीं अधिकार हैं। ईसी लिये हमारी शुभ कामना सदैव आप के साथ हैं। आप अपने कार्य-उद्देश्य एवं अनुकूलता हेतु यंत्र, ग्रह रत्न एवं उपरत्न और दुर्लभ मंत्र शक्ति से पूर्ण प्राण-प्रतिष्ठित चिज वस्तु का हमेंशा प्रयोग करे जो १००% फलदायक हो। ईसी लिये हमारा उद्देश्य यहीं हे की शास्त्रोक्त विधि-विधान से विशिष्ट तेजस्वी मंत्रो द्वारा सिद्ध प्राण-प्रतिष्ठित पूर्ण चैतन्य युक्त सभी प्रकार के यन्त्र- कवच एवं शुभ फलदायी ग्रह रत्न एवं उपरत्न आपके घर तक पहोचाने का हैं।

सूर्य की किरणे उस घर में प्रवेश करापाती हैं।
जीस घर के खिड़की दरवाजे खुले हों।

GURUTVA KARYALAY
92/3. BANK COLONY, BRAHMESHWAR PATNA, BHUBNESWAR-751018, (ORISSA)
Call Us - 9338213418, 9238328785
Our Website:- www.gurutvakaryalay.com and http://gurutvakaryalay.blogspot.com/
Email Us:- gurutva_karyalay@yahoo.in, gurutva.karyalay@gmail.com

(ALL DISPUTES SUBJECT TO BHUBANESWAR JURISDICTION)



DEC 2012